श्यामबिहारी–हायर ग्रेड दोषी नही है पर जो सामन्तवादी सोच है न वहीं हम लोगों का चैन छिन रही है । खैर असलियत का पता चल जायेगा दफतर बन्द होने से पहले ।
श्यामबिहारी और रामविहारी लंच किये । इसके बाद अपने काम में लग गये ।दफतर बन्द होने का समय आ गया । श्यामबिहारी ,रामविहारी के पास गया और उसके कान के पास बोला यार ये मैनेजर लोग तो बड़े घाघ हो है । हमारी पिकनिक पर भी गिध्द नजर लग गयी है क्या ?
रामविहारी–देखो श्यामबिहारी तुम्हारी हालत तो दफतर में मुझसे कई बेहतर है । लोवर ग्रेड का होकर भी तुम हायर कटेगरी के हो मैं तो लोवर ही लोवर हूं । तुम पिकनिक की व्यवस्था कर रहे मैनेजर विकट कुमारसाहब से बात करों । देखो क्या कहते है । कोई वाहन हम के लिये है की नही ।
श्यामबिहारी–क्यो चने की झाड़ पर चढा रहे हो । पूछ लेता हूं । बच्चे जब से सुने है तब से तैयारी में लगे है । वैसे हमें तो किसी ने बताया भी नही कि दफतर के लोग पिकनिक पर जा रहे है । उड़ती खबर सुना घर में जाकर बता दिया ।
रामविहारी –दूर से तो हमने भी सुना है पर मैं घर में नही बताया हूं कि कल पिकनिक पर जा रहे है । वैसे इतना बताया था कि पिकनिक जनवरी के महीने में जा सकते है दफतर की ओर से । खैर हमारे बच्चे भी तैयारी में है बस बोलने भर की जरूरत हे वे तुरन्त तैयार हो जायेगे । श्यामबिहारी तुम विकट साहब से पूछो तो सही ।
श्यामबिहारी–जाता हूं कहकर विकट साहब के कमरे में प्रवेश किया । विकट साहब उसे देखते ही चिढकर बोले क्यों श्यामबिहारी क्या काम है ।जल्दी बोलें मैं बहुत बिजी हूं । सांस लेने भर की फुर्सत नही है ।कोई काम हो तो जल्दी से बोल दो ।
श्यामबिहारी–साहब कल दफतर से पिकनिक जा रही है कया ?
विकटसाहब– हां तो । ना जाये क्या ?
श्यामबिहारी–हम शामिल हो सकते हैं क्या ?
विकटसाहब–क्यों नही । तुमको पता नही है ।
श्यामबिहारी– अधिकारिक तौर पर तो हमें क्या किसी छोटे कर्मचारी को नही पता है ।
विकटसाहब– नही पता है तो जान लो । कल सनडे का दिन है दफ्तर के सभी हायर और लोवर कटेगरी के लोग पिकनिक पर चल रहे है ।
श्यामबिहारी– साहब अकेले चलना है या सपरिवार ।
विकटसाहब– सपरिवार ।
श्यामबिहारी–वाहन की कोई सुविधा है ।
विकटसाहब–नहीं वाहन का खर्चा वहन करना होगा ।
श्यामबिहारी–साहब ये पिकनिक कैसी ? ये तो साजिश हो गयी लोवर ग्रेड / लोवर कटेगरी से दूरी बनाने की ।
विकटसाहब–दूरियां तो बनी रहनी चाहिये । पिकनिक पर सभी चल सकते है लोवर ग्रेड / लोवर कटेगरी के लोग पर वाहन की सुविधा नही मिलेगी ।
श्यामबिहारी–साहब लोग कैसे जायेगे ।
विकटसाहब–साहब लोगों के बारे में तुम्हे चिन्ता करने की कोई जरूरत नही । दफ्रत और मैदानी सभी साहब वाहन की सुविधा प्राप्त लोग है । तुम तो अपनी चिन्ता करो आ जाना काउइण्टरीक्लब में जैसे भी आ सकते हो । साहब लोगों के बराबर तुम्हारे भी इन्टरटेनमेन्ट का अरेंजमेण्ट है । इतना क्या कम है ?

श्यामबिहारी–साहब काउइण्टरी कल्ब हम कैसे पहुंच सकते है दो पहिया वाहन से वह भी परिवार के साथ शहर से चालीस पच्चास किमी दूर । चालीस किलोमीटर दूर कोई कैसे जा सकती है पांच पांच को एक स्कूटर या मोटर साइकिल पर बैठाकर । यह तो अन्याय हो रहा है लोवर ग्रेड के साथ ।
विकटसाहब–न्याय हो रहा है या अन्याय यह तो तुम जानो । इतना सुन लो वाहन का सुख नही मिलेगा । वाहन सुविधा चाहिये तो बड़े साहब के पास चले जाओ । वही वाहन सुविधा उपलब्ध करवा सकते हैं ।
श्यामबिहारी–हायर ग्रेड वालों की व्यवस्था आप कर रहे हो लोवर की बड़े साहब । क्यों पानी में आग लगा रहे हो साहब ।क्या हम लोगो का हक मारकर आप लोग पिकनिक का इंज्वाय कर पायेगे ?
विकटसाहब–श्यामबिहारी बाहर निकलो यहां से । कोई शिकायत है तो साहब से कहो ।
श्यामबिहारी–चोर–चोर मौसेरे भाई । चोर सिपाही का खेल हो रहा है यहां ।
विकटसाहब– क्या नाक में बोल रहे हो जोर से बोलो।
श्यामबिहारी–मेरी क्या औकात की बोलू । लोवर ग्रेड इम्पलायी की कौन सुनेगा इस माहौल में जब दूयिां मेनटेन रखने की साजिश रची जा रही हो ।लोवर ग्रेड को अवन्नति के दलदल में ढकेला जा रहा हो । क्या उम्मीद करें ऐसे सामन्तवादी साहबो से से जो बस अपना मतलब साधने की जुआड़ में लगे रहते है ,कमजोर के हको पर कब्जा जमाने के चाल चलते रहते है ।
विकटसाहब–क्यों बकबका रहा है जा विपत्तिनरायन, ब्रांच मैनेजर साहब से बता अपनी परेशानी । कर दे मेरी शिकायत ।
श्यामबिहारी–सच्ची बात कड़वी लग रही है । ठीक है साहब से बात कर लेता हूं आप दुत्कार रहे हो तो ।
विकटसाहब–जा तुझको देखकर साहब कुर्सी छोड़ देगे ।खुद पिकनिक पब्लिक सवारी से जायेगे तुझे और तेरे जैसों को सरकारी कार भेज देगे ।
श्यामबिहारी–अपनी किस्मत कहां ऐसी । अपनी किस्मत पर तो कुछ लोग नाग की तरह जमे हुए है ।हम लोगों के आंसूओ पर जाम लड़ाने की योजना है ।
विकटसाहब– क्यो भेजा खा रहा है जा अपना दुखड़ा साहब को सुना ।
श्यामबिहारी–हां भई लोवर कटेगरी के लोगों का यहा कौन सुनने वाला है फिर भी सुनाने की कोशिश तो करके रहूंगाा ।
श्यामबिहारी विकट साहब के चैम्बर से माथे से पसीना पोछते हुए ब्रांच मैनेजर साहब के केबिन की ओर बढा उससे पहले साहब दफतर से बाहर निकले और खुद कार ड्राइव कर चल पड़े । कामविहारी,ड्राइवर कार का छोड़ा धुआ और धूल का गुबार निहारता रह गया । वह कार के आंख से ओझल होते ही वह रामविहारी के पास आया और बोला रामबाबू क्या हमे पिकनिक से दूर रखने की साजिश नही है ?
श्यामबिहारी–साजिश हीा है । पद और दौलत का अभिमान पत्थर दिल बना दिया है । छोटे कर्मचारियों को तो बहुत उपदेश देते है । लगता है कि इनसे बड़ा धर्मात्मा कोई होगा ही नही पर ये तो आस्तिन में सांप रखते हैं । मुंह में राम बगल में छुरी रखते है । कहते कुछ करते कुछ है।इनके हृदय में अहंकार का काला भूत पलता है ।
कामबिहारी–ये तो सभी जानते है पर मानता कौन है । मुझे तो ये बताओ कि हम लोग पिकनिक चलेगे तो कैसे ?

श्यामबिहारी–पिकनिक के लिये कम्पनी ने लोवर ग्रेड के कर्मचारियों को हायर ग्रेड अधिकारियों के बराबर का बजट दिया है तो क्या लूट लेगे । चलेगे तो जरूर भले अकेले । काउइण्टरी क्लब पिकनिक स्थल है इतना तो पता चल ही गया है ।
कामविहारी–बच्चों को छोड देगे क्या ? मेरे बच्चे तो हफ्ता भर से तैयारी में जुटे है । कैसे उनको मना करूंगा ।
श्यामबिहारी–कह देना पिकनिक कैंसिल हो गयी है ।
रामविहारी–क्यों बच्चों से झूठ बोलने को कह रहे हो श्यामबिहारी । असलियत बता दो । बच्चों को भी तो पता चले हम कैसे लोगों के बीच काम कर रहे है । जहां पल–पल धोखा है । जंगल राज की तरह है जहां दूसरे पल कौन सी दुर्घटना घट जाये । जहां हर पल भय बना रहता है। कौन शिकार बन जाये ।छोड़ो.... हायर कटेगरी को पिकनिक का लुत्फ उठाने दो । हम तो अपनी हालत पर सुख की अनूभुति कर लेगे । सुख का सूत्र है देना । हंसते हुए छोड़ दो । यह मान लो कि संस्था के खर्चे पर होने वाले आयोजन अथवा पिकनिक बड़े लोगों के लिये होती है हमारे लिये नही । यदि हमें शामिल होना है तो पहले अपने खिस्से की हालत को देखना होगा । हजार रूपया खर्च करेगे संस्था द्वारा आयोजित पिकनिक में जाने के लिये । अरे इतने में तो महीने भर का नून–तेल की व्यवस्था हो जायेगी । चलो अपने अपने घर चले । सौतेले व्यवहार को देखते हुए मैं तो नही जाऊंगा ।
श्यामबिहारी–कसम है तुमको रामविहारी चलना है ।देखे तो सही हायरग्रेड हमे देखकर कैसा अनुभव करता है दूरियां मेनटेन करने वाले लोग।
रामविहारी–नई बात तो है नही । आंसू देने वाले,कमजोर का हक छिनने वाले,अवन्नति के दलदल में धकिया कर खुद आगे बढने वाले पत्थर दिल दुर्व्यवहार करेगे ,गले तो नही लगायेगे । तुमने कसम दे दी है तो कसम तो तोड़ नही सकता ।
श्यामबिहारी–चलो सुबह नौ बजे तैयार रहना । देखते है 25 जनवरी की पिकनिक मे लोवर ग्रेड के साथ और क्या अन्याय होता है । छुटभइया नेताओ की तरह यहां छुटभइया मैनेजर कैसे गिरगिट की तरह रंग बदलते है यह तो हम अच्छी तरह से जानते है। पिकनिक में हमे देखकर इनका रंग कैसे उतरता है । यह भी जानने का मौका है यह संस्था के खर्चे पर आयोजित पिकनिक है बडे लोगों के घर से खर्च नही हो रहा है । हमारा भी हक बराबर का है पर ये लोग हमारे हको पर कब्जा जमा लेते है । हम देखते रह जाते है ललचायी आंखो से ।
रामविहारी–ठीक है । कल सुबह नौ बजे तैयार मिलूंगा । पिकनिक ग्यारह बजे शुरू होगी । पहुंचने में तीन घण्टे का समय तो लगेगा ।
श्यामबिहारी–वक्त तो लगेगा । चलो अब घर चले । कल सुबह नौ बजे पेट्रोल पम्प के पास मिलेगे ।
लोवर ग्रेड अपने घरों की ओर चल पड़े। हायर ग्रेड तो आंखमिचौली का खेल पहले ही खेल रहा था । विपत्तिनारायण साहब जैसे सामन्तवाद के पोषको की अगुवाई में और भी छोटे लोगो के विरोध के साजिश की आशंका तो बनी हुई थी ।
25 जनवरी को रामविहारी,कामविहारी ,श्यामबिहारी के कहेअनुसार पेट्रोल पम्प पर मिले । वही से काउइण्टरी कल्ब को चल पड़े । रामविहारी,कामविहारी और श्यामबिहारी लोवर ग्रेड के कर्मचारियों से पहले सपरिवार हायर ग्रेड के लोग स्कार्पियों,क्वालिस एवं अन्य लक्जरी कम्पनी के खर्चे की कारो से पहुंचकर पिकनिक इंज्वाय कर रहे थे । ये वही लोग थे जो लोवरग्रेड को आर्डिनरी वाहन की सुविधा देने से साफ मना कर चुके थे । जिसकी वजह से छोटे कर्मचारियों के परिवार के सदस्य शामिल नहीं हो सके थे जो कर्मचारी शामिल हुए थे उनकी जबान पर बहुत सारे प्रश्न तैयार रहे थे । ये

लोवर ग्रेड कर्मचारी खुद को अजनवी लोगों के बीच में महसूस कर रहे थे । कुछ हायर ग्रेड बोलीबोलने में भी तनिक भी नही शरमाये थे । कुछ दूरियां मेनटेन करते रहे । कुछ न दबी जुबान ब्राच मैनेजर,विपत्तिनारायाण साहब और छोटे मैनेजर विकट साहब की खामियां गिनाये और लोवर ग्रेड के परिवार को पिकनिक से दूर रखने का जिम्मेदार विपत्तिनारायाण साहब और विकट साहब को ठहराया । कुछ ने तो इस तरह की दूरी को दबी जुबान से उचित भी कहा । रामविहारी पिकनिक में हायरग्रेड द्वारा मेनटेन की जा रही दूरी से विचलित होकर श्यामबिहारी से बोला यहां से अब चलना ठीक होगा ।

श्यामबिहारी–हां रामविहारी तुम ठीक कह रहे थे । हमे नहीं आना चाहिये था । बच्चेां का उदास चेहरा बार बार आंख के सामने घूम रहा है । आओ हम चले ।भले ही ये हायर ग्रेड हमें और हमारे परिवार को पिकनिक का लुत्फ नही उठाने दिया साजिश रचकर। हायर ग्रेड के अधिकारियों और उनके परिवार के लुत्फ में हम बांधा क्यो बने ? हम सब बर्दाश्त कर लेगे । आओ चले । घर पहुंचते पहुंचते बहुत रात हो जायेगी । ये हायर कटेगरी के लोग हमारे दुखों में ही सुख खोजते है ।

रामविहारी,कामविहारी ,श्यामबिहारी और छोटे कर्मचारी पिकनिक से गहरा जख्म लेकर चले पड़े अपने घर की ओर उखड़े पांव ।

नन्दलाल भारती

28.01.09

मुनिया

दिन बचपन कीं अटखेलियां शुरू ही किया था कि अचानक धूल भरी आंधी का ताण्डव शुरू हो गया । कच्चे घरों की खपरैलें तिनके की तरह उड़ने लगी,जमीन गिरते ही कई टुकड़ो में बिखरने लगी ।मड़ई और छप्परें दीवालों की पकड़ से ऐसे दूर जाने लगी जैसे कोई शैतान अपनी ओर खींच रहा हो । इसी ताण्डव के बीच मुनिया रोते कराहते आ गयी और रघुनन्दन का पैर पकड़कर रोने लगी । मुनिया की दशा देखकर रघुनन्दन के पैर के नीचे से जैसे जमीन घिसक गयी ।वह मुनिया को चुपकराते हुए खुद रो पड़ा । रघुनन्दन को रोता हुआ देखकर मुनिया अपने आंसू भूलकर उनके आंसू पोछते हुए बोली नाना ना रोओ । अगर तुम इस तरह रोओगे तो मेरा क्या होगा ? मुनिया के आंसू पोछने पर भी रघुनन्दन के आंसू थमने के नाम नही ले रहे थे ।

आंसूओं को गमछे में दबाते हुए रघुनन्दन बोले बीटिया इतना सबेरे क्यों आयी घर में तो सब ठीक हैं । तेरे पापा कहां है । वे ठीक तो है ।

मुनिया–हां ठीक है उनकों क्या होगा ? मां को तो खा ही गये अब हमे खाने पर लगे है । मैं भी भाग आयी नाना।

रघुनन्दन– बीटिया तू भागकर आयी है क्या ?

मुनिया–हां नाना मां के बाद नानी फिर दादी चल बसी । मैं तो अनाथ हो गयी । बाप का घर मेरे लिये जेल हो गया था नाना । मुनिया बयान कर दहाड़े मार मार कर रोये जा रही थी ।

रघुनन्दन– बीटिया तू कैसे अनाथ हो सकती है । अभी तेरा नाना तो जिन्दा है ।

रघुनन्दन मुनिया को चुपकराने का प्रयास कर रहे थे पर मुनिया के आंसू थमने के नाम नही ले रहे थे । तेज हवायें जैसे मुनिया के रोने की आवाज दूर दूर तक पहुंचाने के लिये चल रही थी । मुनिया का कुन्दन आसपास की बस्ती के लोगों के दिलों पर दस्तक दे दिया । कुछ ही देर में

रघुनन्दन के दरवाजे पर मेला लग गया । मुनिया की विक्षिप्त जैसी दशा देखकर सभी के आंखों में खून उतर आया ।
रघुनन्दन पुनः बोला बीटिया जा मुंह हाथ धोले । तू अपने बाप के लिये भले ही बोझ लग रही हो पर हमारे लिये नही । तेरी परवरिस हम करेगे । मत रो बीटिया । मेरा कलेजा फटा जा रहा है ।
डंगरी मुनिया के आंसू अपने पल्लू से पोछते हुए बोली बीटिया कब की चली थी कि किरीन फूटने से पहले आ गयी । अरे दस कोस की दूरी कम तो नही होती ।
मुनिया रोते हुए बोली- नानी मुर्गा बोलने से थोड़ी पहले भागी थी जान बचाकर।
कुमौती-बाप रे बीटिया को बाप के घर से भागना पड़ रहा है । लगता है बीटिया दाना पानी को तरस गयी है । देखो ना हाड़ हाड़ हो गयी है । भगवान बिन मां की बेटी पर कैसी मुसीबत डाल दिये है । लगता है जेल से भागकर आयी है । मां के मरते ही बाप ने ही बेटी की जीवन में मुट्ठी भर आग भर दी सौतेली मां लाकर । मां सौतेली है बाप तो नही । एक बेटी की परवरिस नहीं कर पा रहा है ।
मुनिया सिसकते हुए बोली मामी छोटी में स्कूल जाना तो कब की बन्द करवा चुकी है । गोबर कण्डा बिनवाती है । घर का सारा काम करवाती है । कितनी भी बीमार क्यों न रहूं पर चाकरी से मिनट भर की मोहल्लत नहीं। खुद महारानी जैसे पड़ी रहती है । खटिया पर खाती है । मुझे कहती है अढाई सेर एक टाइम खाने को चाहिये कहां से आयेगा । मजदूरी करने को कहती है। बात बात पर मारती है । पापा के कान भी रती रहती है । पापा छोटी मां की सुनते है । मेरे आंसू को दिखावटी समझते है ।
कुमौती-बाप रे नन्हीं सी जान के साथ इतनी नाइंसाफी ।मां के मरते ही मुनिया मजदूरन हो गयी बाप के घर में ।
डंगरी-बाप तो अच्छा कमाता खाता है । इसके बाद भी नन्ही सी मुनियां को से चाकरी करवा रहा है नालायक कहीं का । बेटी राह की कांटा बन गयी है । बीटिया को रास्ते से हटाना चाह रहा है । शैतान को कीड़े पड़ेगे देखना । बेटी तो देवी का रूप होती है । देवी समान बेटी को रक्त के आंसू मिल रहा है वह भी बाप के घर में ।हे भगवान ये कैसा बुरा समय आ गया है ।
खटरी-बाप से ज्यादा दोषी तो सौतेली मां है । उसी की दिया हुआ जख्म मुनिया के तन से झलक रहा है । मां के मरने से पहले यही मुनिया नालायक बाप के लिये शुभ थी आज खटकने लगी है ।प्रताड़ित कर रहा है नालायक दूसरी पत्नी के साथ मिलकर । ये कैसी सजा दे रहा है अपनी औलाद को एक सगा बाप , अगर बीटिया किसी बदमास के हाथ लग जाती तो क्या होता ? बेचारी की खबर भी ना लगती । आजकल तो सुनने में आ रहा है कि बदमास बच्चों को अंग-भंग कर भीख तक मंगवाते है ।भागवान एक अनाथ को बचाकर बड़ा उपकार किया है ।
रघुनन्दन डांटते हुए बोले -खटरी तेरा दिमाग तो ठीक है । तू क्या कह रही है मुनिया मेरी नातिन है अनाथ कैसे हो सकती है ?
खटरी-जेठ जी ठीक कह रहे हो । अगर बीटिया के साथ खुदा ना खसते कुछ हो जाता तो । कहां ढूढते कहीं नामो निशान मिलता क्या ? आजकल आदमी के वेष में कितने भेड़िये घूमते है । आपको पता है । खैर पता भी कहां से होगा घर छोड़कर कहीं गये भी तो नही । दुनिया में क्या हो रहा कैसे खबर लगेगी । मुसीबत की मारी भोलीभाली लड़कियों को पहचान कर दो जहर मिश्रित शब्द बोलकर अपने जाल मे फंसा लेते है दरिन्दे। बेचारी लड़की का जीवन नरक बन जाता है । आत क्या जानो । औरत का दर्द ।
रघुनन्दन-सब जानता हूं । मुझे खबर ही नही लग पायी कि मेरी नातिन के साथ चाण्डाल ऐसा दुर्व्यवहार कर रहे है । मुझसे तो बहुत चिकनीचुपड़ी बाते करते थे । भगवान तेरा लाखलाख शुक्रिया

मेरी नातिन को सही सलामत यहां तक पहुंचा दिया । अब मेरी नातिन उस चाण्डाल के चौखट पर थूकने तक नही जायेगी।हम परवरिस करेगे अपनी नातिन की ।
मुनिया–नाना कभी ना जाऊंगी पापा के घर यहां से ।दादी जिन्दा थी तो ख्याल रखती थी । इसके बदले उसके भी कभी कभी दाना पानी बन्द हो जाते थे । दादी अपने हिस्से की रोटी मुझो खिला दिया करती थी । नाना,दादी के मरते ही छोटी मां और मेरे पापा तो जैसे मेरे दुश्मन बन गये है । छोटी मां तो कई बार मेरी वजह से दादी पर हाथ उठा दी थी । दादी के मरते ही भूखी शेरनी हो गयी है ।
रघुनन्दन– बीटिया तू चिन्ता ना कर । तुझे शैतानों से दूर रखूंगा ।
डंगरी–हां मुनिया तुमको यहां कोई तकलीफ नही होगी तेरे मामा–मामी कितने अच्छे है । तुमको अपनी बेटी जैसे ही रखेगे प्ढायेगे लिखायेगे । तुमको तेरे पैरों पर ख़ड़ा होने लायक बनायेगे मुझे उम्मीद है ।
मुनिया– हां नानी मैं जानती हूं । मामा–मामी का दिया कपड़ा तो जब से पैदा हुई हूं तब से ही पहन रही हूं । मेरी मां का ख्याल मेरे पापा ने रखा होता तो मां नही मरती । यहां तक मां की बीमारी की खबर तक नही आने देते थे पापा । मेरी मां को तड़पा तड़पा कर मार डाला ।मेरी मां की लाश को तो मेरे बाप ने गज भर कफन भी नही दिया । सब क्रिया कर्म तो नाना के घर हुआ था । नानी मुझे याद है भले ही मै छोटी थी । अब मुझे मारने पर तुले है छोटी की साजिश में फंसकर । मां अगर भागकर न आती तो मेरी छोटी मां मुझे मरवा कर फेंक देती या कहीं बेंच देती ।
झिंगुरी–बेटी ऐसा ना बोल । भगवान किसी बच्चे के साथ ऐसा अन्याय न होने पाये ।
मुनिया–हां नानी ठीक कह रही हूं । दादी के मरते ही मेरा स्कूल का बस्ता खूंटी पर टंग गया । मुझसे गोबर कण्डा बिनवाया जाने लगा । नाना जाते तो छोटी मां कहती बीटिया ट्यूशन गयी है । कभी स्कूल गयी है का बहाना बनाती । मुझे तो स्कूल जाने की इजाजत ही नही थी दादी के मरने के बाद । चूल्ह चौका गोबर कण्डा बिनने के काम में लगा दिया था पापा ने छोटी मां ने ।
खटरी–कैसा जल्लाद बाप है अपने खून के साथ इतना बड़ा अन्याय ।
गोठू–बीटिया बाप की कैद से आयी है । देखो उसके पैर लहूलुहान हो रहे है । हाथ पावं धुलाओ । कुछ दाना पानी कराओ । बेचारी कितनी डर के मारे सहमी हुई है ।
लौटू–ठीक कह रहे हो गोठू । ये औरते जहां इक्ट्ठा हो जाती है वही पंचायत शुरू ।
डंगरी–बेचारी की दशा को देखकर सब भौचक्के है लौटू भइया । सभी का दिल रो रहा है । तुम औरतों पर अपयश लाद रहे हो । देखो सौतेली मां का खौफ मुनिया की आंखों में । कैसे जान बचाकर आयी है असली दास्तान तो मुनिया को ही मालूम है ना ।देखो बेचारी मुनिया का क्या बुरा हाल कर दिया है सगे बाप और सौतेली मां ने ।
गोठु– मुनिया की दादी जीते जी आंच नही आने दी । बेचारी गांती बांधी रही । स्कूल भी भेजती थी । मुनिया को टांटी की तरह मुनिया के चारों ओर छायी रहती थी । खुद भूखे पेट रह जाती थी पर मुनिया को भूखी नही रहने देती थी । बेचारी मुनिया के उपर एक एक विपत्ति आती जा रही है पहले मां मरी ,नानी मरी फिर दादी,दादी के मरते ही सौतेली मां ने बीटिया मुनिया को सड़क पर लाकर पटक दिया ।
लौटू–यह तो मुनिया की सौतेली मां की साजिश है । वह जिस बच्चे को पैदा की है उसकी परवरिस कर रही है । मुनिया की रोवन रोटी कर दी है । बेचारी मुनिया कितनी प्रताड़ना सही हैं अपने बाप के घर में । जब असहनीय हो गयी है तब भागकर आयी है । यह काम पहले कर लेती तो ये

हाल तो ना होता । लिखना पढना भी तो जानती है बैरन चिट्ठी ही डाल देती । रघुनन्दन भइया पहुंच जाते ।अपने साथ लेकर आ जाते ।
गोठु– बेचारी से कैसे वक्त ने मुंह मोड़ लिया है अपने दुश्मन हो गये है ।मुनिया को इसकी मां ज्योति तेज हवा तक नही लगने देती थी । आज देखो वही मुनिया आग का दरिया तैर कर यहां तक पहुंची है । अरे पूरी बस्ती के लोग टांटी बने हो । मुनिया की हाल देखकर सभी कोस रहे पर उसके पैर को तो देखो कितना बड़ा घाव हो गया है कहीं शीश धंस गया है । दवा दारू का बन्दोबस्त तो करो ।
खटरी–हां बेचारी के पैर से बहुत खून बह गया है । अब तो खून भी सूख गया है । यह मुनिया उसी ज्योति की बेटी है जो तनिक भर इसके रोने से ही रो उठती थी । एक बार तो मुनिया के कान में दर्द हो रहा थ तब ज्योति ने चूहे को भूनकर तेल निकाली और मुनिया के कान में डाली थी । सुना है तब से मुनिया का कान कभी दर्द नही किया । आज मुनिया का क्या हाल बना दिया है उसके सगे बाप और सौतेली मां ने लावारिसों जैसे छोड़ दिया है। ननिहाल वालों ने सिर पर बिठा रखा है ।
भोपू–खटरी कुछ भी बोल जाती है मुनिया लावारिस कैसे हो गयी । नाना,मामा–मामी सभी तो है । मुनिया की परवरसि अच्छी तरह करेगे ।
रघुनन्दन छोटी बहू से बोले सोनिया तू तेा उठ जा एक लोटा पानी और दातून तो दे मुनिया को । बेचारी भूखी प्यासी है ।कुछ खिला बाते तो बाद में करती रहना । देख तूफान थम गया है । मै खेत जाकर देखू गेहूं के बोझ उड़ गये या बचे है । मड़ई तो उड़ गयी । मुर्गी मुर्गे ना जाने कहां तूफान में उड़ गये । यह भी भारी तबाही हो गया । पेड़–पालों उखड़ गये है । देखू तो सही मुंह का निवाला कुछ बचा है या तूफान की भेट चढ गया ।
सोनिया– बाबूजी खेत देख आओ । मैं बीटिया को नहला धुला कर खाना खिलाकर दवा दारू करवाती हूं कहते हुए सोनिया मुनिया का हाथ पकड़कर उठाने लगी ।
मुनिया– रूक जा मामी थोड़ी देर और इसके बाद नहाती धोती हूं । पहले कुछ खाने को दो कई दिन की खायी हूं ।
सोनिया–अरे काजल दीदी के लिये दातून तोड़ ला तो ।
काजल– हां मां लाती हूं ।
सोनिया थाली में पानी लेकर आयी और जर्बदस्ती मुनिया का पेर थाली में रखकर धोने लगी । तनिक भर में थाली का पानी लाल हो गया । मुनिया के पैर में बड़ा जख्म जो था । कई कांटे भी धंसे थे । सोनिया मुनिया का पैर धोकर नीम की पत्ती उबाली फिर नीम के पानी से मुनिया के पैर के जख्म को साफ की मलहम लगायी ।
सोनिया काजल से बोली बेटी दीदी को गुड दाना दो खाकर पानी पी ले ।मैं झटपट रोटी सेंक लेती हूं । बीटिया भूखी प्यासी है । देखना बीटिया घाव पर मक्खी न बैठने पाये ।
मुनिया–ठीक है मामी ।
धीरे धीरे महीने बित गये पर मुनिया का बाप हलकू थाह पता नही लगाने आया । नयी दुल्हन की मनौती पूरी हो गयी । मुनिया का बोझ सिर से उतर जो गया था । मुनिया के दिल में सौतेली मां का डर बैठा हुआ था । घाव ठीक हो चुका था तन पर सडें कपडें नाना के घर आते ही बदल गये थे । दुखी मन पर खुशी दस्तक देने लगी थी । मुनिया नाना के घर में खुश थी । काजल मुनिया की साया बन चुकी थी पूरा ख्याल रखती थी ।
डगरी–मुनिया तू आज बहुत खुश है कोई आने वाला है क्या ?
मुनिया–तेरा बाप और नई मां ।

काजल–बड़ी मम्मी क्यो गिध्द नजर लगा रही हो । गिध्दो को न्यौता दे रही हो । कसाई को देखकर गाय खुश होगी क्या ?
डंगरी–बाप रे देखो बीता भर की छोकरी कितनी बड़ी बात कह गयी ।
इतने में लालगंज तरवां माग्र पर उ.प्र. परिवहन की बस रूकी और सवारी उतारकर आगे बढ गयी ।इतने में काजल काजल की आवाज रघुनन्दन के कानों को छूने लगी ।
रघुनन्दन–देख काजल तुमको कोई बुला रहा है क्या ?
काजल–अरे दादा बडे पापा आ गये ।
रघुनन्दन–राजू आ गया क्या ?
मुनिया–हां नाना बड़े मामा है ।
काजल राजू को देखते ही दौड़ लगाकरसड़क पर पहुंच गयी । वह एक हाथ से राजू का हाथ पकडी और दूसरे हाथ से झोला । मेरे पापा आ गये मेरे पा आ गये कहते ,चहकते घर आ गयी ।
राजू अपने पिता का पैर छुआ । इतने में काजल खटिया खींच लायी और राजू का हाथ पकड़कर बैठायी । राजू के बैठते ही मुनिया आ गयी और राजू को पकड़ कर जोर जोर से रोने लगी । राजू मुनिया के सिर पर हाथ फेरते हुए बोला कब की आयी हो बीटिया ।
राजू को देखकर डंगरी आ गयी और बिन पूछे मुनिया की सारी दास्तान सुना दी । मुनिया की दास्तान सुनकर राजू की आंखों में सावन भादों उमड़ पड़ा । राजू मुनिया के सिर पर हाथ रखकर बोला बेटी तू समझ ले तेरा बाप भी मर गया तेरे लिये । तेरी परवरिस हम करेगे । मुनिया और राजू को रोता हुआ देखकर रघुनन्दन भी अपने आंसू को नही रोक पाये । पूरे परिवार को रोता हुआ देखकर काजल बोली देखो दीदी आज सभी कितने खुश है तुमको पाकर सब साथ में रो रहे है ।
रघुनन्दन–हां बीटिया ये गम के नही खुशी के आंसू है ।

परायापन

अक्टूबर का महीना था ।धान की फसल युवावस्था में थी । मेड़ो पर से पानी कल कल कर बह रहा था । नदी पोखर सब लबालब थे । लोग धान की निराई में लगे हुए थे । द्वार तक पानी भरा हुआ था । दरवाजे के सामने खटिया डालने भर की सूखी जमीन नही थी । रह रह कर बादल उमड़ रहे थे । जोरदार बारिस की उम्मीद बनी हुई थी । इसके बाद भी गांव से कुछ दूर बूढे बरगद के नीचे लोग सुबह से ही जमा हो रहे थे । हीरा साहब के घर से औरतों के रोने की आवाज लोगों के दिल को दुखा रही थी । बाबूजी बाबूजी कहकर बेटी बहू, छाती पीट पीट कर रो रही थी ।हीरा साहब के मरे आज दस दिन हो गये थे ।बूढे बरगद के नीचे घट बैठ रहा था ।हीरा साहब शहर में बड़े पद से रिटायर हुए थे ।हीरा साहब जब भी नौकरी से गांव आते दूर दूर से लोग मिलने आते क्या जाति क्या परजाति सभी लोग साहब के नाम से जानता थे । दूर दूर के गांवों में उनकी बड़ी इज्जत थी ।
हीरा साहब गरीबी मे पले बढे पढे थे । मीलों तक नंगे पांव पैदल चलकर पढने जाते थे । पैदल चल चलकर उनके तलवे की मोठी परत निकल जाती थी । कभी कभी तो उनके पांव से खून बहने लगता था पर वे स्कूल जाना बन्द नही किये थे । पढाई में बहुत होशियार थे । उनके जमाने में बिजली की पहुंच गांवों तक थी भी नही चिमनी ,डेबरी से पढाई होती थी । गरीबी इतनी थी की मिट्टी का तेल भी नही खरीद पाते थे । आवागमन के साधन भी न थे ,पगडण्डी या मेड़ो से होकर मीलों दूर स्कूल जाते थे । पूरे गांव में हीरा बाबू ही इकलौते थे जो अत्यधिक गरीब होने के बाद भी पढाई के प्रति समर्पित थे ।गरीबी,अशिक्षा,जातिवाद का खूब बोलबाला था । अंग्रेजी शासन में हीरा बाबू ने बारहवीं की परीक्षा पास कर नाम रोशन कर दिया था । गरीबी भी हीरा साहब का

मनसुबा नही हिला पायी थी। बारहवी के बाद उन्होने पढाई छोड़ दिया और काम की तलाश में शहर चले गये । शहर में पुलिस अफसर की नौकरी मिल गयी ।अपनी मेहन,लगन,अनुशासन और पक्के इरादे की वजह से सफल भी रहे ।

हीरा साहब दो भाई थे । हीरा छोटे थे दूसरे भाई ठोरी बडे थे । दोनो भाईयों के प्यार को देखकर लोग होरी को लक्ष्मण कहते थे । हीरा साहब ने ठोरी को अपने से अलग नही समझा । वे ठोरी के बडे लड़को के शहर भेजकर पढाये और दूसरे को अपने साथ शहर पर अपने लड़को को उनकी हाल पर छोड़ दिये ।एक ही लड़की थी वह भीस्कूल का मुंह नही देख पायी थी । ठोरी के दोनो लड़के सफल हो गये अपने पांव पर खडा हो गये पर हीरा साहब के तीनों लड़के असफल रहे । लोग छींटाकशी करते कहते क्या हीरा साहब अपने बेटों को कुछ नही बना पाये तब वे कहते अरे भइया के लड़के क्या अपने से अलग है । है तो अपने ही, हमारे लड़कों ने ईमादारी से अपना कर्म नही किया तो फल कैसे मिलता । रही बात हमारे बेटों की हमने बड़ी कोशिश की वे नही आगे बढ पाये तो इसमें मेरा क्या दोष है । जब तक मेरी कमाई है तब तक ऐश करेगे जब खत्म हो जायेगी तब तो चेतेगे । जब आदमी पर पड़ती है तब चेतता ही है । हमारे बेटे भी चेतेगे । गांव पुर के लोग हीरा साहब को अपना आदर्श मानते थे ।

हीरा साहब ने अपने जीवन में किसी का बुरा नही किया । भय्यपन के लिये बड़ा त्याग किया । संयुक्त परिवार की मर्यादा को टूटने नही दिये ।अपनी पत्नी और बच्चों को शहर नही ले गये । अपने भाई के नाम सबसे पहले जमीन खरीदा इसके बाद भाभी के नाम ।गांव के लोग ठोरी और हीरा को साथ देखकर कहते ये कलयुग के राम लक्ष्मण है । हीरा साहब के मरते ही सब कुछ बिखर गया । सब की निगाहें उनकी छोड़ी चल अचल सम्पति पर आ टिकी । पत्नी तो दस साल पहले ही दुनिया छोड़ चुकी थी । हीरा साहब झटपट में मरे थे ज्यादातर रकम बैक में थी जिसे प्राप्त करने के लिये लम्बी कानूनी प्रक्रिया से गुजरना था । दसवें । घाट। पर हीरा साहब के छोड़े धन पर पूरे दिन हर कोई रायमशविरा देने से नही चूक रहा था । लोग सिर मुडवाते वक्त भी मुंह नही बन्द कर रहे थे । नाई का हाथ मशीन की तरह चल रहा था । इसके बाद भी भीड़ जीम हुई थी । लोग दाढी मूछ और सिर मुडवाकर उपटन और सरसों की तेल लगाकर पोखर में छलांग लगा लेते ।शाम होने को आ गयी पर सिर मुडवाने वाले कम नही हो रहे थे । तब गांव के दूसरे लोगों ने भी उस्तरा थामा तब जाकर तीनों नाईयों ने राहत महसूस किया । सूरज को ढलता हुआ देखकर एक बुजुर्ग बोले भइया पहले पिण्डदान की तैयारी कर लो । नही तो रात हो जायेगी । देखो बादल भी चढे आ रहे है । बरसात भी हो सकती है । बाल कटवाने वाले अब कम हो गये है । यही काम ये लोग पहले शुरू कर देते तो काफी पहले फुर्सत मिल गयी होती । खैर देर आये दुरूस्त आये । पिण्डदान की रस्म पूरी करने की अब व्यवस्था कर लो ।

नाई–हा दादा ठीक कह रहे हो । रूपचन्द कण्डा,चावल और एक हड़िया लाकर दो ।

रूपचन्द– काका सब तुम्हारे सामने रखा हुआ है ।कहां से लेने जाऊं ।

नाई–बुढौती में सब सठिया जाते है । मैं भी सठिया गया क्या ?

हुकुमचन्द ठिठोली करते हुए बोले तुम कहां से सठियाने लगे तुम तो बस ऐसे ही बाल काटते रहोगे ।

नाई निखारचन्द–नही भइया मुझे भी हीराभइया जैसे दुनिया के पार जाना होगा । अब नही बर्दाश्त होता कुन्दन । सुनो कैसी दर्दनाक चीखे आ रही है ।

हुकुमचन्द–मृत्युलोक से तो सभी को जाना है देर सबेर ।

नाई निपोरचन्द–अभी तो नही जा रहे हो काका । जरा हाथ जल्दी जल्दी चलाओ । देर हो गयी है । पेट में चूंह कूद रहे है । दाना भुजैना देख रहे हो तैयार है ।

नाई निखारचन्द–ठीक है भइया पिण्डदान तो हो जाने दो। ठोरी भइया पिण्डदान तुम करोगे या फुलेश्वर ।
ठोरी–फुलेश्वर करेगा । बड़ा बेटा तो वही है । हम कैसे करेगे ?
नाई निखारचन्द–ठीक है फुलेश्वर इधर आ जाओ । अब तुम्हारा बाल काटूंगा क्योंकि पिण्डदान शुरू हो जाये बाकी आते रहेगे बाल कटवाते रहेगे । पिण्डदान का काम जल्दी शुरू करना होगा । निखारचन्द तनिक देर में फुलेश्वर के सिर के सारे बाल उसके आगे गिरा दिये । मूछ दाढी सब साफ हो गया । फलेश्वर दाढी मूछ और सिर मुड़वाकर उपटन और तेल लगा का पोखर में नहाकर आया और पिण्डदान की रस्म पूरी करने के लिये बैठ गया ।
निपोरचन्द ने आवाज लगायी अरे और कोई तो नही बचा है सिर उुडवाने के लिये।
ठोरी का बड़ा बेटा कपिलेश्वर बोला काका अभी तो कई लोग है काका।
निपोरचन्द–बेटा तू तो इधर आ ।तेरा बाल काट दूं । बाद में दूसरों का काटूंगा ।
ठोरी बोले निपोचन्द– कपिलेश्वर की मूछ मत छिलना ।
कपिलेश्वर–क्यो बाबू ।
ठोरी–फुलेश्वर तो मुडवा दिया तेरा मुडवाना जरूरी नही है ।
निपोरचन्द– बेटवा कह रहा तो मुडवा लेने दो क्या फर्क पड़ेगा दो दिन में तो फिर उग आयेगी ।घर की खेती है । कहां दूसरे के खे में उगाना है ।
ठोरी– नहीं मुडना ।
कपिलेश्वर–क्यों मना कर रहे हो बाबू ।
ठोरी–मैं तो जिन्दा हूं । तू मूछ मुडवायेगा । अरे जिसका बाप मरता है वही सिर,दाढी और मूछ मुडवाता है ।
कपिलेश्वर निपोरचन्द से बोला मूछ मूड दो काका । मेरी मूछ मुडवाने से पिताजी नही मरेगे । चाचा ने तो पिताजी से ज्याद हम लोगों के लिये किया है । पिताजी तुमने हमारे लिये क्या किया है ? सब तो चाचा का किया हुआ है । चाचा चाची ने पाला पोषा पढाया लिखाया पांव पर खड़ा होने लायक बनाया । तुमने तो कुछ भी नही किया है चाचा की दी हुई धोती की खूंट पकड़कर चौधिरायी करते रहे । देवता समान चाचा की मौत पर मूछ तक नही बनवाने दे रहे हो । असल में इसके चाचा हकदार है बाबू तुम नही । घाट पर जमा लोग कपिलेश्वर की हां में हां मिला रहे थे ।
ठोरी गुस्से में लाल हो गये और बोले– मूछ नही देना बस ।
ठोरी की बात हीरसाहब के समधी द्वारिकाप्रसाद को बर्दाश्त नही हुई । वे उठ खड़े हुए और ठोरी के सामने जा खड़े हुए और बोले क्या भइया तनिक सी बात का बतंगड़ बना रहे हो । हीरा भइया का घाट है जो दसी दिन पहले तक तुम्हारे लिये लक्ष्मण थे । क्या नही तुम्हारे लिये किये । सब तो उनका ही बनाया हुआ है तुमने क्या किया है अपने बच्चों के लिये ,परिवार के लिये ? सब कुछ तो हीरासाहब का किया हुआ है। क्यों भाई साहब की नेकी पर मुट्ठी भर आग डाल रहे हो ? ये कैसा परायन ठोरी भइया हीरा भईया के मरते ही ?

पिसुआ

भूमिहीन खेतिहर मजदूर पिसुआ पोखर में डूबकर मर गया । जानकर बहुत दुख हुआ । वही पिसुआ जो कहता था देखो केशव बाबू मैं भी एक आदमी हूं पर जमीदार जिसके लिये जिसके खेत से हवेली तक दिन रात एक करता हूं सेर भर मजदूरी पर । वही जमींदार मेरे साथ जानवर से भी बुरा व्यवहार करते है । कुत्ते के मुंह मारे बर्तन में खा लेते हैं पर मेरा छुआ हुआ अपवित्र हो

जाता है । मेरी परछाई तक से परहेज होता है । जिल्लतें झेलकर भी टिका हूं । जाउूं तो जाउूं कहां केशव बाबू ।सारी खोट व्यवस्था में है। तीन बेटियां एक बेटे का परिवार है,नात हित है । दूसरी कोई आढत नही है । मेहनत मजदूरी के भरोसे गृहस्थी की गाड़ी को धक्का दे रहा हूं । बेटा पढ लिख जायेगा तो अपने भी जीवन का सांध्य चैन से बित जायेगा । इसी उम्मीद में जी रहा हूं केशव बाबू ।

केशव– आपकी उपासना जरूरी सफल होगी । भगावान पर यकीन रखो बाबा ।

पिसुआ– हां केशव बाबू इसी उम्मीद पर तो जिन्दा हूं ।

केशव–ईश्वर जरूर मदद करेगा बाबा ।

पिसुआ बहुत मेहनती खेतिहर भूमिहीन था । जमींदार की नींद नही खुलती थी उससे पहले हाजिर हो जाता था दरवाजे पर । गन्ने की पेराई के समय में तो पिसुआ के बच्चे तो उसे देख ही नही पाते थे । आंधी रात को घर पहुंचता था और भोर मे काम पर पहुंच जाता था । बदले में वही दिन भर की दो सेर अनाज की मजदूरी ,दोपहर में थोड़ा सा चबैना और लोटा भर रस और गुड़ बन जाने पर कड़ाह का धोवन मिलता था। धान की रोपाई के सीजन में तो पिसुआ की काया कोढ़ियो जैसी हो जाती थी । गेहूं की बुवाई के वक्त तो पैर का तलवा सांप की केचुली की भांति मोटी परत छोड़ देता था हल के पीछे चलचलकर । खैर हर भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की यही दास्तान है । उन्हे आंसू में रोटी गीला करना पड़ता है,लाख तकलीफें भोगना पड़ता है । वह कहता बाबू हमारी ही नही पूरी बस्ती के खेतिहर मजदूरों का बुरा हाल है । रोटी कपड़ा और मकान के लिये तरस रहे हैं । हम आजाद देश के गुलाम है । समाज में हमारी स्थिति कुत्ते बिल्ली से भी गयी गुजरी है । बाबू समाज से उपेक्षित, जाति से छोटा भूमिहीन खेतिहर मजदूर जो ठहरा । वह आंसूओ से भरी आंखों में उम्मीदे लिये कहता केशव बाबू हमारी मेहनत एक दिन जरूर रंग लायेगी । अरमानों के सपने पिसुआ के सुनहरे जरूर थे पर किस्मत तो कैद थी जमींदार की चौखट पर व्यवस्था की खोट की वजह से। वह मुसीबतों की दरिया में डूबा हुआ भी खुश रहता था शायद वह अपनी पीड़ा बच्चों से दूर रखना चाहता था । वह कहता केशव बाबू कब बचपन से बूढा हो गया पता ही नही चला जमींदार की गुलामी करते करते ।

पिसुआ के हाथ हल के मूठ पर ऐसे सध गये थे कि वह हल जोतते जोतते सो तक जाता था मजाल कि बैलों को तनिक खरोच तक लग जाये । पिसुआ को सुबह जमींदार के घर से एक लोटा रस और मुट्ठी भर चबैना मिलता था वह भी लेने के लिये पिसुआ के घर से कोई जाता था । ज्यादातर रस चबाने लेने जाने वालों को भी जमीदार दूसरे कामों में लगा लेते थे इसके बदले मजदूरी भी नही मिलती थी। रस चबैना की इन्तजार में बेचारे मजदूरों को शाम तक हो जाती थी कभी कभी । बहुत शोषण करते थे जमीदार लोग ,मानवता तो उनमें तनिक भी न थी । मजदूरों से जानवरों सरीखे काम लेते थे बदले में पेट पालने भर की मजदूरी नही देते थे । अभावों में जीने को मजबूर किये रहते थे उपर से उत्पीड़ित भी करना अपनी शान समझते थे । जब कभी जमींदार की दुत्कार और मुसीबते गम का भारी बोझ बन जाती तो वह गम को भुलाने के लिये खेत में नाचना शुरू कर देता । कुछ ही देर में उसकी नांच देखने के लिये भीड़ लग जाती । राहगीर तक रूक जाते थे । काम की खोटी कहकर इसके लिये भी जमींदार झारख्सण्डे बाबू अपशब्द तक बक जाते थे पर पिसुआ इतना गमखोर था कि बुरा नही मानता था । वह कहता जल में रहकर मगरमच्छ से कैसी दुश्मनी ?

पिसुआ जितना मेहनती था उतना ईमानदार भी और बड़ों की बात को शिद्दत से स्वीकार कर लेता था चाहे उसको हानि ही क्यो ना हो जाये । उसकी नेक नियति का फायदा जमीदारन खूब उठाती थी । बेचारे गरीब मजबूर की मजदूरी कम कर देती थी । पिसुआ कहता मालिकीन सात दिन की

मजूदरी बाकी है तो जमीदारन कहती नही रे पिसुआ पांच ही दिन की । इसके पहले कितने दिन की ले गया था कुछ मालूम है । बेचारे पिसुआ को ही झूठा करार कर दिया जाता । बेचारा आंखों में आंसू लिये मान जाता । पत्थर दिलों का दिल नही पसीजता । कुछ महीने पहले पिसुआ से मुलाकात हुई थी । मैने पूछा बाबा आज काम पर नही गये ?
पिसुआ–केशव बाबू अब काम नही होता आंख ठेहुना सबने जबाब दे दिया । मजबूर होकर घर बैठा मक्खी मार रहा हूं ।
केशव–बाबा ऐसा क्यो कह रहे हो ।
पिसुआ–क्या कहूं बाबा । हाथ पांव चलता था तो सेर भर कमा कर लाता था । बचपन से अब तक जमीदार झारखण्डे बाबू का गोबर फेंका । देखो रोटी के लाले पड़े है । जिन्दगी चैन से कट जाती । अगर सरकारी नौकरी में होता दस साल पहले रिटायर हुआ होता लाखो की गड्डियां लेकर उपर से पेशन भी मिलती । जमीदार लोग खून को पसीना बनवा लेते है सेर भर मजदूरी देने में भी आंख निकल जाती है ।
केशव–बाबा तुम्हारी बात में सच्चाई तो है ।
पिसुआ– काम तो नही छोडता पर ताकत ने साथ छोड़ दिया लाचार को क्या विचार बैठ गये दरवाजे पर । जमीदार की हवेली भारी बोझा लेकर गिर गया था देखो ये घाव । ये घाव है कि ठीक ही नही हो रही है । मवाद बहता रहता है । विपत्ति का बोझ सिर पर आ पडा है केशव बाबू ।
केशव–कैसी विपत्ति बाबा ?
पिसुआ– बाबू तुम नहीं समझोगे शहर में रहते हो ना ।
केशव–समझता हूं बाबा । ऐसी बात नही है । इसी गांव में तो पैदा हुआ हूं सब जानता हूं । जातिवाद,अत्याचार,शोषण आदि से अच्छी तरह परिचित हूं । बाबा बताओं ना कैसी विपत्ति ?
पिसुआ–बेटवा को पेट काटकर पढाया पर नौकरी नही मिली । जहां जाता घुस मांगा जाता । मैं ठहरा खेतिहर भूमिहीन मजदूर कहां से देता घुस । मेरा सपना बिखर गया बाबू ।
केशव– हां बाबा चहूंओर भ्रष्टाचार की आग लगी हुई है । इसीलिये तो कमजोर तबके के लडके तरक्की नही कर पा रहे है । उनकी जरूरते नही पूरी हो पा रही है,स्कूल कालेज की फीस तक नही दे पा रहे हैं,पेट में भूख आंख में सपने सजाये परिस्थितियों से लड़ रहे हैं । इंसानियत विरोधी आगे बढने नही दे रहे है ।
पिसुआ– केशवबाबू कहते है हमारी बिरादरी की नौकरी के लिये आरक्षण है । कहां आरक्षण है। इस बस्ती में कोई ऐसा लड़का नही है जिसे सरकारी नौकरी मिली हूं । सरकारी आरक्षण तो हमे नहीं खुशहाल बना पाया । अरे आरक्षण तो उनका है जो पोथी लेकर घूमते है । अच्छी कमाई करते है । लोग सलाम भी ठोकते है । आरक्षण तो उनका है जो जमीन पर कब्जा कर बैठे है, व्यापार पर कब्जा कर बैठे है हमारे जैसे कमजोर के लिये तो कोई रास्ता ही नही बचा है बस खुद का हाड़ थूरो जीवन भर । यदि ये जाति व्यवस्था वाला आरक्षण खत्म हो जाता तो हम खुशहाल हो जाते । इससे समाज कई धड़ों में बंट गया है। सब एक हो जाते । सबमें बराबरी का भाव और सद्भावना का संचार होता । वर्णव्यवस्था में तो हमारे जैसा आदमी ,आदमी होकर भी आदमी नही रहा है । ये आरक्षण खत्म होना चाहिये । बाबू हम जीवन भर हल जोतते रहे दस बीसा जमीन के मालिक नही बन पाये । जिसने कभी खेत में पैर ही नही रखा वही खेत के मालिक है । हम अनाज पैदा करते है हमारे बच्चे पेट में भूख लेकर सोते है । हम मकान बनाते है हमारे बच्चों को धूप बरसात से बचने का कोई पुख्ता इन्तजाम नही । हम तो गुलाम होकर रह गये है । जल जमीन और जंगल पर कब्जा करके दंबग समाज हमें तो कण्डे से आसूं पोछने को बेबस कर दिया है ।
केशवबाबू– हां बाबा दंबग समाज ने कमजोर वर्ग के साथ अन्याय तो किया है ।

पिसुआ– अन्याय तो किया ही है । हमारा इतिहास खत्म कर गुलामी के रंग में रंग दिया है।
केशव– बाबा तुम्हारी बात में दम तो है ।
पिसुआ– बाबू मेरा बेटवा बारहवीं पास है । बी.ए. की पढाई तंगी की वजह से पूरी नही हो पायी । शहर में ईट गारा कर रहा है । दिन रात की मेहनत मजदूरी से दो हजार रूपया भेजा था वह भी झाारखण्डे बाबू के कर्जे मे चला गया । ना जाने कौन सा कर्जा है । कब हमने लिये कोई अता पता नही सौ रूपया के बदले हजार लिखकर अंगूठा लगवा लिये । ट्यूबवेल के पानी के नाम पर हजारो का कर्जा निकल रहा है । दवाई के नाम पर हजारों का कर्जा निकल रहा है । झारखण्डे बाबू कह रहे थे । अरे पिसुआ अपने बेटे से कह दे मेरा काम थाम ले सब कर्जा माफ कर दूंगा । बाबू तुम्ही बताओ मेरा इतना प्ढा लिखा बेटा बंधुवा मजदूरी करेगा । मैं तो कभी नहीं करने दूंगा । एक दिन रात में शहर भगा दिया बेटवा को । बेटवा की कमाई झारखण्डे बाबू के फर्जी कर्जे में जा रही है । कहां गुहार करें मुझ गरीब की कोई सुनने वाला नही है ।बाबू पहले भी बहुत दुख झेला आज भी झेल रहा हूं । बस थोड़ा सकून है कि बेटवा को जमीदार के चक्रव्यूह में फंसने नही दिया है । साल दो साल में फर्जी कर्ज भी पट जायेगा । खैर इसका फल झारखण्डे बाबू को जरूर मिलेगा । गरीबों की आहे बेकार नही जाती ।
केशव– बाबा सचमुच जमीदारी के दंश ने खेतिहर मजूदरों के जीवन को नरक बना दिया है ।
पिसुआ– बाबू, झारखण्डे बाबू एक मरती हुई बछिया दिये बोले ले जा पिसुआ जीला खिला । दो पैसा देगी । बछिया तो दो चार दिन में जमींदार के दरवाजे पर मर जाती । मरा जानवर फेकने के डर से बछिया को झारखण्डे बाबू मेरे गले में बांध दिये । मैं कंधे पर अपने घर लाया था । कोई मोल भाव नही किया मैं तो समझा फोकट में मिल रही है, मेरी मति मारी गयी थी । भगवान का चमत्कार ही कहो दो चार दिन में बछिया चलने फिरने लगी जबकि जमीदार के दरवाजे पर अब मरी की तब मरी वाली हाल थी । बड़ी जतन से बछिया को पाला बकरी का दूध पीलाकर । दस –पन्द्रह दिन के बाद घास भूसा भी खाने लगी थी । बछिया बड़ी हुई गाभिन हुई । गाभिन बछिया को देखकर झारखण्डे बाबू के अन्दर का शैतान जाग गया । वे बोले पिसुआ मैने तुमको फोकट में गाय तो दिया नही है गाय की कीमत दो हजार है । एक हजार मुझे दे दे गाय खूंटे पर बांध ले । नही तो हजार रूपये मुझसे ले ले गाय मेरे खूंटे पर बांध दे । गाय झारखण्डे बाबू के खूटे पर बाध देता तो हजार रूपये भी नही मिलते गाय भी चली जाती । दो बीसा खेत था वह भी गाय के लिये गिरवी रख दिया । वही हुआ न गाय मिली न रूपया । गाय झाारखण्डे बाबू हांक ले गये । रूपया कर्जे में काट लिये । बाबू मुझे तो बरबाद कर दिया जमींदार झारखण्डे बाबू ने । दिल के अरमान झारखण्डे बाबू ने आंसूओं में बहा दिये मेरे ।
केशव– हां बाबा कमजोर की पीड़ा कौन समझता है आज के इस लूटखसोट के जमाने में । जमीदार तो खून चूसने के लिये बदनाम ही है और भी लोग कम नही ।
पिसुआ–हां बाबू तुमको भी सच्चाई का पता चलने लगा है । केशव बाबू फुर्सत में हो क्या ?
केशव–क्यों बाबा कुछ काम है हमारे लायक क्या ?
पिसुआ–वक्त तो खोटा नही कर रहा हूं ।
केशव–नहीं बाबा । ऐसा क्यों सोच रहे हैं । बाबा आप अपनी पीड़ा किससे कहेगे अपनों से ही ना । मन का दर्द बांटने से मन हल्का होता है ।
पिसुआ–हां बाबू पर आज के जमाने में सुनता कौन है । पीड़ितो की बात सुनी गयी होता तो देश में जातिवाद,गरीबी,भूमिहीनता का ताण्डव होता ? हम सामाजिक बुराईयों से अभिशापित होते ? हमारे साथ अन्याय होता ? नही होता बाबू सब ओर समानता होती । शोषित पीड़ित समाज भी सम्मानजनक स्थिति में बसर करता पर यहां तो हर ओर भेद का ताण्डव है ।

केशव–हां बाबा ठीक कह रहे हो ।
पिसुआ– केशव बाबू ये जमीदार लोग हम वंचितों को गुलाम आज भी समझते है । भले ही देश आजाद हो गया है । बाबू आज जो मेरी हाल है उसके लिये पुराना आरक्षण जिम्मेदार है ।
केशव– वो कैसे बाबा ?
पिसुआ– बाबू हम खेती करते है । हम भूमिहीन है । आदमी होकर आदमी के बराबर सामाजिक समानता प्राप्त नही है । जमीन पर तो हम हल जोतने वाला का हक बनता है बाबू देश में हकबन्दी लागू होनी चाहिये ताकि शोषित समाज सम्मान के साथ जी सके ।
जाति आधारित पुरानी व्यवस्था ने सब कुछ छिन कर हमें कैदी बना दिया है ।हमारी दासता इसी व्यवस्था की देन है ।जब तक शरीर में जान था झारखण्डे बाबू ने निचोड़ा जब शरीर काम करने में असमर्थता जता दी तो कर्ज का बोझ सिर पर लादकर लात मार दिया । बाबू यदि सरकारी नौकरी में होता या सरकारी संरक्षण प्राप्त होता तो आज मेरी स्थिति ऐसी नहीं होती । केशवबाबू सिर पर विपत्ति आ पड़ी है ना जाने कब कटेगी ?
केशव–हां बाबू बहुत बड़ी विपत्ति है । इस विपत्ति का इलाज राजनीति से ही सम्भव है पर ईमानदारी के साथ पहल हो तब । सामाजिक समानता का अधिकार मिले, भूमि पर मालिकाना हक मिले । शोषित समुदाय के बच्चों की शिक्षा दीक्षा का पूरा भार सरकार वहन करे । तभी वंचितो का उध्दार सम्भव है ।
पिसुआ–बाबू विपत्तियों से घबराकर बुढ़िया पागल हो गसी है । जमींदार का फर्जी कर्ज कैसे भरा जायेगा ? बेटवा नीलाम हो जायेगा यही रट लगाये रहती है । पागलपन के दौर में खटिया से उठकर कभी कभी भाग भी जाती है । बुढ़िया की देखरेख करनी पड़ती है । उसके कुछ सूझता नही । जमीदार का अत्याचार पागल बना दिया है । बाबू जिन्दगी नरक होकर रह गयी है ।
केशव– बाबू बेटवा पतोहू सेवा सुश्रुषा तो कर रहे है ना ?
पिसुआ–बेटा,बहू तो बहुत ख्याल रखते है । सारा दारोमदार तो बेटवा और बहू के उपर है । बेटवा शहर में ईंटं गारा करके सौ पच्चास का मनिआर्डर भेजता रहता है । बहू हमारी और बुढ़िया की चाकरी करती ही है । मेहनत मजदूरी से भी नही चूकती । टाइम से रोटी दे देती है । भले ही भूखी रहे । बाबू हमे सबसे ज्यादा दुख जातिवाद की महामारी से है । हमारी सारी मुसीबतों की जड़ भेदभाव वाली पुरानी व्यवस्था है । खत्म हो जाती तो हमारे जैसे अभागों का उध्दार हो जाता ।भेदभाव की मुट्ठी भर आग में सुलग सुलग कर मरने से बच जाते ।
केशव–ठीक कह रहे हो । जातिवाद ने तो आदमी को ऐसे बांट रखा है कि हर वर्ग का आदमी शोषित वर्ग का खून चूसने के लिये उतावला है और खुद दूसरे से श्रेष्ठ होने का भ्रम पाल रखा है । अरे आदमी तो आदमी होता है क्या छोटा क्या बड़ा ?
पिसुआ– सच कह रहे हो । केशव बाबू अभी कब तक रहोगे ?
केशव– चार दिन और हूं बाबा ।
पिसुआ–बाबू मै जाउं ।
केशव–कोई जरूरी काम याद आ गया क्या बाबा ?
पिुसआ–क्या काम करूंगा । काम करने लायक कहां बचा हूं । अब तो अपना शरीर ढो लूं बड़ी बात होगी । बाबू बुढ़िया का डर लगा रहता है । दीवाल पर चढकर बाहर कूद जाती है । घर की दीवाल छोटी है ना । एक बार तो कूल्हा ही सकर गया था । बन्द करके रखना पड़ता है। दरवाजा बाहर से बन्द करके आया हूं । पोता–पोती स्कूल गये है । पतोहू काम पर गयी है । बाबू अब चलता हूं । बुढ़िया कहीं चली गयी तो तड़प तड़प कर मर जायेगी । मुझे डर लगा रहा है ।
केशव– चलो में भी दादी को देख लेता हूं ।

पिसुआ–बाबू किसी को नही पहचानती ।बुरी बुरी गाली देती है ।
केशव–बाबा दादी होश में गाली तो नही देती है ना । बेचारी की दिमागी स्थिति ठीक नही है । उसका क्या दोष ?
पिुसआ–ठीक है बाबू चलो ।
केशव पिुसआ के साथ उसके घर पहुंचे । पिसुआ बोला बाबू ठहरो । सुनो बुढिया कुछ पटक रही है । केशव बाबू वापस जाओ । मैं दरवाजा खोलकर देखता हूं । तुमको देखकर गाली देगी ।
केशव– कोई बात नही बाबा गाली सुन लूंगा । मुझे बुरा नही लगेगा । पागलपन के दौरे की वजह से दादी गाली बकती है ना । जब ठीक थी तब तो गुड–पानी लेकर आती थी। बाबा सब समय का दोष है । दादी का नही ।
पिसुआ दरवाजा खोला बुढिया कटोरा उसके सामने पटकती हुई बोली क्यों मुझे मारना चाहता है ना ले दबा दे गला । झारखण्डे बाबू ने जोख की तरह खून चूस डाला तू गला दबाकर खत्म कर दे । जीने से क्या फायदा । चिल्ला चिल्लाकर बुढिया कोने में बैठकर रोने लगी । तब पिसुआ बोला देख लो बाबू बुढिया का ऐसा हाल हो गया है । केशव बाबू प्रभु की इच्छा होगी तो फिर मुलाकात होगी अब जाओ ।
वही पिुसआ मर गया । आंख से दिखाई देना बिल्कुल कम हो गया था । घुठने भी जबाब दे गये थे । भोर में मैदान के लिये लाठी के सहारे निकला था पर भ्रमबस पोखर की ओर चला गया । पानी को जमीन समझकर पैर आगे बढाया और चला गया हाथी के डूबने लायक पानी में । दो दिन की खोजबीन के बाद उसकी लाश मिली थी । आंख कान और शरीर के कुछ हिस्से तो मछलियों ने चट कर दिया था । जीवन भर बहिष्कार तिरष्कार,शोषण की लाख मुसीबते झेलने के बाद आशावादी पिसुआ आखिरकार दुनिया से दर्दनाक मुक्ति पा गया भारतीय समाज और सरकार के सामने कई ज्वलन्त सवाल छोड़कर।

एक्सीडेण्ट

फोन की घनघनाहट सुनकर मिसेज लाल चौंककर फोन की ओर दौड़ पड़ी । फोन की घनघनाहट ना जाने उन्हे क्यों अशुभ सी लग रही थी । वे हड़बड़ायी सी कांपते हाथ से फोन का रिसीवर उठायी और लड़खड़ाती जबान से हेलो बोली । दूसरी तरफ की हेलो की आवाज मिसेज लाल के कान को जैसे चीर गयी । वे घबरायी सी हेलो हेलो रूधें कण्ठ से किये जा रही थी । वे समझ गयी कि दूसरी तरफ फोन पर कोई और नही उनके पति मि.लाल है । मि.लाल की घबराहट भरे हेलो शब्द ने उन्हे किसी अनहोनी की आशंका के घेरे में लाकर पटक दिया । वे हिम्मत करके बोली क्या हुआ । क्यों घबराये हुए हो । कुछ तो बोलो परन्तु मि. लाल के कण्ठ से आवाज नही निकल रही थी । बड़ी मुश्किल से मि.लाल बोले भागवान बहुत बुरा हो गया ।
मिसेज लाल–क्या हुआ अभी तो गये हो बीटिया को लेकर प्राइज लेने । क्या प्रोग्राम कैंसिल हो गया ।
मि.लाल–नहीं ।
मिसेज लाल–तब क्या हुआ? मेरी जान निकली जा रही है । कुछ बताओगे ?
मि.लाल–घबराओ नही।
मिसेज लाल–हुआ क्या बताओ तो सही ।
मि.लाल–एक्सीडेण्ट । श्रमिक कालोनी के अस्पताल में पहुंच गया हूं किसी तरह आटो करके। आटो ने दस रूपया की जगह पच्चास रूपये किराया वसूल किया है । अस्पताल वाले भी पुलिस का डर दिखा रहे है । कोई अनुनय विनय तक को नही सुन रहा है । मैं खड़ा नहीं हो पा रहा हूं । बीटिया लहूलुहान दर्द से तड़प रही है । सिस्टर दरोगा की तरह डांट रही है ,कह रही है । बड़े

अस्पताल जाओ पुलिस केस करना है तो । फर्स्ट एड भी यहां नही मिल रहा है । पुलिस कार्रवाई न करने के लिये दबाव बना रहे है । ना जाने इसमें अस्पताल वालों का कौन सा हित सध रहा है ।
मिसेज लाल पुलिस केस का बाद में सोचेगे पहले तो बोलो इलाज शुरू करें । मै पहुंच रही हूं । पैसे का इन्तजाम करके ।
मि.लाल–ठीक है । डाक्टर तो कई है पर नर्स सनडे का बहाना कर कह रही है अभी डांक्टर है । नर्स से पुलिस केस नही करने की बात कहता हूं देखो मान जाये तो ठीक है । तुम आओ तो बड़े अस्पताल ही चलते है । जल्दी आओ ।
मि.लाल पुनः नर्स के पास गये । इलाज शुरू करने का अनुरोध किये । नर्स अपने रवैया पर अड़ी थी वह बोली पुलिस केस है हम हाथ नही लगा सकते । हम तभी इलाज शुरू करेगे जब तुम पुलिस केस न करने का वचन दो और इस कागज पर दस्खत करो ।
मि.लाल–ठीक है । लाइये दस्खत कर देता हूं । इलाज शुरू करो ।
इतने में डाक्टर हाजिर हो गये । झटपट मुआयना किये और बोले घबराने की बात नही है । हड्डी नही टूटी है । खरोंच की वजह से खून बहा है । नर्स हां में हां मिलाती रही । इतने में मिसेज लाल आ गयी बीटिया को लहूलुहान देखकर धड़ाम से गिर पड़ी ।
नर्स बोली– क्यों इतना नाटक कर रही हो मैडम । जरा सी चोट लगी है । मरहम पट्टी हो गयी है । डाक्टर साहब ने दवा लिख दी है खिलाते रहना । दो चार दिन में दौड़ने लगेगी तुम्हारी बीटिया । तुम्हारे मिस्टर को घाव तो नही लगी है उन्हे झूठमूठ की बेचैनी है । यहां से घर ले जाओ । बढिया चाय बनाकर अपने हाथ से पीलाओ ठीक हो जायेगे । जहां घाव लगी हो वहां बरफ से सेकायी करते रहना । सब ठीक हो जायेगा । इंजेकशन लग गया है ,दवा दे दी है । घर ले जाओ और आराम करने दो । नर्स ने पांच सौ रूपये रखवा लिये जिसकी कोई रसीद भी अस्पताल से नहीं दी गयी और न ही डाक्टर का परचा दिया गया ।
किसी तरह से मिसेज लाल बेटी और पति को आटो रिक्शे में लादकर घर ले गयी । बाप बेटी के एक्सीडेण्ट की खबर पुरी कालोनी में फैल गयी । शुक्लाजी,चौहानजी,शर्माजी और जैनजी बाप बेटी की हालत देखकर तुरन्त आटो रिक्शा बुलाये और बाप बेटी को लेकर हड्डी रोग विशेषज्ञ के पास पहुंचे । बीटिया को टेबल पर लेटर दिया गया । डाक्टर पहले बीटिया का चेक अप किये फिर मि. लाल का ।
शुक्लाजी डां. से पूछे डांक्टर साहब फैक्चर तो नही है ना ।
डां. मिस्टर लाल को फैक्चर नही है पर घाव थोड़ी गहरी है। कुछ अन्दरूनी चोटी भी है । पन्द्रह बीस दिन दवा लेनी पडेगी । बीटिया को फैक्चर तो है । एक्सरे के बाद स्थिति साफ हो जायेगी ।
एक्सरे आदि करने में चार बज गये दो घण्टे के बाद रिर्पोट आयी । फैक्चर है । मामला साफ हो गया । डाक्टर तुरन्त कच्चा प्लास्टर करने में जुट गये । घण्टे भर में प्लास्टर हो गया । हाथ धोते हुए डाक्टर साहब बोले मि.लाल आप रेगुलर दवा लेते रहना । बीटिया का प्लास्टर तो हो गया है । बीटिया को ठीक होने में महीना से अधिक समय लग सकता है । बीटिया को कमप्लीट बेडरेस्ट की जरूरत है । पुलिस केस बनता है एफ.आई.आर.जरूर दर्ज करवा देना । गाड़ी नम्बर तो नोट कर लिया होगा ।
मिस्टरलाल –हां ।
सुनील और जान्सन स्कूटर नम्बर के आधार पर एक्सीडेण्ट कर भागने वाले अपराधी डी. सक्सेना,जनता क्वार्टर,नन्दानगर का पता लग लिये पर पुलिस ने एफ.आई.आर. न दर्ज करने की कसम खा ली । मि.लाल अपने क्षेत्र के थाने में जाते तो वहा कहां जाता कि जिस क्षेत्र में

एक्सीडेण्ट हुआ वहां एफ.आई.आर.दर्ज होगी इस थाने में नही । इस तरह मि.लाल काफी भागदौड़ किये पर पुलिस इधर से उधर भगाती रही । इसी बीच एक दिन डी.सक्सेना मि.लाल के घर आया और बोला पुलिस केस मत करो मेरी शान माटी में मिल जायेगी । बीटिया के इलाज के खर्च को खुद वहन करने का वादा कर चला गया । दोगला डी.सक्सेना अपनी चाल में कामयाब हो गया । महीने भर तक पैतरेबाजी करता रहा । कल रूपये दे जाऊंगा परसों दे जाउंगा फिर अपनी बात से मुकर गया । बोला हमने कोई वादा नही किया था । हम तो समाज सेवक है । सड़क पर चलते लोगों का खून नही बहाते । नगर सुरक्षा समिति का सक्रीय सदस्य हूं । हमारे खिलाफ किसी थाने में एफ.आई.आर.दर्ज नही हो सकती । यह तो पता चल गया होगा ।

मि.जैन–सक्सेना धमकी दे रहे हो । बीटिया का पैर तोड़ दिये डेढ महीने से खटिया पर पड़ी है । तुम इलाज के खर्च को वहन करने का वादा किये थे । एक पैसा आज तक नही दिये कैसे दगाबाज हो । बनते समाज सेवक हो क्या तुम्हारे जैसे ही समाज सेवक होते है । एक्सीडेण्ट करके भाग जाते है । जब पकड़ में आते है तो पैतरेबाजी करते है । अरे कुछ तो शरम करो ।

सक्सेना–मुझ से एक्सीडेण्ट तो हुआ है । मैं रात में जागता हूं समाज सेवा के लिये । चलती राह मेरी आंख नीद की वजह से बन्द हो गयी । मेरी गाड़ी टकरा गयी । हो गया एक्सीडेण्ट तो मैं क्या करूं । जो तुम लोग कर सकते थे कर लिये । नही लिखा गया एफ.आई.आर ना .....देख लो मैं क्या कर सकता हूं ।

मि.लाल– बड़े दोगले आदमी हो तुम तो । आंख में धूल छोकना तुम्हे अच्छी तरह से आता है ।खून से खेलते हो होली और बनते हो समाज सेवक । क्यों समाज सेवकों का नाम खराब कर रहे हो ।समाज सेवा के नाम पर पाप कर रहे हो ।खून बहाते हो उपर से धमकी भी देते हो । देखो पैसा हाथ की मैल है । मै इलाज में कोई कोतहाई नही बरत रहा हूं । जरूरत पड़ी तो बीटिया को बड़े से बड़े डाक्टर को देश के किसी कोने में ले जाकर इलाज करवा सकता हूं । सक्सेना तुमने खर्च वहन का वचन दिया था । अपनी जबान से मुकर रहे हो । ऐसा तो दोगले किस्म के लोग ही कर सकते है । अरे दरिन्दे तुमने अपनी गलती का प्रायश्चित कर लेते इतना मेरे लिये बहुत था । तुमने मुझे धोखा क्यों दिया । मेरा केस रजिस्टर्ड नही होने दिया । कैसे घटिया इंसान हो ।तुम्हारे मुंह पर जमाना थूकेगा । समाज सेवा का ढकोसला बन्द कर दो ।

मि.सक्सेना देखो इज्जत मत उतारो ।

मि.शर्मा– तुम्हारी कोई इज्जत भी है । मैं तुमको अच्छी तरह जानता हूं ।तुमने पुलिस केस से बचने के लिये षणयन्त्र रचा था ।

सक्सेना– कामयाब भी हो गया । तुम सब देखते रह गये । चले जाना जिस अदालत में मरे खिलाफ जाना हो । तुम्हारा अंगूठा तो हमने काट लिया । अब तो कही एफ.आई.आर.दर्ज तो करवा नही सकते । कहते हुए दोगला अंगूठा दिखाकर भाग निकला । दोगले की करतूत देख्कार सभी अवाक् रह गये । डी.सक्सेना,जनता क्वार्टर वाले ने बाप बेटी को टक्कर मारकर भाग गया । पकड़ में आने पर इलाज का खर्च वहन करने का वादा किया था पर ये तो उसका षण्यन्त्र था । जब षणयन्त्र का पता आसपास के लोगो को लगा तो सभी मशविरा देने के लिये जैसे उमड़ पड़े । कोई डी.जी.पी. से कोई एस.पी. से कोई किसी और से शिकायत करने की मशविरा देता । कोई कहता क्या थाने के चक्कर में पड़ना जान बची करोड़ो पाये । कोई बीटिया को दुआये देता कहता भगवान करे मेरी बीटिया जल्दी चलने लगे । कोई कहता भगवान के घर देर है अंधेर नही इसका फल डी. सक्सेना को जरूर मिलेगा । उसकी टांग कट जायेगी । कोई कहता उसकी कटी टांग में कीड़े जरूर पड़ेगे देखना । दोगला बहुत शातिर निकला,भगवान दो मुंहे की खुशी पर मुट्ठी भर आग जरूर

डालेगे। सन्तोष करो लाल भईया भगवान तुम्हारा सब दुख हर लेगा । वही तुम्हारा खजाना भरेगा । मि.लाल रिसते जख्म पर मलहम लगाने में मशगूल थे और लोग डी.सक्सेना को बददुआये देने में।

नेकी

दीदी देखो ना । नन्हकी को न जाने क्या हो गया । आंख उपर नीचे कर रही है । छुट्टी के दिन भी उनको फुर्सत नही है । कह कर गये थे कि जल्दी आ जाऊंगा पर अभी तक आये नही । दीदी कुछ जल्दी करो ना टीलू की आखों से आसूं टपके जा रहे थे ।

पुष्पा–टीलू ,रो ना । अभी अस्पताल लेकर चलते है ।क्यो परेशान हो रही हो । बीटिया रानी को कुछ नही होगा,कहते हुए मिसेज पुष्पा आवाज लगान लगी । अरे सुनो जी नहा लिये क्या । देखो रीता की तबियत खराब हो गयी है । अस्पताल लेकर जाना होगा अभी। वकीलभइया घर पर नही है । जल्दी करो ।

मिसेज पुष्पा की पुकार पर दीनदयाल बाथरूम से बाहर आ गये ।

पुष्पा–अरे ये क्या ? बनियाइन तो पहन लिये होते ।

दीनदयाल–इतनी मोहल्लत तुमने कहां दिया । बनियाइन निकाल कर खूटी पर टांगा ही था कि तुमने आवाज देना शुरू कर दिया । भला इतनी देर में कोई नहा सकता है क्या कि मैं नहा लूंगा । कुछ मोहल्ल तो दे दिया करो,जब देखो तब चढी घोड़ी पर सवार रहती हो । खैर छोड़ो पहले तो बताओ रीता को क्या हो गया ।

पुष्पा–कुर्ता पायजामा पहनों । अब बाद में नहाना । पहले रीता को अस्पताल लेकर चलो । सनडे का दिन है अस्पताल में कोई डाक्टर मिलते है भी कि नही । देखो देर मत करो । टीलू बहुत रो रही है । रीता की आंख उपर नीचे हो रही है । मुझे बहुत डर लग रही है । इतने बरसों के बाद तो एक लडकी पैदा हुई थी वह भी पोलियोग्रस्त । वकील बाबू और टीलू बीटिया को बहुत प्यार करते है । बड़े लाड़प्यार से पाल रहे है । पता नही किसकी नजर लग गयी । कल तो चंगी भली थी आज अचानक न जाने क्या हो गया ?

दीनदयाल– झट से पायजामा कुर्ता पहनता हूं । पहले डाक्टर को रीता को दिखाते है । बाकी काम बाद में होगा ।

पुष्पा–क्या कर रहे हो । कब से पायजामा पहन रहे हो । जल्दी नही पहन सकते क्या ?

दीनदयाल– भागवान कुछ तो समय लगेगा । नाड़ा तो बांध लेने दो ।

पुष्पा– हे भगवान इतनी देर पायजामा पहने में लग रहा है । उधर टीलू जोर जोर से रो रही रही है ।लोग कहेगे कैसे पड़ोसी है । दिखाते तो सगे जैसे पर बीमार लड़की को लेकर डाक्टर के पास तक नही ले जा रहे ।

दीनदयाल–क्यों परेशान हो रही हो । चलो नीचे उतरो । स्कूटर की चाभी मेरे हाथ में है । पांच मिनट में अस्पताल पहुंच जायेगे । रीता को कुछ नही होगा ।

पुष्पा–जब काम पड़ता है तब तुम्हारा स्कूटर जबाब दे जाता है । फेको स्कूटर चलो भाग कर । समय बर्बाद हो रहा है । रीता बेहोश हुए जा रही है ।

दीनदयाल–चलो स्कूटर स्टार्ट हो गया । तुम रीता को लेकर स्कूटर पर बैठो । अस्पताल भर्ती करवा कर टीलू को ले जाऊंगा ।

पुष्पा–टीलू को सान्तवना देते हुए अस्पताल की ओर भागी । टीलू मैडम चिल्ला चिल्ला कर रोये जा रही थी । आनन फानन में दीनदयाल अस्पताल पहुंचे ।

डाक्टर साहब पड़ी फुर्ती से आपरेशन थियेटर की ओर इशारा करते हुए भागे । इशारे से दीनदयाल के हाथपांव फूल गये । डाक्टर साहब तनिक भर में कई मशीने लगा दिये पर सब बेकार। आक्सीजन लगा दिये फिर माथा पकड़कर बैठ गये । दीनदयाल बेसुध पड़ी रीता को निहारे जा रहे थे कि कब रो पड़े ।

डाक्टर–दीनदयालजी आप मरीज को ले जा सकते है । कुछ नही हो सकता अब ।

दीनदयाल–क्या ?

डाक्टर–हां । बेबी मर चुकी है ।

अस्पताल पास में होने की वजह से पड़ोसियों की भीड़ लग गयी । दीनदयाल शव लेकर चल पड़े । दीनदयाल के पीछे भीड़, रोती बिलखती टीलू मैंडम और उन्हे सम्भालते आंसू बहाते हुए पुष्पा । टीलू मैडम तो पागल सी हो गयी । इकलौती सन्तान काफी मान मनौती के बाद पैदा हुई थी शादी के काफी वर्षो के बाद पोलियोग्रस्त । वह भी वल बसी । रीता की परवरिश टीलू और वकील भइया बड़े लाड़ प्यार से कर रहे थे ।उन्हे इस अपंग बीटिया पर बड़ा नाज था । रीता गर्दन तो उठा नही पाती थी पर आसपास के लोगों को अच्छी तरह से पहचानती थी । मिसेज पुष्पा को देखकर वह करवटे बदलने लगती थी । हाथ पांव पटकने लगती थी । उसके भाव को देखकर मिसेज पुष्पा समझ जाती थी कि वह गोद में उठाने को कह रही है । गोद में उठाते ही वह मुंह पर एकटक देखती रहती थी । मिसेज पुष्पा के भी आंसू नही बन्द हो रहे थे । उनकी आंख के सामने रीता का चेहरा बार बार उभर रहा था । मिसेज पुष्पा छाती पर पत्थर रखकर टीलू को समझाने का अथक प्रयत्न कर रही थी । टीलू थी की बयान कर–कर दहाड़ मार–मार कर रोये जा रही थी । मिसेज पुष्पा टीलू की देखरेख में लगी हुई थी और दीनदयाल क्रियाकर्म करने की तैयारी में । दीनदयाल वकील भइया के परिचितों को अपने बच्चों को भेजकर बुलवाया दूर के परिचितों को किसी दूसरेां का हाथ जोड़ जोड़ कर बुलवाये । वकील भइया को बुलाने के लिये एक आदमी को दौड़ाये ।खुद अन्तिम संस्कार का इन्तजाम करने के लिये एक दो को साथ लेकर करने में जुट गये । कुछ देर में काफी लोग जुट गये पर वकील भइया के दूर के परिचित ड्राइवर प्रसाद ने तो सारी हदे पार कर दी । दीनदयाल की बीटिया काजल को डांटकर भगा दिये । काजल से बोले तेरा बाप कितना बेवकूफ है ना जान ना पहचान तू मेरा मेहमान हर ऐरे गैरे के काम के लिये बुलावा भेज देता है । अरे उसकी अपाहिज बीटिया मर गयी तो कौन सी दुनिया उजड़ गयी । अच्छा हुआ । दुनिया में ना जाने कितने रोज मरते है । वकील की अपाहिज बेटी मर गयी तो कौन सा पहाड़ टूट गया । मेरी कोई जान पहचान वकील से नही है । मेरे और भी काम है । जा कह देना अपने बेवकूफ बाप से । अरे खुद मुसीबत में डूब रहा है । दूसरों की मुसीबत में क्या जरूरत है कूदने की । बड़ा भला मानुष बनता है । घर में खाने का इन्तजाम नही चला है नेकी करने । खुद की घरवाली का दुख दर्द ठीक से देख नही पा रहा है । समाज को बदलने का जैसे ठेका ले लिया है । भाड़ में जाये ऐसी जनसेवा । बेचारी काजल रोते हुए वापस आ गयी । वकील भइया की बीटिया रीता की मय्यत में ड्राइवर प्रसाद नही सरीख हुआ । कही घूमने चला गय । खैर प्रसाद नही आया । वकील भइया की मृत बेटी को दफना दिया गया ।

दीनदयाल वैसे ही मिसेज पुष्पा की असाध्य बीमारी,खुद की बीमारी और आर्थिक तंगी से त्रस्त थे। दवा का इन्तजाम भी बडी मुश्किल से हो रहा था । बच्चे कपड़े लते को रतस रहे थे ।गांव में परिवार के लोग नाराज थे क्योंकि मनिआर्डर नही कर पा रहे थे । सार कमाई दवाई पर स्वाहा हो रही थी । दीनदयाल के पिताजी पूरी बस्ती वालों के सामने कहते बेटवा ससुरा शहर में मजा कर रहा है । गांव में हम सुर्ती बीड़ी के लिये नस्तवान हो रहे है । बीबी बच्चों को साथ में रखा है भला इस गांव में उसका कौन है । क्यों करेगा मनिआर्डर । जबकि दीनदयाल जो कुछ हो जाता

जरूर भेजते थे । दीनदयाल अपनी दयनीय दशा को वैसे ही उजागर नही होने देते थे जैसे नवयौवना अपने तन के तार–तार वस्त्र से अपने अंग को ढकती हो । दीनदयाल खुद के परिवार का खर्च उठाने में दिक्कत महसूस कर रहे थे । इसी बीच वकीलभइया के परिवार का भार आ गया । आने जाने वालेां के चाय नाश्ता,भोजन तक की इन्तजाम करना पड़ता । वकील भइया के मुसीबत को अपनी मुसीबत मानकर दीनदयाल और पुष्पा सारा भार वहन कर रहे थे । बीटिया के मरते ही टीलू तो पागल जैसी हो गयी थी । पड़ोस में एक लड़की पैछा हुआ उसे अपनी बीटिया का पुर्नजन्म मानकर उसे लेने दौड पड़ती । तंगी के बोझ तले दबे दीनदयाल हिम्मत नही हारे पूरी तरह से मदद किये । वकील के परिवार का खाना दीनदयाल के घर ही बनता । पुष्पा और दीनदयाल ने सगों से बढकर वकीलभइया के बुरे वक्त काम आये । दीन दयाल खुद इतने दुखी थे कि दूसरों के दुख में काम आना उनकी कमर टूटने जैसा था । दीनदयाल की इनकम अधिक न थी । वे एक कम्पनी में मामूली से मुलाजिम थे । छोटी सी तनख्वाह थी। पत्नी के चार चार आपरेशन का दर्द भोग चुके थे। इसी बीच बाप का आपरेशन, इसके बाद वकील भइया की मुसीबत दीनदयाल के लिये किसी सुनामी से कम न थी । घर में खाने के लिये अन्न की कमी उपर से एक और परिवार का खर्च पर अपनी दिक्कतों का एहसास तनिक भी वकीलभइया को नही होने दिया । वकील भइया मानसिक रूप से परेशान रहने लगे वे शहर छोड़ने का फैसला कर लिये । पड़ोसियो के ,दीनदयाल और पुष्पा के लाख समझाने के बाद भी मानने को तैयार न थे । दीनदयाल और वकीलभइया में दूर दूर तक कोई रिश्ता नही था । दीनदयाल और पुष्पा को देवदूत कहते वकीलभइया और टीलू न थकते थे । वकीलभइया और दीनदयाल जाति बिरादरी से भी एक ना थे । दीदयाल इंसानियत के पुजारी थे । इंसानियत का धर्म निभाना दीनदयाल को अच्छी तरह से आता था । वकील साहब दूसरे शहर चले तो गये पर उन्हे नया शहर रास नही आया । वे वापस आ गये कुछ महीनों के। दीनदयाल खुद किराये के घर में रहते थे । घर बहुत छोटा था इसके बाद भी आश्रय दिये । दो दिन में वकीलभइया के लिये किराये का घर ढूढ लिये । वकील भइया टीलू के साथ अपने किराये के घर में रहने लगे । यह घर वकील भइया के लिये भाग्यशाली साबित हुआ । उनका काम चल पड़ा । वे तरक्की की राह पर दौड़ पड़े । कामयाबी पर टीलू मैडम को गुमान होने लगा । दीनदयाल और उनका परिवार जो साल भर पहले उनके के लिये देवता समान था । अब उन्हे उनमें खोट लगाने लगी । वे टीलू मैडम की नजर में छोटे हो गये । दीनदयाल की नेकी का टीलू मैडम के लिये कोई मोल न रहा ।

टीलू मैडम के लिये ड्राइवर प्रसाद उनका परिवार,ढकोसलबाज तेगवहादुर और उसकी घरवाली मंथरा प्रिय हो गये । ये वही प्रसाद थे जो टीलू मैडम की बेटी रीता के जनाजे में शामिल होने से मना कर दिये थे । टीलू मैडम प्रसाद की घरवाली ललिता की बातों पर कुछ अधिक विश्वास करने लगी । प्रसाद और ललिता दूसरेां के अच्छे रिश्ते उन्हे पसन्द नही थे । वे हर हाल में बिगाड़ने का षणयन्त्र रचते अन्ततः कामयाब भी हो जाते । हां बाद में भले ही लोग उनके मुंह पर थूक दे उसकी तनिक परवाह न करते । ललिता जब वे दूसरों के अच्छे सम्बन्ध में दरार डालने में कामयाब नहीं हो पाती तो राखी बांधकर रूर बिलगाव पैदा कर देती । खुद अच्छी और दो परिवार को एक दूसरे का दुश्मन बना देती । उसके व्यवहार में दिखावा कूट्कूट कर भरा हुआ था । ललिता के षणयन्त्र का शिकार होकर टीलू मैडम दीनदयाल के नेकी को बिसार कर नेकी में खोट खोजने लगी । जहां दो चार औरते इक्ट्ठा होती देवता समान दीनदयाल और उनकी पत्नी पुष्पा की बुराई करने में तनिक भी न चूकती । वकील भइया ने भी आना जाना बन्द कर दिया । पुष्पा महीने भर अस्पताल में मौत से संघर्षरत् थी पर टीलू मैडम, न वकील भइया ,न ललिता और न प्रसाद देखने भर को तो न हुए । हां विपत्ति के दिनों में भी दीनदयाल की राह में मुट्ठी भर–भर आग बिछाने

से न चूके । एक दिन राह चलते टीलू मैडम से मिसेज कल्यानी की मुलाकात हो गयी । टीलू मैडम मिसेज कल्यानी को देखकर बोली कहां से आ रही हो भाभी बड़ी जल्दी जल्दी । क्या बात है बहुत जल्दी में हो ?
मिसेज कल्यानी – अस्पताल से आ रही हूं पुष्पा को देखकर महीने भर से अस्पताल में पड़ी है । दीनदयाल भइया बड़ी मुसीबत में हैं ।
टीलू मैडम– मर तो नही रही है ना ?
मिसेज–कल्यानी क्या कह रही हो टीलू ?
टीलू मैडम–ठीक कह रही हूं । मेरे उपर उसका बहुत एहसान है ना ?
मिसेज कल्यानी–एहसान है तो बेचारी महीने से अस्पताल में पड़ी है । बच्चे भूखे प्यास दिन काट रहे है । जाकर अस्पताल देख आती । बच्चों की देखभाल कर लेती । अगर इतनी एहसानमन्द है तो ।
टीलू मैडम–भाभी ये सब मुझे नही करना है ।
मिसेज कल्यानी–मुसीबत में तो अपने ही काम आते है । तुम्हारी मुसीबत में तो दीनदयाल भइया और उनका परिवार जी जान लगा दिया था ।तुम तो कभी अस्पताल में नही दिखी।
टीलूमैडम– भाभी हमे तो इन्तजार है उस दिन का ।
मिसेजकल्यानी–कौन से दिन का इन्तजार कर रही हो ।
टीलूमैडम– जिस दिन उसका बेटा मरे और मै उसके काम आउूं । पूरी कालोनी जान गयी है ना उसने मेरे साथ बहुत एहसान किये है । एहसान चुकाने का मौका तो मिले । मेरी बीटिया मरी थी तो एहसान की थी ना । मैं एहसान कर पूरे शहर को बता देना चाहतीहूं । पहले वो ना उसका बेटा मरे ताकि देख तो ले मेरे एहसान को ।
मिसेज कल्यानी– टीलू होश में तो हो । तुम नेकी पर बदनेकी की आग डाल रही हो । अरे भगवान से तो डरो । मैं जानती हूं दीनदयाल भइया ने तुम्हारे लिये क्या किया है। मैं भी पड़ोस में ही रहती हूं । कोई दूर नही रहती । खुद तकलीफ उठाये पर तुमको तकलीफ नही पड़ने दिये अपने बच्चों का निवाला तुम्हे दिया । असाध्य रोग से पीड़ित पुष्पा बहन ने रात दिन एक कर दिया । तुम्हारे खून के रिश्तेदार तो एक दिन भी नही दिखे,महीने भर पूरा परिवार एक पांव पर खड़ा था । बेचारे दीनदयाल भइया की नेकी भूल कर बुरे की सोच रही हो । पुष्पा के बेटे की मौत की कामना में जुटी हो । जो दूसरे का बुरा सोचते है उनका बुरा पहले होता है । तुमको पता है कि नही टीलू ?
टीलूमैडम– क्या ?
मिसेज कल्यानी–सत्य कभी नही हारता भले ही परेशान हो जाये । तुम्हारी मुसीबत में जो कुछ दीनदयाल भइया और पुष्पा भाभी ने किया है । उसके बदले तुमसे उन्हे कोई चाह न थी । वे तो हर किसी के दुख को अपना दुख मानकर आगे आ जाते है । उनके खिलाफ जो जहर तुम बो रही हूं वह तुम्हारे लिये घातक होगा । इसके लिये तुम्हे भगवान भी माफ नही करेगा । हां दीनदयाल भइया जरूर माफ कर देगे । मेरी बात गठिया लो । एक दिन तुम जरूर दीनदयाल भइया के चौखट पर माथा पटकोगी । अरे किसी की नेकी के बदले नेकी नही कर सकती तो बुराई की मुट्ठी भर भर आग क्यों । नेकी के बदले ऐसा सिला क्यूं टीलू ? दीनदयाल भइया तो कहते है नेकी करो पर नेकी के बदले को चाह न रखो । आज के जमाने में जब लोगो को आग बोने से फुर्सत नही है ,दीनदयाल भइया जैसा कोई आदमी तो है नेकी की राह पर चलने वाला । दूसरों के दुख में काम आने वाला ।
टीलू मैडम– क्या ?

मिसेजकल्यानी– हां । मानवता की राह पर चलने वालों की राहो में फूल बिछाने चाहिये मुट्ठी भर भर आग नही । किसी की नेकी बिसारना महापाप है ।
टीलू मैडम–मै ललिता और मंथरा भाभी के बहकावे में आ गयी थी ।वे कहती थी ठेटे लोगों की सोहब्बत से दूर रहना चाहिये ।
मिसेजकल्यानी– क्या ? दीनदयाल भइया इतना बड़ा आदमी तो तुम्हे इस जन्म में तो नही मिलेगा । अरे आदमी पद दौलत और जाति से बड़ा नही होता ।आदमी तो सद्कर्म और नेक हौशले से बड़ा होता है । दीनदयाल भइया भले ही जाति से छोटे हो पद और दौलत से छोटे हो पर वे बहुत बड़े आदमी है टीलू । आदमी को समझना सीखो ।
टीलूमैडम– गलती का एहसास हो गया है मुझे दीदी । मैं प्रायश्चित करूंगी । भइया और भाभी का पांव पकड़कर माफी मांगूगी कहते हुए अस्पताल की ओर भागीं जहां पुष्पा मौत से युध्दरत् थी।

समाचार

साल भर की कमरतोड़,आंखफोड़ पढाई का फल छात्रों नतीजे के रूप में मिलता है । यदि इन भष्यि के वैज्ञानिकों,विद्वानों,उद्योगपतियों,राजनेताओं, सैनिकों एंव समाज सुधारकों के भविष्य के साथ खिलवाड़ लाभबस होता है तो यह खिलवाड़ भविष्य में सामाजिक,आर्थिक, एवं राष्ट्रीय हित पर सुनामी के कहर से कम न होगा । सुबह परीक्षा थी, रामू पूरी रात तैयारी में जुटा रहा । किशन के मार्निगवाक बाहर निकलते ही किरायेदार प्रकाशबाबू का बेटा रामू बाहर आ गया । रामू को देखकर किशन बोले रामू अखबार का इन्तजार कर रहे हो क्या ?
रामू–नही अंकल । कल पेपर है । अखबार पढने का समय का है । परीक्षा की तैयारी कर रहा हूं ।
किशन–तैयारी अच्छी चल रही है ना ।
रामू–हां अंकल । अव्वल आना है तभी ना पापा साइकिल दिलवायेगे ।
किशन–जरूर अव्वल आओगे । पढाई करो ।नतीजा अच्छा आयेगा बेटा ।
रामू–अंकल पूरे साल से कर रहा हूं ।
किशन–केन्द्र कहां है ।
रामू– अपनी ही कालोनी में । आने जाने मे परेशानी नही होगी ।
किशन–ये भी अच्छी बात है । तुमको ज्यादा देर तक पढने का समय मिल जायेगा । बेटा तुम पढो । मैं मार्निंग वाक् कर लूं ।
रामू–जी अंकल ।
किशन– बेस्ट आफ लक बेटा ।
रामू– थैंक यू अंकल।
रामू मार्निंग वाक् से जल्दी लौट आये और वे भी अपनी बीटिया को परीक्षा केन्द्र छोडने चले गये जो दूर था ।बीटिया उषा दसवीं की छात्रा थी । उषा को परीक्षा केन्द्र छोड़कर किशन घर भी नही पहुंच पाये । कालोनी पुलिस छावनी बन चुकी थी । पत्थरबाजी देखकर दिल दहल गया । बचते बचाते किशन घर तक तो पहुंचा पर पुलिस की ललकार सुनकर आगे बढ गया । किशन का बेटा कुमार बाट जोह रहा था । पापा को घर के सामने से जाता हुआ देखकर पापा.....पापा... चिल्लाते पीछे पीछे दौड़ लगा दिया । आगे बढकर पुलिस के एक जवान ने किशन को रोका ।
पुलिस के रोकने पर किशन रूक गया । वह हिम्मत करके बोला क्या हंगामा है ये । अपने घर में भी नही घुसने दिया जा रहा है । क्या आफत है । क्या हो गया कालोनी में आधा घण्टा पहले तो ऐसा कुछ नही था ।
पुलिस जवान–देख नही रहे हो दंगा हो गया है ।

किशन–दंगा क्यो हो गया ?
जवान– ऐन वक्त पर परीक्षा केन्द्र बदल गया है । इसलिये.....
तब तक हांफते हुए कुमार पहुंच गया और किशन से बोला पापा घर चलों मम्मी परेशान हो रहा है । कुमार डरा सहमा थर–थर कांप रहा था ।दंगे का खौफ उसकी नजरों के सामने घूम रहा था । वह नन्हा सब कुछ अपनी आंखों से देख चुका था । उसे डर था कि कहीं कोई पत्थर उसके सिर न फोड़ दे । वह किशन का हाथ पकड़कर घर चलने की जिद पर अड़ गया ।
किशन–बेटा स्कूटर पर बैठो । अंकल से बात कर लूं । घर ही चलूंगा ।
कुमार–पापा कोई पत्थर मार देगा।
किशन–नही बेटा ये अंकल है ना । पत्थर मारने वालों को पकडने के लिये ।
कुमार– अंकल जैसे तो बहुत लोग थे । देखो न बस को कूंच डाले।
किशन– कुछ नही होगा अब । पुलिस अंकल लोग आ गये है ना ।
इतने में तेज धमाका हुआ । कुमार रोते हुए बोला पापा अब घर चलो । देखो बस पर पत्थरबाजी शुरू हो गयी । सभी लोग अपने अपने घरो के अन्दर है । कुमार की जिद के आगे किशन को झुकना पड़ा । वे अपने घर वापस आ गये । स्कूटर धड़ा कर दंगास्थल ओर जाने लगी । इतने में उनकी धर्मपत्नी गीता डपटकर बोली कहां जा रहे हो जी । देख रहे हो चारो ओर से पत्थरबाजी हो रही है । क्यो सिर फोड़वाने जा रहे हो । इतने में कुछ लड़कियां दीवार की ओट में रोती हुई दिखाई पड़ गयी। किशन लड़कियों के पास गये पूछे बेटी क्या हुआ ।
एक लड़की आसू पोछते हुए बोली परीक्षा केन्द्र बदल गया हम तो परीक्षा देने आये थे । यहां तो सिर फूट गया । कई लड़के लड़किया अस्पताल जा चुकी है । परीक्षा केन्द्र कहां है ।
किशन–परीक्षा केन्द्र बदलने की सूचना तो पहले मिल गया होगी ।
लड़की – नही अंकल अभी पता चला है । कोई कह रहा है नन्दाकालोनी में है तो कोई कहीं और बता रहा है ।
कुछ सरकारी अफसर भी आ गये । कुछ परीक्षार्थी जा चुके थे । कुछ अधिकारियों को उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे ताकि परीक्षा टल जाये । दस मिनट के बाद शिक्षा अधिकारी भी आ गये । पालक और परीक्षार्थी प्रश्नों की झड़ी लगा दिये । एक आदमी स्पष्ट शब्दों में बोला साहब क्या यह भ्रष्टाचार का केस नही है । ले दे कर परीक्षा केन्द्र बदला गया हो ।
शिक्षा अधिकारी महोदय अनुत्तर हो गये ।इतने में अपर कलेक्टर साहब आ गये । स्कूल के संचालक को बुलवाये । आपस में कुछ बातचीत किये । थाने चलो कह कर अपर कलेक्टर साहब आग बढे फिर क्या गाड़ियों का काफिल चल पड़ा अपर कलेक्टर साहब के पीछे पीछे । बच गये कुछ घायल परीक्षार्थी और टूटी बसें । किशन भीड़ के छंटते ही बस के पास सिसकती लड़कियों से बात करने लगे ।इतने में पड़ोस वाला ओमजी आ गये बोले भाई साहब क्या एकटक निहार रहे है ।
किशन–कराहता हुआ भविष्य ।
ओमजी–भाई साहब जब तक भ्रष्टाचार है तब तक सारी कराहे जवां रहेगी । आओ घर चले । इनते में एक पत्रकार महोदय आ गये । पत्रकार महोदय आक्रोश का शिकार हुई बस का फोटो कई ऐंगल से खीचने लगे । कुछ देर में पत्रकार महोदय भी अपनी जिम्मेदारी पूरी कर चले गये । स्कूल के पास कुछ पुलिस जवानों के साथ कोई नहा था । कुछ घण्टे पहले जहां दंगा हो रहा था । लोगों का तांता लगा हुआ था । अब वहां पूरी शान्ति थी । किशन अपने काम पर चले गये । कुछ ही देर में किशन के परिचितों ने ने फोन लगाना ऐस शुरू किया की फोन की घंटी बन्द होने का नाम ही नही ले रही थी । गीता जबाब दे देकर परेशान हो गयी । सब एक ही बात कहते भाई साहब को फोटो अखबार में देखा है इसलिये फोन किया है । भाई साहब आये तो जरूर बताना

हमारा फोन आया था । श्रीमती गीता फोन की घण्टी से परेशान तो थी पर मन में खुशी भी थी पतिदेव का बड़ा फोटो अखबार में जो छपा था । वे उधेड़बुन में थी कि कहीं बड़े साहब तो नही हो गये पर दूसरे पल उनकी खुशी पर वज्रपात हो जाता सोचती उनकी किस्मत में कहां । यदि किस्मत में होती तो कब के बड़े अधिकारी हो गये होते पर कुछ लोगों की कागदुष्टि उन पर ऐसी पड़ी की बड़ी-बड़ी डिग्री के बाद भी क्लर्क की नौकरी भी चैन से नही कर पा रहे है । भेद की दीवार खड़ी करने वाले रिसते जख्म खुरचते रहते है । भला अधिकारी कैसे बनने देगे । अपने पास कोई बड़ी पहुंच भी तो नही है ।दूसरे पल कोई अनहोनी का डर सताने लगता । काफी माथा पच्ची के बाद दफतर में फोन लगा दी । संयोगबस किशन ने ही फोन उठाया श्रीमती गीता आवाज पहचन कर बोली क्यों जी तरक्की हो गयी क्या ?

किशन-कहां से समाचार मिला ।

श्रीमतीगीता-सच आप साहब बन गये आप । आज मैं बहुत खुश हूं ।

किशन-कहां से समाचार आप तक पहुंच गया । मुझे तो कुछ पता नहीं ।

श्रीमतीगीता-दुनिया जान गयी । आपको पता नही ।आपके जाते ही सभी जानने वालों के फोन आने का सिलसिला अभी तक जारी है ।

किशन-क्या ?

श्रीमतीगीता-हां । सभी आपकी फोटो छपने का समाचार बता रहे थे ।

किशन-सुबह वाले अखबार में तो कुछ नही छपा है ।

श्रीमतीगीता-अरे दोपहर का कोई बड़ा अखबार है । देखो अखबार घर लेकर आना और कम से कम पाव भर रसमलाई जरूर लाना ।

किशन-ठीक है । अब फोन रखो । बिल बढ रहा है ।

श्रीमतीगीता-चहकते हुए बोली बाय बड़े साहब ।

किशन किसी अनहोनी के डर में भयभीत होने लगा । बड़ी मुश्किल से दफतर से सूरज डूबने के बाद निकल पाया । अखबार की दुकान पर पहुंचा । सभी लोग किशन को घूर-घूर कर देख रहे थे । वह समझ ही नही पा रहा था कि असल माजरा क्या है ?

दुकान वाला मोड़कर अखबार किशन की ओर बढाते हुए बोला लो साहब आप इसे खोज रहे है ना । कितनी बड़ी फोटो छापी है अखबार वाले ने आपकी । साहब दीजिये एक रूपया ।

किशन पाकेट से एक रूपया निकाला अखबार वाले के हाथ पर रखा । अखबार लिया अखबार का पहला पन्ना खोलते ही होश उड़ गये। खड़े किशन और और जाते हुए ओमजी की फोटो अखबार नवीस ने बड़ी बारीकी से खींची थी । फोटो देखने पर ऐसा लग रहा था कि असली दंगाई किशन ही हो और ओमजी कुछ दूर भागते नजर आ रहे थे । जिम्मेदार पत्रकार असली बुराई से कोसो दूर थे । तस्वीर के नीचे छपा था क्रुध्द भीड़ और स्कूल की क्षतिग्रस्त बस । उखड़े पांव किशन घर पहुंचे । श्रीमतीगीता होठो पर मुस्कान लिये दरवाजे पर खड़ी मिली । किशन बिना कुछ बोले अखबार हाथ पर रख दिये ।

श्रीमतीगीता-बाप रे समाचार ने तो मेरी खुशी पर मुट्ठी भर आग डाल दी ।

निरापद

रामसेवक का बेटा रामगुलाम बी.ए.तक की पढाई पूरी कर गांव से शहर नौकरी की तलाश में जाने की जिद पर अड़ गया रामसेवक के और आगे पढाने की इच्छा के बाद भी । एक दिन रामगुलाम नीम के चबूतरे पर बैठा छोटे छोटे कंकड़ से निशानी साध रहा थे । इसी बी रामसेवक आ गया पर

रामगुलाम इससे बेखबर था । वह निशाना साध साधकर कंकड़ से मारे जा रहा था । रामसेवब बेटे की बेचैनी को देखकर बोला बेटा रामगुलाम क्या कर रहे हो ?
रामगुलाम–बापू कुछ तो नही ?
रामसेवक–क्यों बेचैन है बेटा ।क्यों शहर जाने की जिद कर रहा है । बेटा भले ही अनपढ गंवार हूं पर तेरा दर्द समझता हूं । लाख गरीबी में तुमको पाला पोसा । तुमको मैं अभागा कुछ भी तो नही दे सका । जब से होश संभाला है तब से घर परिवार की दरिद्रता ही तो देख रहा है।
रामगुलाम–क्यो दुखी हो रहे हो । ऐसी कोइ बात नही है ।
रामसेवक–बेटा तू शहर जाना चाहता है तो बड़े शौक से जा । मेरी एक बात ध्यान में रखना ।
रामगुलाम– कौन सी बात बापू।
रामसेवक–कुछ पैसा हाथ में आते ही पढाई शुरू कर देना ।
ररामगुलाम– हां बापू याद रखूंगा । बापू घर की हालत देखी नही जाती । तुम्हारे धोती में देखो कितनी जगह से फटी है । मां की साड़ी में कितने पेवन लगे है । बापू अब मैं तुम्हारा हाथ बंटाने लायक हो गया हूं विश्वास करो । किस्मत ने साथ दिया तो गरीबी दूर हो जायेगी ।
रामसेवक–भगवान तुम्हारी मनोकामना पूरी करे ।
रामगुलाम– बापू तुमने और मां ने मेरे लिये बहुत तकलीफ सहे है । तुमने अपनी इच्छाओं की हत्या कर दी मुझे पढाने के लिये । मैं शहर जाकर कुछ कमाऊंगा तभी गृहस्थी की गाड़ी आगे सरकेगी बापू ।
रामसेवक– वही शहर की बात ?
रामगुलाम–हां बाबू शहर तो जाना ही होगा । गांव में रहकर तो अपने सुख के दिन कभी नही आएगे ।
रामसेवक–बेटा शहर से तुमको इतनी उम्मीद है तो जाओ तुम्हारी किस्मत संवर जाये इससे अच्छी हमारे लिये क्या होगा । इसी में तो हमारी और हमारे खानदान की भलाई है ।बेटा शहर से बरोबर चिट्ठी देते रहना ।
रामगुलाम– हां बाबू तुमको शिकायत का मौंका नही दूंगा । तुम्हारी उम्मदों पर खरा उतरूंगा ।
रामसेवक–बेटा तुमसे यही उम्मीद है ।
आाखिरकार मां बाप का झोली भर आर्शीवाद लेकर रामगुलाम शहर को कूंच कर गया । शहर में वहे दर –दर भटकने लगा । जहां भी जगह खाली है का बोर्ड लगा देखता वहा जाता पर वहां नौकरी नही मिलता । शैक्षणिक योग्यता की पहली नजर में वह नौकरी पाने का हकदार हो जाता पर जब बात सामाजिक योग्यता याानि जाति की आती तो अयोग्य हो जाता ।देश की राजधनी में भी उसके साथ कुत्ते बिल्लियों जैसे व्यवहार हुय वह भी एक पढे लिखे देहाती के साथ । छः साल तक रामगुलाम दिल्ली की खाक छानने के बाद मध्य भारत के इन्दूर शहर पहुंच गया । रामगुलाम को इस नये शहर में भी बहुत दुख उठाना पड़ा । साल भर की बेरोजगारी और भागदौड़ के बाद एक कम्पनी में नौकरी मिल गयी । नौकरी के पहले ही दिन लंच के समय में दफतर का चपरासी आया और बोला मिस्टर रामगुलाम यह तो पता चल गया है कि तुम आजमगढ के हो और तुम मुझे भी जान गये हो कि मैं रहीस अहम खान हूं । कौन से गांव के तुम हो यह भी तो बता दो हो । आजमगढ का तो मैं भी हूं । आजमगढ कोई छोटा मोटा जिला थोड़े ही है देश की शान है अपना आजमगढ ।
रामगुलाम–दुनिया की शान है महापंडित राहुल सांस्कृतायन भी तो वही के थे। खैर मेरा गांव चौकी लालगंज से दस किलोमीटर है । वही का हूं । इतने में साहब की कालबेल बजी वह साहब के कक्ष की ओर दौंड़ पड़ा।

रहीस अहम खान–अच्छा तो चौकी वाले रामगुलाम थोड़ी देर में फिर मिलता हूं और कुछ भी तो जानना है । एक ही विभाग में साठ साल की उम्र तक साथ साथ रहना जो है ।
रामगुलाम–ठीक है ।
चपरासी रहीस अहम खान दूसरे दिन मौंका पाते ही प्रगट हुआ और बोला रामगुलाम तुम देखो मैं तुमसे वरिष्ठ हूं इस दफतर में भले ही चपरासी हूं । एक बात पूछू बताओगे ?
रामगुलाम– कौन सी ऐसी ना बताने लायक बात पूछने वाले हो रहीस ।
रहीस अहम खान–रहीस नही पूरा नाम रहीस अहम खान हूं मैं । खैर देखने में तो तुम किसी बड़ी जाति के लगते हो पर क्या तुम बताओगे कि असली जाति तुम्हार क्या है ? बहुत से छोटी जाति वाले जाति बदल कर नौकरी करते है और कालोनी में भी जाति छुपाकर किराये का घर लेकर रहते है । तुम्हारी जाति क्या है ।
रामगुलाम–अनुसूचित जाति का हूं ।
रहीस अहम खान–बाप रे चमार को अब चाप पानी पिला पडेगा, उसकी टेबल कुर्सी पोछनी पडेगी रहीस को कहते हो धम से रामगुलाम के सामने कुर्सी पर पसर गया । कुछ मिनट के बाद कालर सीधा करते हुए बोला अपना तो धर्मभ्रष्ट हो गया और जाने लगा ।
रामगुलाम–मि.रहीस दफतर की चाभी दे देना कुछ दिन यही रहूंगा । ए.ए. साहब ने इजाजत दे दी है ।
रहीस अहम खान–तू दफतर में रहेगा । हे भगवान अब तो दफतर के बर्तन भाड़े भी भरभण्ड होगे । साहब से बात कर लूंगा इसके बाद चाभी दूंगा । तुम्हारे कहने से तो दूंगा नही ।
खैर ए.ए.साहब ने रहीस अहम खान को लताड़ दिया । वह मुंह लटकाये आया और रामगुलाम की टेबल पर चाभी पटक दिया और बोल देखो कोई सामान लेकर नही भागना और जब तक रहना दफतर के बर्तनों को उपयोग हरगिज नही करना । रहीस अहम खान ने खुलेआम रामगुलाम को भगाने की मुहिम जैसे छेड़ दिया । दफतर में जातिवाद के कुछ पोषक भी रहीस का साथ अपरोक्ष रूप से देने लगे । उन्हे भी रामगुलाम की उपस्थिति खलने लगी ।
रामगुलाम ईमानदारी से नौकरी करने में लग गया । रहीस की साजिश को नजरअंदाज करते हुए । बडे अधिकारी ए.ए.साहब परोक्ष रूप से तो नही अपरोक्ष रूप सपोर्ट भी करने । अपने से उंचे अधिकारियों से भी रामगुलाम का तारीफ करने से नही चूकते थे । रामगुलाम था भी तारीफ लायक । जब तक काम पूरा नही होता था उसे छोड़ता नही था । बीमारी की हालत में काम करता था पूरी लगन के साथ । उड़ीसा के भाई चन्द्रमनि ने रामगुलाम कुछ कुछ सपोर्ट किया और आत्मबल भी बढाया । ए.ए.साहब के सपोर्ट को देखकर रामगुलाम को लगने लगा था कि इस कम्पनी में उसका भविष्य सुरक्षित है पर रहीस था कि मुट्ठी भर भर आग बोने से बाज नही आ रहा था ।
रहीस की करतूत को रामगुलाम नजरअंदाज कर देता पर वह हमेशा ही खार खाये रहता । दफतर के सभी लोग उसकी इस हरकत से परिचित हो गये थे । कुछ आग में घी भी डालने लगे थे ।
एक दिन यादो बाई आई जो दफतर के साफ सफाई के साथ लैट्रिन बाथरूम भी साफ करती थी । वह काम निपटा कर जाने लगी । इतने में रहीस चपरासी आया और बोला क्यो यादो बाई तुम कहां की हो ।
यादो बाई चिढते हुए बोली उत्तर प्रदेश के रायबरेली की हूं कब तक तुमको बताती रहूंगी । सात साल से मैं इस दफतर का काम कर रही हूं । तुम्हारा गंदा किया लैट्रिन बाथरूम धो रही हूं । बार बता चुकी हूं क्यों बार बार आजकल पूछते हो ।
रहीस अहम खान–क्यों बताने में तकलीफ हो रही है क्या ?
यादो बाई– और कुछ तुमको पूछना है ।

रहीस अहम खान- तुम यादों हो या नही पर मैं मान गया हूं कि तुम यादो हो और उ.प्र.की हो । ये तुम्हारे सामने कुर्सी पर बैठा रामगुलाम भी तो उ.प्र. का ही है । क्यो रामगुलाम? यादो बाई एक बात पूछनी है तुमसे कई दिनों से मन में थी आज पूछ ही लेता हूं । उत्तर दे तो दोगी ना ?
रहीस अहम खान -तुम्हारे धर्म में सबसे छोटी कौन सी जाति होती है । जिसको छुने से भी आदमी अपवित्र हो जाता है ।
यादोबाई-आदमी के छुने से आदमी कैसे अपवित्र होगा ।
रहीस अहम खान-अच्छा तो तू भी छोटी ही जाति की है । खैर छोड़ सबसे छोटी जाति कौन सी होती है तुम्हारे धर्म में ।
यादोबाई-धोबी....
रहीस अहम खान-क्या यादोबाई इतना भी मालूम नही । अरे चमार सबसे छोटी जाति होती है।रामगुलाम की तरफ इशारा करके बोले जा रहा था । रहीस चपरासी की बात सुनकर रामगुलाम का खून तो खैल रहा था पर अभी नौकरी में महीना भी नही बिता था । अपमान का जहर पी कर चुप रहा ।
इतने में बडे साहब के कक्ष की कालबेल बजी रहीस चपरासी दौड़ा दौड़ा गया और उल्टे पांव बाहर आया और बोला अरे वो रामगुलाम साहब तुमको बुला रहे है । जा याद रखना मेरी शिकायत ना करना वरना बहुतबुरा होगा ।
रामगुलाम-ए.ए. साहब के सामने हाजिर हुआ ।
ए.ए. साहब-पत्र टाइप हो गये ।
रामगुलाम-येस सर ।ये है सातो पत्र कहते हुए साहब के सामने रख दिया ।
ए.ए.साहब-वेरी गुड। एक्सीलेण्ट जाब....
इतने में चन्दमनिजी आ गये ।साहब ने उनहे बैठने का इशारा किया । साहब ने सभी पत्र चन्द्रमनिजी के सामने रख दिये और बोले देखो चन्द्रमनि कितना हार्ड वर्कर है रामगुलाम । ऐसा ही रहा तो बहुत आगे जायेगा । अच्छा पढा लिखा भी है ।
चन्द्रमनिजी- जी सर । काम करना तो कोई रामगुलाम से सीखे । सर कुछ लोग रामगुलाम की खिलाफत कर रहे है । तरह तरह के सवाल कर रहे है।
ए.ए.साहब- वे लोग सच्चे इंसान नही है । जातिवाद तो देश की सबसे घातक बीमारी है । अफसोस है कुछ पढे लिखे और ऊंचे ओहदे पर रहकर भी जातिवाद को बढावा दे रहे है । चन्द्रमनिबाबू मैं जान गया हूं सब कुछ । रामगुलाम के धैर्य को भी पहचान गया हूं देखना जो लोग खिलाफत कर रहे है एक गिड़गिडायेगे रामगुलाम के सामने ।
चन्द्रमनि-रामगुलाम कितना अच्छा काम कर रहा है । कोई मीनमेख इसके काम में निकालने लायक नही होती । इसके बाद भी चपरासी रहीस विनोदबाबू और कुछ लोग उत्पीड़ित कर रहे है जाति बिरादरी के नाम पर । विनोदबाबू तो कई बार तो बिना काम के दस्तावेज रामगुलाम को टाइप करने को दे देते है । बेचारा नया आदमी है इतना परेशान क्यों किया जा रहा है । ऐसा भी नही है कि कुछ पैसे ज्यादा दिये जा रहे हो । सबसे कम तनयवाह पाने वाला रामगुलाम ही है । काम सबसे ज्यादा करता है पढाई लिखाई में बीस ही बैठेगा । गंवारो की तो बात छोड़ो यहां तो पढे लिखे लोग शोषण कर रहे है । अन्याय हो रहा है साहब रामगुलाम के साथ ।रामगुलाम चुपचाप सुनता रहा ।
ए.ए.साहब-चन्द्रमनिबाबू हाथी चलता है तो कुत्ते बहुत भौकते है जब वह पीछे मुड़ता है तो सब अपनी अपनी मांद की ओर भागते है ।रामगुलाम तुम ऐसा नही करना अभी क्योकि तुमको बहुत दूर तक जाना है ।

रामगुलाम–समझ गया सर ।
चन्द्रमनि–सर आजकल लोग आदमी की पहचान करने में भी मतलब तलाशते है । भले ही आदमी कितना ही ईमानदार,वफादार,हार्डवर्कर क्यों न रहे यदि वह चापलूस नही है तो सबसे निकम्मा है । सर आप जैसे लोग बिरले ही होते है जो आदमी की प्रतिभा को तराशते है ।
ए.ए.साहब–चन्द्रमनिबाबू काम प्यारा होना चाहिये । हम सभी संस्था के लिये काम करते है । ईमानदारी से संस्थाहित में काम करना चाहिये । इसी में समाज और देश की भलाई भी है । जाति धर्म के झगड़े में पड़कर आदमी अपना अहित तो करता ही है, देश समाज का भी कर बैठता है । दुनिया में बद्नामी भी होती है । आदमी को आदमियत के प्रति अपना फर्ज नही भूलना चाहिये ।आदमी आज है कल नही है । ईमानदारी से किया गया काम ही तो याद रहता है । देखो रामगुलाम जिस लगन से तुम काम कर रहे हो करते रहो जरूर एक दिन अपने मकसद को हासिल कर लोगो ।
चन्द्रमनि–हां रामगुलाम बाधाओ से नही घबराना । बोने दो जी विष बो रहे है । एक दिन यही विष उनके सांसों में घुलेगी । लगन से काम करो । भगवान तुम्हारी मदद करेगा ।
रामगुलाम–मै अपने फर्ज को नही भूलूंगा । पूरी निष्ठा और ईमानदारी से काम करता रहूंगा आप लोगों के मार्गदर्शन में ।
ए.ए.साहब–ऐसे ही लगे रहो तरक्की तक तुमको नही जाना होगा । देखना एक दिन तरक्की तुम्हारे पास चलकर आयेगी ।
चन्द्रमणि–साहब अपने तजुरबे के आधार पर कह रहे है रामगुलाम ।
रामगुलाम ईमानदारी से अपनी डयूटी करता पर आठवी फेल चपरासी रहीस साजिश रचने से बाज नही आता । अपनी साजिश में चपरासी,रहीस विनोदबाबू जैसे और जातिवाद को बढावा देने वालो को शामिल करता और रामगुलाम को परेशान करता ताकि वह नौकरी छोड़कर भाग जाये । रामगुलाम रहीस के षणयन्त्र को समझ गया था । इन इंसानियत के दुश्मनों से बचकर रहता लेकिन ये दुश्मन कहा मानने वाले विष तो बोते ही रहते थे । कुछ साल के बाद ए.ए.साहब का स्थानान्तरण हो गया ।धीरे धीरे दशक बित गया पर रहीस का जहर उगलना कम नही हुआ । अब रामगुलाम को ईश्वर का ही भरोसा था । इसी बीच चपरासी रहीस ने अपना स्थानान्तरण बनारस करवा लिया । बनारस में चपरासी रहीस की अपनी औकात का पता चल गया । दिल्ली में बैठे बड़े अधिकारी के सर्पोट से वह रामगुलाम के खिलाफ आग उगलता रहता था । उन्ही अधिकारी के सहयोग से बनारस ट्रान्सफर करवाया था और छः महीने में फिर वापस भी आ गया और पहले से अधिक रामगुलाम का विरोध करने लगा । चाय पानी तक देना बन्द कर दिया बोलता कब तक अछूत को चाय पानी पीलाउंगा । इसके लिये रामगुलाम को लड़ाई भी लड़ना खैर जीता रामगुलाम ही । बहुत बड़े सामन्तवादी अधिकारी का सिर पर हाथ होने की वजह से रहीस चपरासी जातिवाद का कट्टर समर्थक थ ाऔर बनारस से वापस आने के बाद तो बबर शेर हो गया था । वह रामगुलाम के खिलाफ कुछ और अधिकारियों को मिलाकर दुश्प्रचार करना लगा कि रामगुलाम चमार है अपनी जाति का सहारा लेकर हम उच्च धर्म और जाति वालो की खिलाफत करता है । षणयन्त्र के तहत् यह झूठी शिकायत उपर तक पहुंच गयी । बड़े सामन्तवादी अधिकारी ने काले पानी की सजा दे दी ।
रामगुलाम के सिर ऐसा इल्जाम पर मढना शुरू हुआ कि फिर यह सिलसिला कभी न ही रूका और उसकी सारी योग्यतायें धरी की धरी रह गयी। सम्भवतः इसीलिये कि एक बड़ी कम्पनी के दफतर में वह तथाकथित इकलौता छोटी जाति का था । इतने भयावह विरोध के बाद भी रामगुलाम अपने कर्म और फर्ज को ईमानदारी के साथ समर्पित रहा । वह ऐस भयावह विरोध के तूफान में फंसा रहकर

भी बड़ी–बड़ी शैक्षणिक डिग्रियां भी हासिल कर लिया परन्तु रामगुलाम का आवेदन जातिवाद के पोषकों ने आगे नही बढने दिया । उल्टे ऐसे ऐस हादशे निर्मित किये गये की रामगुलाम नौकरी तक छोड़ दे लेकिन रामगुलाम बूढे मां बाप के आंखों के आसू और परिवार के भविष्य के लिये शोषण उत्पीड़न का जहर पीता रहा । इस जहर ने तो उसे तो उसे तरक्की नही दी पर डायबिटीज जैसी बीमारी जरूर दे दी । रामगुलाम जब बहुत दुखी होता तो भगवान के आगे शिकायत भरे लहजे में कहता भगवान दूसरों की तकदीरे कैद करने वालों को सदबुध्दि दो । दूसरा उपाय भी तो नही बस इनसे छूट्कारा पाने का तरीका नौकरी छोड़ना ही था । ऐसा रामगुलाम कर भी नही सकता था क्योकि उसे बूढे मां के आंसू पोछने थे और परिवार को भी तो शिक्षित करना था । इसलिये वह शोषण अत्याचार सह रहा था तपस्या मानकर । वह अपने मन की भड़ास भगवान के सामने निकाल लेता कभी कभी–क्योकि विषमतावादी समाज में कमजोर का तो कोई सुनने वाला नही होता । सब कमजोर के जीवन में मुट्ठी भर–भर आग भरने का ही तो भरसक प्रयास करते है ताकि वे दबे–कुचले रहे सिर उठाकर चलना ना सीख सके और बने रहे गुलाम ।
रामगुलाम का अपने फर्ज के प्रति समर्पण वक्त के कैनवास पर चिन्ह छोड़ने शुरू कर दिये जिससे उसकी उजली पहचान तो उभरने लगी पर उसके दिल के जख्म ताजे कर देते भेदभाव के शोले उगलने वाले । एक नौकरी में तो रामगुलाम को तरक्की नही मिली पर वह समाज सेवा के क्षेत्र में एक मुकाम हासिल कर लिये ।सामाजिक बुराईयों से निपटने के विचार उसके मन में चलते रहते । रामगुलाम सुर्ख आखों और माथे पर चिन्ता की मोटी मोटी लकीरे लिये उधेड–बुन में उलझा हुआ था इसी बीच सत्यनारायण बाबू आ गये । उसकी दशा देखकर बोले क्यों रामगुलाम खुद को मिटा दोगे क्या ?
रामगुलाम–हां बाबू मानवीय समानता के लिये ।
सत्यनारायण–क्या ?
रामगुलाम–हां बाबू मानवीय भेद के आसू कब तक बेमौत मारते रहेगे ? जातीय भेदभाव और रहीस जैसे चपरासी का जुल्म कब तक ढोना होगा । बाबू ऐसे जुर्मो ने ही तो दबे कुचलो के अस्तित्व को रौंद रखा है । शदियों से शोषितों को सम्मान और भरपूर तरक्की का मौका चाहिये की नही ।
सत्यनारायण–क्यों नही ?तुम जैसे निरापद लोग कब तक जुल्म सहते रहेगे । जातीय भेद भाव खत्म होना चाहिये । कब तक यह दैत्य सामाजिक आर्थिक रूप से वंचितों की हक छिन कर कब तक खून के आंसू रूलाता रहेगा । कब तक रामगुलाम तुम जैसी प्रतिभाओं का दमन करता रहेगा । अब तो भेदभाव देश के लिये नासूर बन गया है। इसके इलाज में ही देश और समाज की तन्दुरूस्ती है ।
रामगुलाम–सत्यनाराणबाबू विषमतावादी समाज में पैदा हुआ जातिवाद के पोषक स्वधर्मी ही नही गैरधर्मी रहीस जैसे चपरासी तक का जख्म पाया हूं। सत्यनारायण बाबू यह जख्म तो इस जीवन में नही भर सकता पर सकून जरूर मिल सकता है ।
सत्यनाराण–वह कैसे ?
रामगुलााम–समतावादी समाज की गोद में मरकर ।
सत्यनाराण– क्या दे यह पायेगा करोड़ो शोषितों वंचितों को बिखण्डित समाज ..... ?

नेकी बना अभिशाप

अतिपिछड़े छोटे से गांव में दरद्रिता के दलदल में धंसा माधव रहता था । वह अपने भाई भतीजों को खुशहाल बनाने के लिये गांव के जमीदार कंसबाबू का बंधुआ मजदूर बन गया था । माधव का

त्याग सफल हो गया,उसका बड़ा भाई केशव कलकते में नौकरी करने लगा । सबसे बड़ा भाई राघव केशव की ससुराल में वारिस न होने की वजह से चारो भाईयों के नाम रजिस्ट्री हुई पांच बीघा जमीन पर खेती करने लगा था। माधव का सबसे छोटा भाई उधम तो बचपन से कुछ अंवारा किस्म का था वह भी गांव से शहर जा बसा । माधव अपने और परिवार के स्वर्णिम कल के सपने खुली आंखों से देखने लगा । कुछ बरस में ही केशव और उसकी घरवाली कजरी की नियति में खोट आ गयी । कजरी पांच बीघे खेत से उपजे कुण्टलों अनाज से एक दाना और केशव की कमाई से पैसा भी न देने की कसम खा ली । अब क्या माधव पर वज्रपात हो गया । राघव अपने सगे भाई केशव का मजदूर होकर रह गया । केशव और उसकी पत्नी कजरी पर लोभ का भूत सवार हो गया जबकि औलाद के नाम पर बस एक कन्या थी । केशव वही भाई था जिसके गुणगान करते राघव और माधव नही थकते थे । राघव ने तो केशव के गुणगान में बना डाला था । जहां चार छः लोग इक्ट्ठा हुये कि राघव गाने लगता था ।

भइया हो तो बस अनपे केशव जैसा
अपना केशव तो चांद जैसा ।
ना आये आंच कभी रिश्ते पर अपने
बना रहे प्यार सदा सच होवे सपने ।
भईया का प्यार करे खुशहाल
केशव की खुशी पर परिवार निहाल ।
भईया केशव भय्यपन का सरताज,
स्वार्थ के युग में ऐसा भाई कहां मिले आज ।

राघव और माधव का गुमान केशव की दगाबाजी के सामने नही टिक सका । केशव और उसका दमाद प्रभु जो कचहरी में मुलाजिम था साजिश रचकर सत्रह साल पुरानी रजिस्ट्री नोट के बण्डल परोस कर रद्द करवा लिया । चुपके चुपके केशव सारी जमीन अपनी इकलौती बेटी के नाम करवा लिया । किसी को भनक तक न लगने दी । कई बरसों के बाद राघव को दाल में कुछ काला लगा वह छानबिन करने लगा । इसकी भनक प्रभु को लगी वह साजिश से परदा हटता देखकर राघव को रास्ते से हटा दिया और इल्जाम राघव के माथे मढ दिया गया आत्महत्या का ।

राघव की घरवाली बहुत बरस पहले उससे नाता तोड़कर मायके जा बसी थी नवजात शिशु उजाला को माधव की चौखट पर फेंक कर। । माधव की नवविवाहिता घरवाली धनरी ने भेड़ बकरी और खुद तक की छाती चटाकर उजाला को पाल पोष ली । राघव के मरते ही बंधुवा मजदूर माधव की जैसे भुजायें कट गयी । वह बेसहारा हो गया । मुश्किलों के समय में कोई सहारा देने वाला न रहा । पैतृक घर पर परिवार वालों का कब्जा हो गया । माधव और उसके बच्चों को सिर छिपाने की जगह न बची। जमींदार का हाथपांव जोड़कर वह बस्ती से कुछ दूर गांव समाज की जमीन पर मड़ई डालकर बसर करने लगा ।

गरीबी के दलदल में फंसे माधव को उबरने का कोई रास्ता दूर दूर तक नजर नही आ रहा था । बेचारे माधव के पास तंगी, भूमिहीनता, रोजी रोटी का कोई पुख्ता इन्तजाम नही । दिन भर जमीदार के खेत और चौखट पर हाड़फोड़ने की दो सेर मजदूरी इसके बाद भी माधव ने हार नही माना । उजाला को अपने बड़ा बेटा माना उसे पढाने लिखाने में जुट गया जबकि वह खुद लाख दुख भोग रहा था । माधव के त्याग से उजाला आठवीं जमात का इम्तहान भी पास कर लिया । माधव उसे आगे पढाना चाहता था पर ना जाने क्यूं उजाला माधव और उसके परिवार को सांप की तरह फुफकारता रहता था । धनरी इतनी सन्तोषी औरत थी कि उजाला की हर गलती माफ कर देती कहती बेटा पढाई पर ध्यान दो आगे बढो । अपने बच्चों की तरफ इशारा करते कहती अपने भाई

बहनो को तुम्हे हा आगे ले जानस है । बेटा हम तो अपनी औकात के अनुसार तुमको कोई तकलीफ नही पड़ने दे रहे है । अगर कोई दुख तकलीफ पड़ रहा है तो बेटा इसमें हमारी कोई गलती नही है । तुम तो अपने काका की कमाई देख ही रहे हो । हमारा सपना है कि तुम पढ लिखकर साहेब बनो । बेटा हम गरीब का मान रख लेना । उजाला माधव और धनरी के त्याग को कभी भी नही माना । वह बस्ती वालो से कहता मेरी मां छः दिन का छोड़कर भाग गयी तो काका काकी को मुझे नही पालना था फेक देना था । कुत्ते बिल्ली खा गये होते । धनरी के कान तक ये बाते पहुंचती को तो वह घण्टो रोती पर माधव से कुछ ना कहती । माधव तो भोर में जमीदार की चौखट पर हाजिरी लगाकर काम में लग जाता । पूरी बस्ती सो जाती तब वापस आ पाता । आठवीं का रिजल्ट आया ही नही उसके पहले उजाला शहर भाग गया । शहर में एक कम्पनी में नौकरी करने लगा और बाकी समय में डाई–मेकिंग का काम सीखने लगा। कुछ महीनों में उजाला एक कामयाब मिस्त्री बन गया । अच्छा पैसा कमाने लगा । बड़ा मिस्त्री बन गया ।उसकी कामयाबी के चर्चे पूरे शहर में होने लगे थे । उजाला अपनी कामयाबी की खबर से माधव को कोसो दूर रखा । माधव को जब कभी चिट्ठी उजाला लिखता तो बस यही लिखता कि कामधाम नही चल रहा है मैं बीमार हूं । उजाला के बीमारी की खबर सुनकर माधव और धनरी रो उठते । बड़ी मुश्किल से अर्न्तदेशीय खरीदते उजाला को चिट्ठी लिखवाते बेटा कुछ दिन के लिये घर आ हवा पानी बदल जायेगा तो तुम्हारी सेहद सुधर जायेगी । उजाला के दिल में तो विश्वासघात था उसे गिरगिट की तरह रंग बदलने भलिभांति आता था । मां बाप की हैसियत से माधव और धनरी चिन्तित रहते । शहर गये उजाला को कई बरस बित गये पर वह कभी गरीब माधव की ओर नही देखा एकाध बार गांव गया भी तो आश्वासन के अलावा और कुछ नही दिया ।

उजाला के ससुराल वाले गौने देने के लिये माधव पर जोर देने लगे । माधव ने उजाला का ब्याह तीन चार साल की उम्र में ही कर दिया था । माधव उजाला के गौना की दिन तारीख पक्की कर चिट्ठी लिखवा दिया । गौना चार दिन पहले उजाला आ गया । इस बार काका काकी और छोटे भाई बहनों को कपड़े भी लाया और माधव के हाथ पर सौ रूपया भी रख दिया । माधव को तो जैसे दुनिया की दौलत मिल गयी । वह इस खुशी के आगे गौने के खान खर्च के लिये जमीदार से उधार को एकदम से भूल गया । क्यो न भूलता उजाला ने जो कहा था काका तुम चिन्ता ना करो सब दुख दूर हो जायेगा । भतीजे के इस शब्द ने तो और अधिक दुख सहने की शक्ति जैसे दे दी । माधव बोला बेटा तुम खुश रह यही हमारी सबसे बड़ी दौलत है । तुमको देखकर खुश रह लूंगा ।

बड़ी हंसी खुशी उजाला का गौना आया । गौना कराकर महीने भर बाद उजाला शहर चला गया । दो महीने के बाद ससुराल से सीधे अपनी पत्नी उर्मिला को अपने ससुर को खत लिखकर शहर बुलवा लिया । उर्मिला के शहर पहुंचते ही बचाखुंचा नाता भी उजाला ने माधव से खत्म कर उसकी नेकी पर मुट्ठी भर आग डाल दिया ।

कई साल पहले राघव मर गया या या मार दिया गया । राघव के जीते जी उजाला ने उसे कभी बाप का दर्जा नही दिया । उसके जीवन और मौत से उजाला को कोई फर्क नही पड़ा यदि किसी को फर्क पड़ा तो माधव को । राघव की मौत को प्रभू केशव और केशव के समधी दुधई ने सदा के लिये अबुझ पहेली बना दिया पर लोग दबी जुबान हत्यारा इन्ही तीनों को कहते । उजाला के मुंहमोड़ लेने से माधव एकदम अकेला होकर रह गया । बेचारा कभी काल कम से कम चिट्ठी लिखवा कर अपनी पीड़ा पर मरहम तो लगा लेता था । वह भी सहारा खत्म हो गया ।

उजाला का गौना आये कई साल बित गये । वह एक लड़की दो लड़के का बाप बन गया । लड़की ब्याह लायक हो गयी । पन्द्रह साल के बाद फिर उजाला की चिट्ठी आयी पुरानी चिट्ठी की तरह ही

रोना काका मैं बीमार हूं । परिवार को शहर में रखना बहुत महंगा पड़ रहा है । काका मुझे रहने का ठिकाना दे देतो मैं बच्चों को गांव में छोड़ देता । अब क्या हर महीने उजाला की चिट्ठी आने लगी । उजाला की चिट्ठी पढवाकर माधव और धनरी रो उठते । एक दिन अचानक उजाला परिवार सहित आ धमका ।

धनरी उजाला के बच्चों को छाती से लगाकर बिलख बिलख रोने लगी ।

उजाला–काकी ना रो। ये बच्चे तेरे पास ही रहेगे । काकी मेरा खोया हक दे देना बस ।

सीधी साधी धनरी बोली – हां बेटा । दाना पानी कर बहुत थक गया होगा । तेरे काका तो जमींदार की बीटिया के ब्याह में लगे है । दिन रात गांव गांव से खटिया ढो–ढोकर ला रहे है । मैं भी वही गोबर डालकर आ रही हूं । सुबह से लटके लटके कमर टूट गयी । जमींदार के बेटी का ब्याह है दिन रात एक हमारी हो रही है । अपनी बीटिया के ब्याह में हम इतना परेशान नही हुए थे ।

उजाला–काकी मेरी भी बीटिया ब्याह करने लायक हो गयी है । काकी तुमको हवेली जाना है तो चली जा उर्मिला रोटी बना लेगी ।उजाला परिवार सहित गांव आया है कि खबर माधव को लगी वह भी दौड़ता हांफता आया ।

उजाला– माधव का पांव छूते हुए बोला काका अपने चरणों में जगह दे दो ।

माधव–क्या कह रहे हो उजाला । शहर की कोठी छोड़कर यहां रहोगे । मेरे चरणों में भला तुम्हारे जैसा बड़ा सेठ कैसे रहेगा । बेटा जब तक रहना हो रह ले । जो रूखा सूखा मुझ गरीब की झोपड़ी में बनेगा खा लेना । पोता पोती को कुछ दिन खेलाने का सुख भोग लूंगा ।अभी तक तो गरीबी और अपने ने बहुत रूलाया है । कुछ दिन बच्चों के साथ हंस खेल लूंगा किसी बड़े सूख से कम नही होग हमारे लिय ।

उजाला–काका मैं अब तुमको दुख नही दूंगा । खूब बच्चों को खिलाओ । बच्चों के रहने के लिये पिछवाडें की मड़ई दे दो । जब तक हम रहेगे बना खा लेगे । हां खान खर्च का भार तुम्हारे उपर नही डालूंगा ।

माधव–क्या..... ?

उजाला– हां काका । अलग रहूंगा बस कुछ दिन रहने का ठिकाना दे दो ।

माधव–द्वारिका की मां सुन रही हो । कितनी आसानी से दिल पर आरा चला दिया है इस उजाला ने । बीस साल के बाद भी नही बदला उजाला । सांप की तरह अभी भी फुफकारता है ।

धनरी–ठीक है । पढा लिखा है समझदार है । कुछ सोच समझकर ही कहा होगा । हम तो ठहरे गंवार । क्या समझे शहर की भाषा ? ठीक है बेटा रह ले जब तक चाहे । द्वारिका,हरिद्वार, गंगा,जमुना,गोमती और सरस्वती बीटिया की तरह तुमने भी तो मेरी छाती चाटकर पले बढे हो। हां तब इन बच्चों का जन्म नही हुआ था । अपनो पर विश्वास नही करेगे तो जमाने में फिर किस पर विश्वास करेगे , जेठ देवर, खानदान तक के लोगों ने धोखा दिया है । बेटा अब और दिल ना दुखाना ।

उजाला– काकी क्या कह रही हो ?

माधव–बेटा एक मां के आंसू का मोल रखना । मां की ममता पर मुट्ठी भर आग मत डालना । कोई एतराज नही है । अलग रहो या एक में । पोते पोती को भर आंख देखकर स्वर्ग का सुख मिल गया ।

उजाला–काका कोई दगाबाजी नही करूंगा ।

माधव काम पर चला गया । धनरी दाना पानी का इन्तजाम झटपट कर पिछवाड़े की मड़ईनुमा कच्चे घर को लीपपोत कर साफ सुथरी कर दी । उजाला का परिवार मड़ईनुमा कच्चे घर में रहने लगा । हफते भर में उजाला शहर गया फिर आ गया । दो बीघा जमीन लिखवा कर और मड़ईनुमा कच्चे

घर की जगह पर पक्का मकान बनवाने की शुरूवात कर शहर चला गया । माधव ने खुशी खुशी मड़ई की जमीन दे दिया। माधव उजाला के षणयन्त्र को तनिक नही समझ सका । चार महीने में पक्का मकान बन गया । अपने झोपड़ीनुमा घर के पास भतीजे के पक्के मकान को देखकर माधव बहुत खुश था । साल भर के अन्दर उजाला की बीटियाका ब्याह तय हो गया । बीटिया के ब्याह में माधव ने भी जी जान लगा दिया । खानदान की नाक का सवाल जो था । ब्याह बिताकर उजाला शहर चला गया । कुछ महीने के बाद फिर सुबह सुबह शहर से आ गया । रात में माधव जमीदार के काम से आया । माधव के आने की खबर लगते ही वह माधव से मिलने गया । माधव का पांव छुआ ।

माधव – उजाला को जी भर कर आशीश दिया और बोला बेटा बहुत ठण्डी है ओलाव सेको । द्वारिका शाम को ही जला देता है । मड़ई गरमा जाती है सब पुआल में दुबक कर सो जाते है।

उजाला– हां काका ठण्ड तो है । काका मैं तुम से आज्ञा लेने आया था ।

माधव–कैसी आज्ञा बेटवा ।

उजाला– काका तुमने मुझे मड़ई की जगह देकर मेरे उपर बड़ा उपकार किया है ।

माधव–बेटा उजाला उपकार कैसा । मैंने तुमको तब अपनी छाती से लगाया था जब तू सिर्फ छः दिन का था । तेरी मां तुमको भइया को और घरबार छोड़कर मायके जा बसी थी । मैं और तेरी काकी रात रात भर जागे है । पास में रहेगा तो हमें भी बहुत खुशी होगी । इसलिये द्वारिका और हरिद्वार का हक मारकर तुमको घर बनाने की जगह दे दिया । बेटा तू सूखी रह । तेरी सूरत में मुझे राघव भइया नजर आते है । मेरे विश्वास को बनाये रखना ।

धनरी–द्वारिका के बापू रोटी ओलाव के पास बैठकर खा लो ।

माधव–आज कोई नयी बात है । रोज तो ओलाव तापते तापते खाकर यही पुआल में सो जाता हूं ।

उजाला–काका रजाई क्यो नही बनवा लेते । आठ प्राणी हो कम से कम चार रजाई तो होनी चाहिये ।

माधव– सोचता तो हर साल हूं पर बन नही पाती है । जब द्वारिका कुछ कमाने धमाने लगेगा तो रजाई भी बनेगी गद्दा और तकिया भी ।

उजाला–जरूर द्वारिका कमायेगा काका । काका ये लो ।

माधव–क्या है ।

उजाला–काका मिरचहिया गांजा है ।

माधव–जरा सन्तू को आवाज दे दो ।

धनरी– दो चिलम पहले ही पी चुके हो । अब मिरचहिया पीओगे तो सुबह उठ नही पाओगे । जमीदार दरवाजे पर आकर उलटा सुलटा बोलने लगेगे । कल पी लेना मिरचहिया अभी तो रोटी खाओ और सो जाओ । दिन भर हाड़फोड़ें हो अराम करो ।

माधव–ठीक है लाओ ।

धनरी–लिट्टी और गुड़ है थाली में । थाली के बाहर हाथ नही करना । नही तो ओलाव की आग मुट्ठी में आ जायेगी ।

माधव–हां भागवान मुझे भी मालूम है । इतना नशा अभी नही चढा है। उजाला खायेगा गुड़ रोटी । लो तनिक खा लो ।

उजाला–तुम खाओ । मै खा चुका हूं । उर्मिला मुर्गा बनायी थी,दरपन का दोस्त आया था । उसके साथ मैने खा लिया है । काका एक बात करने आया था तुमसे कहो तो कहूं।

माधव–कौन सी बात है बोल,रोटी खाते समय दांत काम करेगे कान थोड़े ही ।

उजाला–मेरे पक्के मकान के सामने वाली जमीन दे दो ।

इतना सुनते ही माधव के गले में रोटी अटक गयी । वह गिलास भर पानी के सहारे रोटी का निवाला पेट में ढकेलते हुए बोला क्या ?
उजाला–हां काका । मड़ई वाली जगह तो मुझे चाहिये ।
माधव– मुझे लोग पहले आगाह कर रहे थे कि माधव भतीजे पर विश्वास न करो । भतीजा और भेड़ा पर विश्वास करने वाला जरूर मुंह के बल गिरता है । काश मैं पहले सोच लिया होता । मड़ई की जगह देकर गलती कर दिया क्या ? तू मेरे बच्चों का ठिकाना छिनना चाहता है अंगुली पकड़ कर तु मेरा हाथ उखाड़ना चाहता है क्या ?
उजाला–नहीं मैं तो कह रहा हूं कि मेरे घर के सामने से मड़ई अच्छी नही लग रही है । हटा लो बस ।
माधव–मड़ई लेकर जाऊंगा कहां ।
उजाला–किनारे हो जाओ । अभी पश्चिम की तरफ तो जमीन है ।
माधव–दो खटिया की जगह में मेरे दो बेटे कैसे रहेगे । उजाला अब मैं तेरी चाल समझ गया ।
उजाला–काका मैं जो चाह रहा हूं वही होगा ।
माधव–क्या हमे बेघर कर देगा ?
उजाला–घर में रहो या बेघर हो जाओ । मेरे घर के सामने वाली जमीन तो मेरी होकर रहेगी अब ।
माधव–धमकी दे रही है ।
उजाला–धमकी तो नही अपनी राह का कांटा हटाने को जरूर कह रहा हूं ।
माधव–हम तुम्हारी राह के कांटे हो गये है। भूल गये वो दिन जब तुमको सुखे में सुलाते थे। गीले में बारी बारी से हम और तुम्हारी काकी तुमको लेकर सोते थे । कितनी बार तुम मेरी जांघ पर टट्टी कर दिया करते थे । सब व्यर्थ हो गया किया कराया । बेटा नेकी को बदनाम ना कर।
उजाला–काका जमीन तो लेकर रहूंगा । चलता हूं । तुम रोटी खाओ और सो जाओ ।
माधव– क्या मेरी नेकी मेरे लिये अभिशाप बन गयी है।
उजाला–नेकी क्यों किया ? हमने कहा था क्या कि मुझे पालो ? अरे मेरी मां छोड़कर भाग गयी थी तो तुमको पालने की क्या जरूरत थी ? फेंक देते कुत्ते बिल्लियों के आगे मेरे मां बाप की तरह । झगड़े वाली जमीन को लेकर फैसला कल दे देना ।
उजाला धनरी और माधव का चैन छिन कर चला गया । धनरी और माधव रात भर ओलाव के पास बैठे चिन्ता की चिता में सुलगते रहे । एक दूसरे का मुंह ताकते रहे बेबस सा । मुर्गा बोलना शुरू किये । माधवा कुल्ला–फराकत करने चला गया । नित–कर्म से निपट कर आया । भैंस की हौदी धोया । पानी चारा डाला । भैंस को हौदी लगा कर जमींदार की मजदूरी पर चला । धनरी भी अपने काम में लग गयी । उधर उजाला भी रात भर जमीन हड़पने की उधेड़–बुन में नही सो पाया था । वह सूरज निकलते ही दरवाजे पर हाजिर हो गया काका... काका... की आवाज लगाने लगा ।
धनरी–वो तो काम पर चले गये क्यो बुला रहे हो ?
उजाला–क्या फैसला किया काका ने ?
धनरी–कैसा फैसला । अरे अपने बच्चों को ठिकाना तुमको कैसे सौप देगे । हमारा जो फर्ज था । जिम्मेदारी के साथ निभाया । अब बेघर तो नही हो सकते ना ।
उजाला–घर –बेघर से मुझे क्या लेना । मुझे तो बस अपनी हवेली के सामने से मड़ई हटवाना है ।
धनरी–क्या ?
उजाला–हां ।
धनरी–तुम्हारी हवेली की नींव हमारी छाती पर पड़ी है ।

उजाला– हवेली है तो हमारी ना । देखता हूं कब तक काका आंख मिचौली खेलते है । आंख मिचौली का जबाब मेरे पास है ।
धनरी– क्या करोगे। थाना पुलिस लाओगे । रूपया और ताकत के भरोसे हमे बेघर कर दोगे ।
उजाला– उजाला नाम मेरा तुमने ना जाने क्या सोच कर रखा है पर मैं सांप का बच्चा हूं मेरी मां नागिन थी। जानती हो दूध पीलाने वाले को भी सांप डंसने से परहेज नही करता । आज और काका के फैसले का इन्तजार कर लेता हूं । आये तो कह देना बस ....
धनरी–क्यों दूध के बदले जहर देने पर तूले हो । अरे तुम्हारी मां ने तुमको फेंक दिया तो क्या हमने तुमको अपनी छाती से नही लगाया ? मेरे दूध का यही कर्ज चुका रहे हो । अरे तुम्हारे पास तो पद और दौलत दोनों है तुम चाहते तो और भी कहीं जगह लेकर महल खड़ी कर सकते थे । तुम्हारी नजर हमारी मड़ई पर ही क्यो टिकी है ? मेरी माटी की दीवाल अब तुम्हे भा नही आ रही है । तुम मेरे माटी की दीवाल ढहाकर पक्की हवेली की शान में हीरे जोड़ना चाहते हो । मै ऐसा नही होने दूंगी । दक्षिण तरफ लकडी के सहारे खड़ी मड़ई को माटी के दीवाल खड़ी करने के उपक्रम में बच्चों के साथ लग गयी। उजाला–काकी तू कितनों भी माटी की दीवल खड़ी कर ले ये जमीन मेरी होकर रहेगी । मेरा भी हक बनता है । चार हिस्सेदारों की जमीन तुम अकेले ले लोगी क्या ? देखता हूं तुम्हारी मड़ई कैसे खड़ी रहती है मेरे पक्के मकान के सामने ।
धनरी–तुम मेरी मड़ई गिरा दोगे क्या? मैं भी देखती हूं कैसे जर्बदस्ती कब्जा कर लेते हो । कब्जा करने के लिये तुम्हे हमारी लाश पर से जाना होगा ।
काकी ऐसी बात है तो वह भी कर सकता हूं कहकर उजाला केशव के दमाद प्रभु से मिला जो उसके बाप का कातिल था । उसी के साथ साठगांठ किया माधव की जमीन हड़पने के लिये । कुछ बदमाशों को दारू मुर्गा देकर माधव और उसके परिवार को डराने धमकाने के लिये लगा दिया । प्रभु को इसी दिन का जैसे इन्तजार था । उजाला को अपने जाल में फंसता देखकर चारा डाल दिया । वह तो कचहरी में काम करता ही था इधर उधर करके हफते भर स्टे आर्डर जारी करवा दिया । उजाला चारो ओर से दबाव तो बनाये हुए था । माधव और उसका परिवार डरा सहमा रहने लगा था । कोई उसकी मदद के लिये आगे नही आ रहा था । माधव गांव के मुखिया प्रधान सबके आगे माथा पटका पर कहीं सुनवाई नही हुई । आखिरकार एक दिन सुबह सुबह ही पूरा थाना लेकर उजाला आ धमका। पुलिस वाले माधव माधव की आवाज देने लगे और उजाला के गुण्डा मड़ई गिराने में जुट गये। माधव घबराया आंखों में आसू लिये हाजिर हुआ दरोगाजी को सारा वृतान्त सुनाया । माधव के आसूं सच्चाई उगल गये ।
दरोगाजी बोले– क्यो नेकी को अभिशापित कर रहे हो उजाला ।
दरोगा जी की बात को सुनकर बस्ती के दो चार लोगों का जमीर जागा । वे माधव के पक्ष में दबी जुबान बोलने लगे ।
अब क्या घुरहू प्रधान भी आगे आ गये और बोले दरोगा जी अब अन्याय होगा इस गांव में । नेकी अभिशाप नही बनेगी । हमारी आंख खुल गयी है ।
दरोगाजी कोरा कागज मंगवाये। सुलहनामा तैयार हुआ । उजाला को बुलाये दरोगाजी ।
उजाला हाथ जोड़कर खड़ा हुआ । दरोगा जी ने कहां उजाला सबके सामने हकीकत आ चुकी है कि तुम कितना दगगाबाज है पर तुमको कुछ कहना हो तो कह सकते हो ।
उजाला– पंचों काका ने मुझे जो दिया है वह बहुत है ।काका काकी के एहसान तले इस जन्म क्या कई और जन्म भी नही उबर सकता हूं । मेरे मन में खोट आ गयी थी इसी वजह से गलती हो गयी । काका की जमीन पर अब मेरी बुरी नजर नहीं पड़ेगी । मैं बहुते शर्मिन्दा हूं । हो सके तो मुझे माफ कर देना ।

दरोगाजी–सुलहनामें पर दसख्त करो । गांव वालों से ही नही माफी माधव से मागों । माधव ने माफ कर दिया तो समझो भगवान ने माफ कर दिया । तुमने तो गरीब की नेकी पर मुट्ठी भर आग डाल ही दिया है । नेकी के बदले बद्नेकी तो महापाप है । माधव का पैर पकड़ कर माफी मांगो । खुद दरिद्रता के दलदल में धंसा रहकर भी तुमको उपर उठा दिया । तुमने नेकी को अभिशाप बना दिया । माधव तुम्हारे लिये भगवान से कम नही है उजाला ।
उजाला–माधव का पैर पकड़ लिया ।
माधव की आंखों से तर–तर आंसू बह निकले वह उजाला को झट से गले लगा लिया ।

गाल भर धुआं

जेठ बैसाख की लू से आम के नन्हे–नन्हें फल पेड़ पर अध जले से लटके हुए थे । उन्हे देखकर ऐसा लग रहा था कि उन्हे आग में जलाकर टांग दिये गये हो । दरवाजा खोलो तो मुंह झुलसा देने वाली लपटें । दीनू के बच्चे जमीन को पानी से तर कर बोरे के उपर बिस्तर लगाकर कोने वाले घर मे दुबके हुए थे । बुधिया पना बनाकर पीला रही थी । लू से बचने का देशी और कारगर इलाज जो था । लू ना जाने कितने गरीबो को लील चुकी थी। गांव में बिजली तो पहुंच चुकी थी पर गरीब मजदूरो की बस्ती से अभी भी दूर थी आजादी की तरह से दूर थी। नजदीक थी तो बस गरीबी भूखमरी,अशिक्षा,दरिद्रता और सामाजिक बुराई के कहर से उपजे रिसते जख्म का चुभता दर्द । ऐसे में आधुनिक सुख सुविधाये कूलर पंखे तो सपने मात्र थे । बुधिया बड़े बेटे महगुंवा के हाथ में पने का गिलास पकड़ायी ही थी कि दीनु ने बड़े जोर की आवाज दी जैसे घर के सबके सब बहरे हो गये हो। जल्दी दरवाजा नही खुला तो वह झल्लाकर बोला अरे भागवान दुल्हनिया की तरह घर में मेहदी लगाये घर में छिपी रहेगी या बाहर भी निकलेगी । हमें भी लू के थपेड़े लग रहे है । शाम होने को आ गयी पर सबके सब घर में ही घुसे है ।
तब तक महंगुआ अपनी मां बुधिया से बोला मां दादा को तलब लग रही है । चौखट पर पांव रखे नही देखो चिल्लाने लगे । मां घड़ी में अभी दो तो बजे है कह रहे है शाम हो गयी । ना जाने कब नशे की लत छूटेगी । चुपकर सुन लेगे तो आफत आ जायेगी । जीभ निकाल कर मारेगे । हां मां ठीक कह रही हो रात होने लगी है, जा दादा को चिलम चढाकर दो ।इससे भी पेट ना भर तो गांजा चिलम में भर देना । यही फरमान होगा ।
महंगुवा आधा दर्जन बच्चों में सबसे बड़ा था ।पांच साल की उम्र में हुए व्याह में मिली घड़ी को हाथ में बाधे रहता था । वह चलती फिरती घड़ी बन गया था । बुधिया की डांट फटकार से स्कूल जाने लगा था ।
बुधिया–बेटा तू ठीक कह रहा है। तलब में बड़बडा रहे है ।
महंगुवा–अरे मां दादा को हुक्का चिलम की जरूरत नही है । गांजा के गाल भर धुआं की दरकार है । गुड पानी छोड़ो ।
दीनु–अरे इतनी देर हो गयी बाहर निकलने में ।
बुधिया दरवाजा खोली । हड़बड़ायी हुई अन्दर गयी और गुड पानी लेकर आयी ।
गुड पानी देखकर दीनु का पारा सातवें आसमान पर वह बोला भागवान गुड पानी मांगा हूं क्या ?
बुधिया– नही जी मांगे तो नही । पी लो बहुत गरमी है । पना भी देती हूं एक गिलास वह भी पी लो बच्चों को पना ही पिला रही थी ।
दीनु–कहां गरमी है । कल से तो आज बहुत कम है ।

बुधिया–महंगुवा तो कह रहा हैं माई गला सूख रहा है । चक्कर सा लग रहा है । बहुत गरमी लग रही है । वह हांफ रहा है तुम कह रहे हो गरमी है ही नही । हां बेटा जो कहेगा वह सही है ना । मेरी बातों पर भला तुमको कब से विश्वास होने लगा ।
बुधिया–क्या कह रहे हो बिना विश्वास के आधा दर्जन बच्चे हो गये ।
दीनु–अरे हम तो ऐसा कुछ नही कह रहे है ना । हम तो यही कह रहे है कि बेटवा की बात के आगे अब हमारी कौन सुनेगा ।
बुधिया–हां बेटवा समझदार है । बस्ती के सभी बच्चों से पढने में तेज है । तुमने अपनी तरह उसे भी आंख खुली नही शादी के बंधन में बांध दिये ।
दीनु–अरे हमने कौन सी पढायी की है । हमारा घर नही चल रहा है क्या ? वैसे ही उसका भी चलेगा ।
बुधिया–ना बाबा ना । मेरा बेटा अफसर बनेगा । जमींदारों के खेत में बेटवा का जीवन नरक नही होने दूंगी । हमारी जैसी उसकी जिन्दगी ना हो भगवान । कौन सा सुख मिल रहा है । आदमी होकर भी आदमी के सुख से वंचित है । घर में खाने को नही । दाने दाने को मोहताज है । कपड़े लते को नस्तवान है । आधा दर्जन बच्चे उपर से गजेड़ी मरद ना बाबा ना भगवान ऐसा नसीब मेरे बच्चों का ना लिखना ।
दीनु– अच्छा बक–बक अब मत कर । मैं बुरा हो गया हूं तो छोड़ दे मेरी हालत पर ।
बुधिया– कैसी बहकी बहकी बातें कर रहे हो । बोलो क्या चाहिये तन से कपड़ा उतार दूं या गांजा के लिये पैसा । कहो तो दो किलो गेहूं है दे दूं । बेंचकर गाल भर धुआं उड़ा लेना ।
दीनु–अभी तो कुछ नही चाहिये ।
बुधिया–आओ कोने वाले घर में वही बच्चे लू से बचने का इन्तजाम किये हुए है । जो कुछ कहना है वही कह लेना । बच्चों को भी तो पता चले ।
दीनु–नहीं ।
बुधिया–अन्दर तो आओ की सब बात डयोढी पर ही कर लोगो ।
दीनु–आज बहुत प्यार दिखा रही हो ।
बुधिया–क्या पहले ना करती थी । जब पहली बार तुम्हारे घर में आयी थी ना पूरी बस्ती में मेरी खूबसूरती के चर्चे थे । ये मेरा हाल तुम्हारा बनाया हुआ है। मेरी खूबसूरती को तुम्हारी ही नजर लगी है।
दीनु–नाराज ना हो । तुम चलो मैं आता हूं ।
बुधिया–कहां जा रहे हो ।
दीनु– ठेके गया और आया । वहां रूकूंगा नहीं ।
बुधिया– देखो मत जाओ चमड़ी जला देने वाली लू है ।
बुधिया की बात कहां सुनने वाला था दीनु । वह कंधे पर लाठी रखा । गमछा मुंह पर लपेट कर चल पड़ा गांजे के ठेके की ओर । बुधिया चौखट पर खड़ी कभी खुद की किस्मत को तो कभी बच्चों के भविष्य पर भगवान को कोसती रही ।
इतने में महंगुवा आ गया मां को चिन्तित मुद्रा में देखकर बोला मां दादा तो गये जाने दो। उन्हे जीवन की नहीं गाल भर धुआं की चिन्ता है ।
बुधिया–हां बेटवा । भगवान ना जाने ऐसी तकदीर क्यों बना दी है कि जीवन भर आसूं पीती रहूं । पेट के लिये रोटी नही उन्हे गाल भर भर धुआं उड़ाने से फुर्सत नही हैं।
महंगुआ–मां अन्दर चलो घण्टा भर से लू में क्यो खड़ी हो । दादा तो अब आने में होगे ।

बुधिया–अरे इतनी जल्दी कहां आने वाले है । नटई तक चढायेंगे । भोले भण्डारी का परसाद कह कह कर खूब गाल भर धुआं उडायेगे तब ना आयेगे ।
महंगुआ–अरे मां वो देख दादा कैसे चमक रहे है आग सरीखे ।
बुधिया– बेटा जा कुयें से एक बाल्टी पानी ले आ । आते ही पियक्कड़ों को न्यौता देगे । इतना कहना था कि दीनु आ धमका । पसीना पोछते हुये बोला कही जाओ तो काली बिल्ली जैसे रास्ता काट देगी । जा तनिक गुड़ और ठण्डा पानी ला । महंगु बेटा तू घासी दादा को बुला ला ।
बुधिया–नही बेटवा नही जायेगा । तुम यही से आवाज मार दो सारे पियक्कड़ इक्ट्ठा हो जायेगे ।
दीनु–घासी भईया की आवाज दिया । इतने में घासी गमछा कंधे पर रखकर दीनु के घर की ओर दौड़ पडें । दरवाजे पर पहुंचते ही बोले भरी दोपहरी में चले गये थे क्या । कौन सी लाये हो भइया ।
दीनु–शाम होने का इन्तजार करता तो ये माल नही मिलता । ठेके पर बड़ी भीड़ लगी है ।
घासी–कौन सी लाये हो ।
दीनु–आजकल तो मिरचहिया का जमाना है । असली है या नकली पता तो पीने पर लगेगा कहते हुए दीनु महंगुवा को बुलाने लगा ।
बुधिया–महंगु भैसं लेकर गया । बोरसी में तुम्हारे पास आग रखी है । बैठकर गाल भर धुआं उड़ाओं । मुझे भी काम करना है ।
घासी–नरकुल की रस्सी नही है ।
दीनु–भइया खटिया में से तनिक सी काट लो ।
घासी जल्दी जल्दी रस्सी गोल मटोल कर आगे के हवाले कर दिया । दीनु गांजा में से बीज बिनने लगा । घासी दीनु आग और चिलम तो तैयार है ।
दीनु–माल भी तैयार है । लो चिलम भर गयी रख दो आग ।
घासी– लो भोग लगाओ दीनु ।
दीनु–भइया तुम्ही लगाओ ।
इतने में गांजा की महक नन्हूवा,करमुवा,छनुवा,रमुवा घोड़न,किशोर,बरखू, सरखू,सन्तु सारे के सारे गजेड़ी इक्ट्ठा हो गये । सब मिलकर खूब धुआ उड़ाने में जुट गये ।
रमुवा बोला – एक चिलम और चढ जाती तो मजा आ जाता ।
छनुवा– अरे दीनु भइया के राज में कहा कमी है । खूब छानो ।
छीनु फुलकर कुप्पा हो गये । एक चिलम ठण्डी ना हो पाती तब तक दूसरी चढ जाती । गजेड़ियों को पता ही नही चला कब रात हो गयी । दीनु का गांजा खत्म होते ही सब अपने अपने घर चल पड़े । दीनु दुनिया से बेखबर वही पसरे पसरे गाजा पीया राजा पीये गांजा लड़खड़ाती जबान से गाता रहा है । बीच में रह रह कर बोलता क्या भोले बाबा ने चीज बनायी है । दुनिया के सारे दुख–दर्द भूल जाओ । तनिक सा गाल धुये से भरा नही कि अच्छे अच्छे विचार आने लगते है जैसे भोले बाबा की जटा से गंगा ।
बुधिया–हां तुमको देखकर मुझे भी ऐसे ही लगने लगा है ।
दीनु–महंगुवा की मां गांजा भोले भण्डारी का परसाद है । मजाक ना कर भोले बाबा नाराज हो जायेगे। गांजा कभी नुकशान नही करता ।
बुधिया–अरे वाह रे हकीम । गांजा नुकशान नहीं करता । याद है तुम्हारे लंगोटिया यार की मौत जो भूक भूक कर मरा था । आंते सड़ गयी थी । बेचारे बच्चे अनाथ हो गये घरवाली विधवा हो गयी । करे कोई भरे कोई वही हुआ तुम्हारा दोस्त पतवार तो दांत चिआर कर मर गया । दण्ड घरवाली

और बच्चों को मिल रहा है ।नन्हे नन्हे बच्चों भूख से बिलख रहे है । स्कूल जाना बन्द हो गया है । तुम्हारे लिये गांजा अमृत हो गया है ।
दीनु–गांजा दारू खाने को मांगते है । मांस मछली,घी दूध समझी ।
बुधिया–अरे वाह राजाओं महाराजाओं के शौक फरमा रहे है जनाब । सोने की थाली में मांस मदिरा का भक्षण करेगें । चांदी के लोटे में पानी पीयेगे । अरे रोटी का ठिकाना भी है । मेहनत मजदूरी ना करे तो रोटी नसीब न हो । चले है राजाओं के शौक में मरने । आग लगे ऐसी शौक में। ऐसा शौक तो घर परिवार के लिये मुट्ठी भर आग साबित होता है । कहते हो गांजा पीने के बाद अच्छे विचार आते है जरा पीकर सोचना बच्चों के लालन पालन पढाई लिखाई और अच्छे कल के बारे में । दिन भर तो हाड़फोड़ी हूं रात भर तुम्हारी टहल में बिता दूं । मैं बहुत थक गयी हूं सोने जा रही हूं । बच्चे सो गये है।तुम भी बड़बडाना बन्द करो पटाकर सो जाओ । सुबह बाबूसाहेब के खेत में खून पसीना करना है । कल की शाम की रोटी का इन्तजाम नही है ।याद है ना । पहले ही बता देती हूं ।
सुबह हो गयी । बुधिया गोबर पानी कर,दूसरे काम निपटाने में लग गयी । दीनु टस से मस नही नहीं । जहां पसरा था वही पसरा रहा सूरज की तेज रोशनी में नहाये हुए । बुधिया जगाकर थक गयी । दीनु नशे में बड़बडाता रहा पर उठकर बैठा नहीं । बुधिया झल्लाकर घास काटने चली गयी । घास सिर पर लादकर आयी और दरवाजे पर पटक दी । तब तक दीनु बोला अरे बाप रे नीम का पेड़ उपर गिर रहा क्या ?
बुधिया–अरे कहां नीम का पेड़ गिर रहा है ।उठो दोपहर होने को आ गयी ।
दीन–अरे सो लेने दे बहुत दिनों के बाद तो आज नींद आयी है । तू भी सो जा रोज तो हाड़फोड़ते ही है एक दिन नही फोड़ेगे तो कौन सा पहाड़ टूट पडेगा ।
बुधिया– अच्छा बच्चों को बिलखता हुआ छोड़ दूं । भैंस,बकरी चिल्ला रही है सब छोड़ दूं तुम्हारे बगल में सो जाऊं। तुम्हारा दिन रंगीन करूं । हे भगवान किस गुनाह की सजा दे रहे हो कहते हुए बुधिया रोने लगी ।
दीनु– अरे भागवान क्यो आसमान सिर पर ले रही हो । एक दिन नही खायेगे तो मर तो नही जायेगे । गम तो भूला लेने देती कुछ देर के लिये । जब से आंख खुली है गम में तो जी रहा हूं ।
कनुवा –दीनु का नन्हका बेटा बोला मां दादा को चढ गयी है क्या । दही गुड नन्दु काका के घर से मांग लाऊं क्या ?
बुधिया– तू रहने दे बेटा मैं ही जाती हूं । बुधिया नन्दु के घर गयी थोड़ी दही मांगी लायी और गुड के कुण्डे से थोड़ा गुड निकाल लायी और दीनु को देते हुए बोली लो दही गुड खा लो तुम्हारे गाल भर धुयें का असर कम हो जायेगा । नही भैंस के गोबर की तरह तुम्हारी टट्टी भी हमें फेंकनी पड़ेगी ।
इतने में महंगुवा आ गया । दीनु को गुड दही चाटते हुए देखकर बोला मां अभी नही उतरी दादा की नशा क्या ?
बुधिया–कैसे उरतरेगी । एक बैठे सात चिलम चट कर गए उपर से एक पूरी पन्नी भी डकार गये । पेट में रोटी नही बस गांजा दारू तो भरा है । नशा नही तो और क्या करेगा ?
दीनु को ऐसी चढी है कि उतर नही रही है बस्ती के घर घर तक बात पहुंच गयी । देखते ही देखते पूरी बस्ती इक्ट्ठा हो गयी । सभी लोग अलग अलग तरह से नशा उतारने के नुस्खे बताने लगे । इतने में छनुवा आ गया आव देखा ना ताव भैंस की हौंद का सानी पानी बाल्टी भर कर लाया और

उड़ेल दिया दीनु के कपार पर । दीनु जोर जोर से गाली देने लगा और इक्ट्ठा भीड़ खिलखिलाकर हंस पड़ी ।
दीनु–अरे अक्ल के दुश्मन क्यों मेरा सपना भंग कर दिया ।
बुधिया–सपने में तुम राजा थे और ये सारे लोग तुम्हारी प्रजा । चारो ओर तुम्हारी जय जयकार हो रही थी ।
दीनु–हां ऐसा ही सपना था तुम भी तो मेरे साथ सिंहासन पर बैठी थी ।
बुधिया–तब तो खजाने की चाभी तुम्हारे हाथ लग गयी होगी । तुम दौलत अपने आधा दर्जन बच्चों में बांट भी रहे होगे । पढने के लिये विदेश भेजने की योजना बना रहे होगे । प्रजा के सुख के लिये चिन्तित थे ।
दीनु– तुम तो एक एक बात सही सही बयान कर रही हो ।
बुधिया–क्यो ना चक्रवर्ती महाराज ये चिथड़ा लपेटे महारानी तुम्हारे बगल में जो बैठी थी । अरे सपने देखने से कुछ नही होता । असलियत तो ये है कि बच्चों के तन के कपड़े तार तार हो हो रहे है। भूख से बिलबिला रहे है तुम हो कि नशे में डूबे राजा बन रहे हो , कहते हुए वह फफक फफक रोने लगी ।
दीनु–चुपकर क्यों मेरी इज्जत का जनाजा निकाल रही है । मेरा नशा पानी तुमको इतना ही खराब लगता है तो छोड़ दूंगा ।
बुधिया–रोटी गले से नीचे नही उतरती। कहते है पेट में गैस हो रही है । घोड़े का मूत दारू मिल जाये तो कई ड्रम खाली कर दें। गांजे का गाल भर भर धुआं मिल जाये तो सोने पर सुहागा । इतने में घासी आ गया । दीनु बुधिया क्यों बरस रही है । काम पर नही गये इसलिये क्या ?
दीनु–कुछ नही बस योहिं बरस रही है । खैर उसका हक है । अभी तो बाढ के पानी के माफिक है। कुछ देर में गंगाजल हो जायेगी ।
दीनु और घासी की बात को अनसुना करते हुए बुधिया साड़ी के पल्लू में मुंह छिपाकर अन्दर चली गयी ।
घासी –कुछ माल बचा है क्या दीनु ?
दीनु–तनिक सा तो है बड़े भइया पर देख रहे हो बुधिया आग बबूला हो रही है । मैं तुम्हारी बात को कैसे टाल सकता हूं ।
दीनु और घासी हंसी ठिठोली कर खूब गाल भर भर धुआं उड़ाये । घासी धुंआं उगने में ऐसे खासने लगे जैसे उसकी आंत बाहर आ जायेगी । घासी धुयें के साथ घोड़न की घरवाली की बुराई करने से भी नही चूक रहा था । जोरदार करस्स लेते हुए बोला भगवान घोड़न की घरवाली जैसी झगड़ालू घरवाली किसी जन्म में मत देना भले ही कुंआरा मर जाउूं । घासी और दीनु जी भर कर धुआं उड़ाये । गांजा खत्म हो जाने पर घासी ने चिलम और गिटक को खूब रगड़–रगड़ कर चमकाया । चिलम और गिटक को रगड़ कर साफ करते हुए घासी को देखकर बुधिया बोली जेठजी घर में गिलास भर तक नही लेकर पीते देखो चिलम कैसे साफ कर रहे है । अरे इतनी सेवा जेठानी की करते ।
घासी –उडा ले मजाक बुधिया ना जाने किस मोड़ पर कब खो जाउूं ।
बुधिया–जेठजी जितने दीवाने गजेड़ी गाल भर धुआं के होते है उतने दीवाने घर परिवार के होते तो कितना अच्छा होता ?
घासी –कह ले बुधिया जो कहना चाह रही हो। कल किसने देखा है । कल रहूं या ना रहूं।
बुधिया– जेठ जी ऐसी बात क्यो कर रहे है ? आप तो जीओ हजारो साल ।

घासी –बुधिया जिन्दगी कब धोखा दे दे कोई कुछ नही कह सकता । दीनु अब मैं घर चलता हूं । अंधेरा पसर गया तुम भी रूखा सूखा खाकर अराम कर । कल काम पर जरूर जाना । अरे अपने पास सरकारी नौकरी तो है नही यही सेर भर मजदूरी का भरोसा है । इतना भी गम भूलाने के लिये मत पीया करो कि काम बन्द हो जाये ।
दीनु–याद रखूंगा भइया आपकी नसीहत । भइया घर तक छोड़ आऊं ।
घासी –नही रे पहुंच जाऊंगा । तू तो बुधिया का ख्याल रख । बहुत दुखी लग रही है ना जाने क्यूं ?
घासी दीनु के साथ गांजा पीकर गया फिर ऐसा पलंग पर पड़ा कि कभी नही उठ सका । लकवा ने उसके तन पर ऐसा घातक प्रहार किया कि खटिया पर ही टट्टी पेशाब सब कुछ साल भर किया और अन्ततः सड़कर मर गया ।
बुधिया घासी की दर्दनाक मौत देखकर टूट गयी । उसे बुरे बुरे सपने आने लगे । उसने तय कर लिया कि वह दीनु का गांजा पीना छुडवाकर रहेगी । लाख समझाने के बाद भी दीनु गांजा नही छोड़ने को तैयार था ।
दीनु–गांजा के अलावा और कुछ तुमको नही सूझता क्या ?
बुधिया–मेरी बात मान जाओ गांजे की मुठ्ठी भर आग में ना तुम सुलगो और ना घर परिवार को सुलगाओ। जेठ जी की मौत से कुछ तो सीख लेते । मेरी बात नही माने तो एक दिन बहुत पछताओगे ।
दीनु–तुम मुझे श्राप दे रही हो ?
बुधिया–कोई पत्नी अपने पति को श्राप दे सकती है क्या ? नशे की मुट्ठी भर आग ने बहुत कुछ सुलगा दिया है तुमने अभी तक। जो खर्चा गांजा दारू पर कर रहे हो वही खुद की सेहत पर करते । बच्चों को पढाने लिखाने पर करते । अरे हम छोटे लोग गरीब,शोषित, भूमिहीन लोग है न रहने का ठिकाना है ना खाने का । खेत मालिको के खेत में हाड़फोड़कर जो सेर भर कमाकर लाते है उसी में सब कुछ देखना है कपड़ा,लता दुख दर्द । तुम हो कि कल की सोच नही रहे हो मेहनत की कमाई गाल भर धुयें में उड़ाते जा रहे हो । मैं मर गयी तो तुम्हारा ख्याल कौन रखेगा । बेटिया अपने घर परिवार में रम जायेगी । बेटा पढ लिखकर कही परदेसी हो गया तो ।
दीनु–अच्छा ही होगा इस नरक से तो बच्चों को छुट्टी मिल जायेगी ।
बुधिया– मैं भी यही चाहती हूं पर तुम्हारे बारे में सोचकर डर जाती हूं । मैं मर गयी और तुम ऐसे ही गांजा दारू के दीवाने रहे ,अगर जेठ जी जैसे तुम को कुछ हो गया तो तुम्हारा क्या होगा कहते हुए बुधिया की आंखे डबडबा गयीं ।
दीनु–क्यो मन छोटा कर रही है । तुमको कुछ नही होगा ।
बुधिया– महंगु के दादा मैं ज्यादा दिन नही रह पाऊंगी ।
दीनु–ऐसा क्यो बोल रही हो ?
बुधिया–महंगु के दादा मालूम है एक दिन मैं सपने में जोर की चिल्लायी थी । नन्हका मेरी चिल्लाने की आवाज से रोने लगा था ।
दीनु–वह तो तुम सपने में चिल्लायी थी ।
बुधिया–वही सपना अब बार बार आने लगा है ।
दीनु–कैसा सपना ?
बुधिया– एक काला कलूटा राक्षसनुमा आदमी भैसे पर सवार होकर आता है और अपने साथ चलने को कहता है ।
दीनु–क्या ?

बुधिया–हां ।
दीनु–पगली सपने सच थोड़े ही होते है ।उल्टा ही होता है। मैं सपने में राजा बन जाता हूं । अगर सपने मे सच्चाई होती तो हम राजा यानि आज के मन्त्री ना बन गये होते कब के ? मन्त्री सन्त्री किसी राजा से कम होते है क्या ? पर देख ना पेट भरने का इन्तजाम नही है ।
अचानाक एक दिन बुधिया बेहोश होकर गिर पड़ा । दीनु और बस्ती वाले गांव से बहुत दूर सरकारी अस्पताल लेकर गये । उपचार के बाद तनिक होश तेा आया पर फिर बेहोश हो गयी । डाक्टरो ने कहा बीमारी बहुत पुरानी है । अस्पताल आने में बहुत देर हो गया है । अब कुछ नही हो सकता । डाक्टरों ने घर ले जाकर सेवासुश्रुषा करने की हिदायत देकर अस्पताल से छुट्टी दे दी । बुधिया को मरणासन्न अवस्था में घर लाया गया । जामुन के पेड़ की छांव में लेटा दिया गया । जहां आधी रात होते होते बुधिया का तन एकदम बरफ हो गया । बुधिया का क्रिया कर्म रजगज से हुआ । मरणोपरान्त बस्ती वालों ने बुधिया को देवी की उपाधि दे डाली । दीनु को बुधिया के कहे गये एक शब्द याद आने लगे । वह बच्चों से चोरी छिपे आंसू बहा लेता । कभी–कभी तो दीनु को ऐसा लगने लगता कि बुधिया चिलम छिन रही हो ।
एक दिन सुबह घोड़न,किशोर,बरखू, सरखू,सन्तु रोज की भांति गांल भर भर धुआं उड़ाने के लिये दीनु के दरवाजे पर इक्ट्ठा हुए । दीनु मड़ई में खोसी गांजे की पोटली निकालने गया पर क्या उसे लगा कि बुधिया उसके सामने खड़ी है और पोटली छुने से मना कर रही है । गांजा की पोटली लेने में बुधिया से दीनु की हाथापांई तक हो गयी । वह मड़ई में से पसीने से तरबतर निकला गांजा की पोटली और घोड़न के हाथ से चिलम छिन कर जोर से दूर फेक दिया ।
घोड़न– भइया ये क्या कर दिये इतना सारा माल फेंक दिये ?
दीनु–यह बहुत पहले करना था । देवी समान घरवाली को मेरी वजह से बहुत तकलीफ हुई । गाल भर धुआं के चक्कर में उसकी तकलीफ पर ध्यान नही गया । आज से गांजा दारू ही नही हर तरह की नशा का त्याग करता हूं । आज बुधिया की आत्मा को जरूर सकून मिलेगा । अब नहीं गाल भर धुये मे उडाऊंगा जीवन और न दूसरों को उड़ाने दूंगा। नशा चाहे कोई हो दारू चरस, बीड़ी ,सिगरेट, तम्बाकू या गांजे का गाल भर धुआ सब देते है बर्बादी लेते है जीवन । घर परिवार के सुख में भरते है मुट्ठी भर आग घोड़न ।

चोरनी

सूरज डूब चुका था । अंधियारा पसरने को उतावला था । पंक्षियां अपने अपने घोंसलों की ओर भाग रहे थे ।घरों से निकलने वाला धुआं अभी साफ साफ नजर आ रहा था । खेत में काम करने वाले मजदूर घर लौट रहे थे या खेत मालिकों की हवेली सलाम ठोकने भागे जा रहे थे । रामू दादा भी खेत में काम कर हवेली गये । वे फावड़ा वहां रखे दो चार टहल मालिक की बजाये और घर वापस आ गये । घर पहुंचे ही नही बाहर से आवाज लगाने लगे अरे दीनु की मां घर में हो क्या ? या किसी के घर चिलम गुडगुडाने में लगी है । काम पर से आओ तो कभी डयोढी पर मिलती नही ।
शान्तिदेवी –तनतनाते हुए बाहर आयी और बोली तुम खेत में काम करके आ रहे हो तो क्या मैं घर में खाली बैठी रहती हूं । रोटी तोड़ती रहती हूं । मैं भी दिन रात एक कर रही हूं । इधर उधर चिलम की जुआड़ में नही भटकती रहती ।ऐसी होती तो आज तुम ऐसे बात ना करते । तुम्हारा एक पैसा फिजूल खर्च नही करती । पाई पाई जोड़ती हूं । ये माटी का घर सिर्फ तुम्हारी कमाई से नही खड़ा है । देखो मेरे सिर के बाल झड़ गये । इस घर को बनाने में माटी ढो–ढो कर। जब देखो तब आग उगलते रहते है । अरे अभी तक तो अकेले चिलम नही गुडगुडायी आज कहां से सूरज पछिम से उग गया कि चिलम लेकर बैठ गयी । नन्हकी को चुप करा रही थी । पुष्पा चूल्ह चौके में लगी है ।

रामू–भागवान क्यों नाराज हो रही है । चार बार बुलाया एक बार भी नही बोली । घर में तुम हो या नही कोई आहट नही ।
शान्तिदेवी – हां मेरी आहट अब तुमको नही लगेगी । वो दिन भूल गये जब मेरी आहट तुम्हारे नथूनों को लग जाती थी । मैं भी वही हूं तुम भी । देखो समय कितना बदल गया कि तुम्हे मेरी आहट नही लग रही है ।ये तो होना ही था । लो खटिया डाल दी बैठो । मैं पानी लाती हूं । शान्तिदेवी झटपट गुडपानी देकर चिलम चढा लायी और रामू को थमाते हुए बोली लो तुम भी जी भर कर हुक्का गुडगुडा लो दिन भर नही मिला है ना । कहते हुए वह खटिया पकड़कर चुपचाप बैठ गयी ।
शान्तिदेवी को मौन देखकर रामू बोला–दीनु की मां क्यों गुमसुम हो गयी ।बेटवा की कोई चिट्ठी आयी है क्या ? थोड़ी देर पहले बहुत ताना महना मार रही थी । एकदम से क्या हो गया ।
शान्तिदेवी–क्या करूं । झगड़ा करूं ।
रामू– देवी क्रोध ना करो । हमने तो क्रोध करने लायक कुछ नही कहा । क्यों उखड़ी उखड़ी बातें कर रही हो । क्या बात है ?
शान्तिदेवी–कोई बात नही है ।
रामू–कोई ना कोई बात तो है । बताओ ना क्यो दुखी हो रही हो अकेले । तकलीफ बांटने से कम होती है । देह दुख रही है क्या ? बताओ ना क्या बात है ? क्यों रोनी सूरत बनाये बैठी हो ।
शान्तिदेवी–क्या बताऊं । कई दिन से देख रही हूं ।
रामू–क्या देख रही हो ?
शान्तिदेवी–बोलने दो तब ना बताऊं ।
रामू– बीच में टोंक कर गलती कर दिया क्या ? बोलो क्या बताने वाली थी ?
शान्तिदेवी–सुनो ।
रामू–क्या सुना रही हो ?
शान्तिदेवी–सामने के घर से सुनाई दे रही गाली ।
रामू–अपने घर में कोई कुछ करे हमें क्या लेना ?
शान्तिदेवी–मुझे तो कुछ शंका हो रही है ।
रामू–क्यों ?
शान्तिदेवी–घमण्डीदेवी मुझे देखकर गाली देती है। दीनू के बाबू तुम कहो तो मैं पूंछू कि ऐसा क्यो करती है ।
रामू–क्या पूछोगी उस झगड़ालू से । गांव की कई लोगों को पीट चुकी है । अपने मर्द को भी बुरी बुरी गाली देती है कई बार मार भी चुकी है । गाली तो उसकी छठी पर चढायी होगी उसकी मां ने ।
शान्तिदेवी–गोधूलि बेला में गाली देना अच्छी बात तो नही है ।
रामू–दीनू की मां तुम उसको मना भी तो नही कर सकती । अगर कुछ बोली तो अपने गले पड़ जायेगी । आ बैल मुझे मार वाली बात होगी । छोड़ो जाने दो । ये थामों हुक्का तम्बाकू जल गयी ।
शान्तिदेवी–बाप रे इतना जल्दी एक चिलम तम्बाकू जल गयी ।इतना हुक्का पीओगे तो कहां से आयेगा। मैं इन्तजार में बैठी थी कि तुम पीकर मुझे दोगे ।
रामू–एक और चिलम चढा लो ।
शान्तिदेवी–नहीं रात हो गयी । दूसरे काम भी तो करने है । पुष्पा रोटी बना चुकी है । रोटी खाओ । तम्बाकू पीकर पेट थोड़े ही भरेगा । चलो खटिया घर में डाल देती हूं । यहां मच्छर बहुत

लगने लगे हैं । रोहित ने अन्दर धुआं कर दिया है । मच्छर नही लगेगा । अच्छा बैठो मैं चिलम चढाकर लाती हूं । तुम बैठकर गुडगुडाओ में तनिक घमण्डीदेवी से पूछकर आती हूं । कौन सी तकलीफ आ गयी है ।
रामू–ना तू ना जा खामखाह झगड़ा हो जायेगा ।
शान्तिदेवी–अरे मैं झगड़ा नही करने जा रही हूं हालचाल पूछने जा रही हूं ।
रामू–बहुत दया आ रही है । नही मान रही हो तो जाओ फिर आकर आंसू नही बहाना ।
शान्तिदेवी–मैं पूछकर आती हूं । तुम हुक्का गुडगुडाओ ।
रामू–ठीक है जाओ ।
शान्तिदेवी भागी भागी घमण्डीदेवी के घर गयी ।बाहर से घमण्डी बहन घमण्डी बहन की आवाज देने लगी ।
घमण्डीदेवी भूखी शेरनी की तरह बाहर आयी और बोली अच्छा तू है ।
शान्तिदेवी–हां बहन मैं हूं । क्या बात है तू आजकल परेशान रहती है । बहन गाली देने से परेशानी खत्म तो नही होगी । गाली कही जाती नही है । लौटकर अपने को ही लगती है । गाली देने से आत्मा भी अशुध्द होती है ।
घमण्डीदेवी–अच्छा तो तू समझाने आयी है चोरनी कहीं की ।
शान्तिदेवी– क्या कह रही हो ? होश में तो हो ? मुझे चारेनी कहते हुये तुमको शरम भी नही आयी । भला मैं और चोरनी ।
घमण्डीदेवी–हां हां तू चोरनी नही तो और कौन ? मेरी हंसुली चुराकर सुराहीदार गर्दन सजा रही है । चोरनी मुझे समझा रही है ।
शान्तिदेवी को काटो तो खून नही । वह बेसुध सी घमण्डीदेवी की फटकार सुनकर अपने घर की ओर दौड पड़ी , बरदौल तक आते आते गश खाकर गिर पड़ी । कई घण्टे वही पड़ी रही किसी को पता नही चला । काफी देर तक वापस न आने पर रामू दादा लालटेन लेकर ढूढने निकले । बरदौल के पिछवाड़े शान्तिदेवी को बेसुध पड़ी देखकर चिल्ला उठे । रामू की चिल्लाहट सुनकर छोटा बेटा रोहित बड़ी बहू पुष्पा रोते हु दौड़ पडें । रोने की आवाज सुनकर दस–बीस लोग इक्ट्ठा हो गये । शान्तिदेवी को उठाकर लाये और दालान में खटिया पर लेटा दिये । कुछ देर में पूरी बस्ती इक्ट्ठा हो गयी । काफी देर के बाद शान्तिदेवी को होश आया ।
सभी उस हादशे को जानने के उत्सुक थे जिसके कारण शान्तिदेवी बेसुध हुई थी । शान्तिदेवी की आंखे पथरा गयी थी । उनके कण्ठ से आवाज ही नही निकल पा रही थी । बड़ी कोशिश के बाद अटक अटक कर घमण्डीदेवी का अपने माथे मढा इल्जाम बयान कर पायी ।
रामूदादा को जैसे सांप सूंघ गया शान्तिदेवी की बात सुनकर । उसके मुंह से निकल पड़ा घमण्डीदेवी ने ऐसा कैसे कह दिया ?
मजियादादी बोली–रामू दादा और शान्तिदेवी को समझाते हुए बोली तुम लोग घमण्डीदेवी की बात से इतने दुखी हो । अरे पूरा गांव जानता है । वह औरत कितनी शरीफ और ईमानदार है । निरापद पर इल्जाम लगाते हुए उसकी जबान झर कर क्यों नहीं गिर गयी । देवी समान औरत के उपर इल्जाम लगाकर पाप का भागी बनी है । चोर की घरवाली चोरनी तो खुद घमण्डीदेवी है । दुनिया जान गयी है मंधारी बहन की मनौती का खस्सी उसका आदमी बाहुबलियों के साथ मिलकर काटकर खा गया । कितनी ओझाई सोखाई हुई तो जान बची है।
इतना कहना था कि दखौतीकाकी का भोंपू चालू हो गया वह बोली शान्तिबहन तू चिन्ता ना कर दुनिया चुड़ैल के बारे में जानती है । एक दिन जरूर हंसुली के चोरी से पर्दा हटेगा । देखना यही घमण्डी खुद अपना सिर पत्थर से कूचेगी । दुनिया इस मरदमरुई के मुंह पर थूकेगी । घमण्डी तो

घमण्डी उसके लड़को ने भी उपद्रव मचा रखा है । देखा नही अपने लड़कों से रोहित को पानी में पटवाकर कितना मरवायी थी । रामू घर पर थे देख लिये नही तो रोहित को मार डालते सब मिलकर ।शान्ति बहन तू अपनी आदत में बदलाव कर हर किसी के दुख तकलीफ में कूद जाती है । अरे तो इतनी भलमनसत ना दिखाती तो आज तेरे उपर कीचड़ नही फेंक पाती ना घमण्डी । क्रोध पाप है । तुम्हारे उपर फूट पड़ा घमण्डी का क्रोध ।

रामू–अरे आदमी होने के नाते फर्ज बनता है कि आदमी के दुख में तो काम आये ।

सुन्दरीदेवी–बबुआ ठीक तो कह रहे हो पर आदमी भी तो उस लायक हो । यहां तो आदमी के वेष में शैतान मौजूद है । ईमानदार और नेक इंसान के मुंह पर मुट्ठी भर आग मार रहे हैं ।

रामू–पूरा गांव जानता है इस घमण्डी का घर बनवाने में हमने क्या नही किया । गांव के बाहुबलियों से दुश्मनी तक ले लिया पर घर बनवा कर सांस लिया । वही घमण्डी हमारी बुढिया को आज चोरनी कह रही है ।

सुन्दरीदेवी–नेकी का फल जरूर मिलेगा भइया । भगवान के घर भले ही देर हो पर अंधेर नही हो सकती । बबुआ एक बात कहूं बुरा तो नही मानोगे ना ?

रामूदादा–घमण्डीदेवी कह रही है तो तुम भी कह दो जो जी में आये ।

सुन्दरीदेवी–बबुआ हम दिल दुखाने के लिये नही कह रही हूं ना ।

रामूदादा–कह दे भौजाई । तेरी भी सुन लूंगा । सबकी तो सुन ही रहा हूं ना कब से ।

सुन्दरीदेवी–बबुआ हर किसी के दुख तकलीफ में अब मत खड़ा हुआ करना । आज से कान पकड़ लो।

रामूदादा–भौजाई आज के जमाने को देखते हुए कह तो सही रही हो पर ना मुझसे और ना ही दीनू की महतारी से ही किसी की तकलीफ देखा जाती है । बुरा तो किसी का नही कर रहे है ना । आदमी नेकी नही मानेगा तो क्या भगवान तो मानेगा ?

सुन्दरीदेवी–देवरजी तुम्हारी यही सोच तो पूरे गांव में तुमको सबसे उपर उठाती है । नासमझ लोग है कि समझते नही।

सुन्दरीदेवी शान्तिदेवी को भर अंकवार उठाते हुए बोली चलो बहन उठो हाथपांव धो लो मन थोड़ा ठौरिक हो जायेगा । एकाध रोटी खाकर सो जाओ । घमण्डीदेवी का अभिमान जरूर चूर होकर रहेगा । सच्चे इंसान के उपर उगली उठायी है भस्म हो जायेगी । घमण्डी देवी ने बहुत बड़ा इल्जाम माथे मढ दिया है ।

शान्तिदेवी की बहू पुष्पा लोटे में पानी लेकर आयी सास से बोली अम्माजी उठो मुंह हाथ धो लो कुछ खाकर दवाई खाओ । घमण्डीदेवी एक ना हजार इल्जाम लगाये कर ना तो डर कैसी ?

शान्तिदेवी– बीटिया कुछ मन नही कर रहा है ।

पुष्पा लोटे से पानी ली और शान्तिदेवी का मुंह धोकर अपने आंचल से मुंह पोछकर मुंह में रोटी तरकारी ठूसने लगी ।

शान्तिदेवी–बीटिया तुमने तो अपनी कर ली । अब तू भी जा खा ले और आराम कर रात काफी हो गयी है ।

पुष्पा–अम्मा दवाई तो खा लो ।

शान्तिदेवी–ठीक है लाओ वह भी जर्बदस्ती ठूस दो । देख नन्हकी रो रही है जा उसको सुला । मेरी फिक्र ना कर मैं मरने वाली नही हूं जब तक घमण्डी की हंसुली की चोरी से पर्दा नहीं उठता है । माथे से इल्जाम हटते ही सदा के लिये सो जाउूं भगवान ।

पुष्पा– अम्मा कैसी मनौती कर रही हो । ऐसा ना कहो अम्माा कहते हुए पुष्पा नन्हकी को चुप कराने । वह नन्हकी को चुप कराते कराते खुद भी सो गयी । उधर शान्तिदेवी की आंख से नींद

गायब । रामू दादा भी करवटे बदल बदल कर थक गये पर उनसे भी नींद कोसों दूर । बार बार रामूदादा को करवटें बदलता देखकर शान्तिदेवी बोली दीनू के बाबू नींद नही आ रही है ।
रामू–कैसे नींद आयेगी । चोरी का इतना बड़ा इल्जाम सिर पर जो है ।
शान्तिदेवी–क्यों घबरा रहे हो । चोरी तो हमने किया नही है ।
रामू–किस किस का मुंह पकड़ेगे । कल आसपास के गांवों में बात फैल जायेगी ।
शान्तिदेवी घमण्डीदेवी की हंसुली चोरी हुई है तो किसी ने जरूर चुराया है। लेकिन वह इल्जाम मेरे माथे क्यो मढ दी ?
रामू–राज एक दिन खुल जायेगा । तुम थोड़ी देर आंख बन्द कर सोने की कोशिश करो । नींद नही आयी तो दिन भर सिर दुखेगा । पुष्पा क्या क्या करेगी ? नन्हकी भी तो रोती रहती है आजकल बहुत जिदी हो गयी है । शहर में दीनू बेटवा भी दुखी होगा यह सब सुनकर ।
शान्तिदेवी–इल्जाम माथे आ ही गया है । जब तक रहस्य से पर्दा नही हटता है तब तक तो इल्जाम की मुट्ठी भर आग में सुलगना ही है ।
घमण्डीदेवी के हंसुली की चोरी की खबर जंगल की आग की तरह फैल गयी । शान्तिदेवी ने चोरी की है इस बात को कोई मानने को तैयार ना था । धीरे धीरे छः महीना बित गया पर घमण्डीदेवी की हंसुली की चोरी का पता नही चला । एक दिन हैरान परेशान हरी बाबू आये रोहित से बोले रोहित बाबू सोनार की दुकान तक चलो बहुत जरूरी काम है । रोहित –अरे कौन सा इतना जरूरी काम आ धमका हरी बाबू ।
हरीबाबू–हंसुली गिरवी रखना है । रूपये की सख्त जरूरत है ।
रोहित हरीबाबू के साथ बाजार सोनार की दुकान चले गये । रोहित बाबू को देखकर सोनार बोला कैसे आना हुआ डाक्टर बाबू ।
रोहित –हंसुली गिरवी रखने आया हूं ।
सोनी– रोहित बाबू क्या बात है आपके गांव का कोई आदमी हंसुली गिरवी रखता है तो कोई छुड़वाता है ।
रोहित –कौन छुड़वाकर ले गया ?
सोनी–गभरू । वही गभरू जो पहले ईक्का हांकते थे ।
हरीबाबू–अच्छा तो घमण्डी काकी की हंसुली गिरवी रखी गयी थी । चोरी के इल्जाम की मुट्ठी भर आग काकी के सिर पर दहक रही थी अब तक ।
हरीबाबू की हंसुली गिरवी सोनी ने रखकर रूपये दे दिये । रूपया लेकर हरीबाबू रोहित बाबू को साथ लेकर रिश्तेदारी में चले गये । इधर रात में गभरू सोये हुये बड़बड़ाया हंसुली पुआल में क्यों फेंक रही है । मिल गयी हंसुली । चोरनी फेंक गयी ।
घमण्डीदेवी– गभरू को जगाते हुए बोली क्यों बड़बडा रहे हो। हंसुली तो चोरनी पचा गयी ।
गभरू–नही पचा सकती । घर की देवी सपने ने मुझे बतायी है कि हंसुली पुआल के ढेर में हैं । चलो देखते है सच्चाई क्या है ?
घमण्डीदेवी और गभरू दोनो पुआल के ढेर के पास गये । गभरू के पहली बार में ही अंकवार में पुआल उठाते हंसुली हाथ में आ गयी । घमण्डी देवी झटपट हंसुली को गले में सजायी और रात भर गभरू से हंसी ठिठोली करती रही । खुशी के मारे उसकी आंखेां से नीद उड़ गयी थी । भोर हो गयी मुर्गा बोलने लगे । कुछ देर में उजाला हो गया अब क्या घमण्डीदेवी शान्तिदेवी के घर की ओर मुंह कर गाली देना शुरू कर दी ।
सूरज की पहली किरण के साथ हरीबाबू और रोहित भी आ गये । घमण्डीदेवी को गाली देते देखकर रोहित बोला क्यों गाली दे रही हो काकी ।

घमण्डीदेवी–क्यों गाली गोली जैसे लग रही है । अपनी चोरनी मां से पूछ । भूत–मेलान के डर से हंसुली पुआल के ढेर में फेक गयी । वाह रे चोरनी ।
रोहित –पंचायत में फैसला हो जायेगा । पंचायत बुलाने जा रहा हूं ।
गांव के प्रधान को बुलाने के लिये खुद दौड़ पड़ा और बस्ती वालों को रामूदादा बुलाने में जुट गये । कुछ ही देर में पंचायत इक्ट्ठा हो गयी ।
प्रधान–घमण्डी देवी मिल गयी तुम्हारी हंसुली ।
घमण्डी देवी–हां बाबू चोरनी पुआल में फेंक गयी थी तो मिलनी ही थी। कुछ दिन और रखती तो मेरी कुलदेवी चोरनी शान्तिदेवी के पूत को ना खा जाती । सत्यानाश की डर से पुआल में रख गयी । रात में कुलदेवी ने सपने में रंजीते के बाबू को सपने में बतायी थी। रंजीते के बाबू के पुआल उठाते ही हंसुली नीचे गिर पड़ी थी।
प्रधान–क्या यही सच है गभरू बेटा ।
गभरू शान्तिदेवी का पांव पकड़कर रोते हुए बोला माफ कर दो भौजाई चोरनी तू नही चोर मै हूं । मैंने बाप के इलाज के लिये गिरवी रख दिया था घरवाली की चोरी से । इक्ट्ठा लोग शान्तिदेवी की जय जयकार करने लगे । गांव वालों की श्रध्दा देखकर शान्तिदेवी की आंखों से झराझर मोती झरने लगे ।

बारात

इकतीस दिसम्बर की आखिरी और पहली जनवरी की प्रथम अर्धरात्रि में नन्दन के घर एक नन्हे फरिश्ते का अवतरण हुआ । बच्चे के रोने की आवाज सुनकर नन्दन के मन में आतिशबाजी होने लगी । कुछ देर के बाद रमरजी काकी घर में से बाहर निकली । नन्दन आगे बढकर काकी का पांव छुये ।
रमरजीकाकी–खूब तरक्की कर बेटवा, बेटा हुआ है ।
चौथी औलाद बेटा के सुनते ही नन्दन के दिल से बोझ उतर गया । नन्दन बच्चे का नाम हरी रखा । नन्दन हरी को पढा लिखाकर दरोगा बनाने का सपना देखने लगा पैदा होते से ही। वह भी ऐसे समय जब आजादी की जंग के शोले हर कान पर दस्तख्त देने लगे थे । भयावह सामाजिक स्थिति भी थी । तथाकथित छोटी जाति के लोगो के साथ तो जानवर से भी बुरा व्यवहार होता था । दुर्भाग्यवस ऐसे समाज में नन्दन भी आहे भर रहा था । गरीबी एवं दयनीय सामाजिक स्थिति के बाद भी वह हिम्मत नही हारा । हरी का नाम स्कूल में लाख मिन्नतियां कर लिखवा दिया जबकि उसकी जाति के बच्चों का अघोशित रूप से स्कूल में प्रवेश बन्द था । हरी को भी स्कूल में बहुत मुश्किलें आयी । अछूत जाति का होने के नाते उसे कक्षा में सब बच्चों से पीछे बैठाया जाता था । जहां मास्टर साहब की आवाज भी नही पहुंच पाती थी । स्कूल में पीने तक के पानी को उसकी परछायीं से दूर रखा जाता था । लाख मुश्किलें उठाकर भी हरी हिम्मत नही हारा अन्ततः बारहवीं की परीक्षा अव्वल दर्जे से पास कर लिया पर आर्थिक कारणों आगे की पढाई रूक गयी । हरी साल भर कलकत्तें में पटसन की कम्पनी में छोटा मोटा काम किया । सरकार नौकरी पहुंच से दूर जाती देखकर वह राजधानी आ गया । राजधानी में साल भर की बेरोजगारी झेलने के बाद पुलिस की नौकरी मिल गयी । नौकरी का समाचार सुनकर हरी के परिवार में खुशी की लहर दौड़ पड़ी ।
समय के साथ हरी आगे बढते रहे पुलिस की नौकरी में तरक्की करते करते दरोगा हो गये और उलझे हुए मामलों को सुलझाने में उन्हे महारथ भी हासिल हो गया । हरी को लोग बड़े आदर से हरी बाबू कहते । हरी बाबू की ईमानदारी के चर्चा सबकी जबान पर होते । हरीबाबू ने कई बड़े बड़े और उलझे मामले सुलझाये । एकाध बार सस्पेण्ट भी हुए पर सच्चाई के पथ से विचलित नही हुए ।

एक दिन हरीबाबू थाने से काफी दूर भीड़भाड़ वाले से छुट्टी के कदन सादी ड्रेस में गुजर रहे थे । एक व्यापारी बचाओ बचाओ चिल्ला रहा था । कोई भी उसकी मदद के लिये आगे नही बढ रहा था । दो आतंकवादी लूटेरे दिनदहाड़े व्यापारी की तिजोरी छिन रहे थे । व्यापारी लहूलुहान था पर तिजोरी नही छोड़ रहा था । व्यापारी के चिल्लाने के आवाज हरीबाबू के कानों में पड़ी वह ललकारते दौड़े और एक आतंकवादी को दबोच लिये । अब क्या था आतंकवादी व्यापारी को छोड़ हरीबाबू पर टूट पडे। आतंकवादियो ने दरोगाजी के उपर दनादन पच्चास से अधिक बार छुरे से वार कर दिये । दरोगाजी हरी बाबू का शरीर झलनी हो गया । जांघ की नशे कट गयी । हरी बाबू हिम्मत नही हारे वे एक आतंकी पर कब्जा कर लिये । बड़ी चालाकी से आतंकी के छुरे आतंकी का पेट फाड़ दिये । वह वही स्पाट पर मर गया । हरीबाबू लड़खड़ा कर गिरने लगे तब तक दूसरा आतंकी वार कर बैठ संयोगबस वह भी दरोगाजी की गिरफ्त में आ गया, उसके भी पेट में छुरा दरोगा जी ने घुसा दिया पर आतंकी पेट दबाकर भाग निकला और दरोगाजी अधमरे वहीं तड़पते रहे । कोई भी आदमी दरोगाजी को न तो अस्पताल तक ले जाने की और नही एक फोन करने की हिम्मत जुटा पाया । घण्टो बाद एक ठेलेवाले ने ठेले पर लादकर अस्पताल पहुंचाया । कई दिनों तक दरोगाजी मौत से जूझते रहे । इस बीच बीस बोतल खून चढ गया । अन्ततः दरोगाजी ने मौत पर भी विजय पा लिया । दरोगाजी के बहादुरी के चर्चे समाचार पत्रों के पन्नों पर खूब जगह पाये । दरोगाजी को बहादुरी का श्रेप्ठ पुरस्कार मिलना चाहिये था पर नही मिला । हां राजधानी के क्षेत्र विशेप को आतंकियों से निजात जरूर मिल गयी । हफ्ता वसूली करने वालों और आतंक मचाने वालो की हिम्मत टूट गयी । दरोगाजी सदैव निप्ठा एंव ईमानदारी से जन एवं राप्ट्र की सेवा करते रहे । सेवा के दौरान उनकी धर्मपत्नी का देहान्त कैंसर की बीमारी से हो गया । तीनों बेटे अपने अपने परिवार में रम गये । बेटी अपने घर परिवार में खुश थी । दरोगाजी शहर में अकेले रह गये । मुंह बोला बेटा रामलखन अपने फर्ज पर खरा उतर रहा था । पड़ोस में दूर के रिश्ते की साली और उनकी बेटियां रेखा और गीता भी खूब ख्याल रखती थी । दरोगाजी के अन्दर पुत्रमोह कूटकूट कर भरा हुआ था पर पुत्रों को दरोगाजी से नही उनकी दौलत से मोह था । समय अपनी गति से चलता रहा रेखा और गीता का ब्याह हो गया । दरोगाजी रोटी से मोहताज रहने लगे । इसी बीच उनका एक्सीडेण्ट हो गया । पैर की हड्डी टूट गयी । प्लास्टर तो हुआ पर दो दिन में उतरवा दिये क्योंकि देखरेख करने वाला कोई न था । दरोगाजी का रोना देखकर उनके बड़े बेटे ने जर्बदस्ती अपने लिये एक लाचार विधवा दुखवन्ती देवी को जिसका दुनिया में कोई न था अपनी मां के रूप में खोज लाया । बेबस लाचार विधवा औरत की अस्मिता की रक्षा के लिये दरोगाजी ने छाती पर पहाड़ रखकर मंजूरी दे दी । उन्नसठ साल की उम्र में दरोगाजी का पुर्नविवाह हो गया पर जिस बेबस लाचार विधवा दुखवन्तीदेवी पर दया दिखाये थे वह भी दरोगाजी के जीवन में मुट्ठी भर आग साबित हुई। साल भर के बाद दरोगाजी सेवानिवृत हो गये । सेवानिवृत्ति के बाद दरोगाजी दुखवन्तीदेवी को लेकर अपनी बेटी के घर गये । अब दुनिया में सबसे प्यारे दरोगाजी के लिये बेटी दमाद नाती और नातिन थे । दरोगाजी बेटी और दमाद की वजह से तनिक खुश थे । बाकी सभी तो पैसे के भूखे उन्हे नजर आते थे दुखवन्तीदेवी चार कदम और आगे थी। दमाद के पिताजी तो दोस्त पहले और समधी बाद में थे । खूब जोड़ी जमती थी समधी समधी की । दरोगाजी सेवानिवृत्त होकर गांव आ गये । बेटी को फूटी कौड़ी नही दिये । बेटों ने उन्हें निप्कासित कर दिया पर उनकी नजरे उनके चल-अचल सम्पति पर टिकी हुई थी। दुखवन्तीदेवी भी रहरहकर कलेजे में तीर भोंक देती । दरोगाजी गम को भुलाने के लिये खेतीबारी में दिल लगाने लगे । उनकी मेहनत से अनुपजाऊं जमीन भी अन्न उगलने लगी पर दरोगाजी का स्वास्थ्य साथ छोड़ने लगा । सूरज डूब रहा था दरोगाजी सबसे बेखबर खेत में पसीना बहा रहे थे । दरोगाजी को काम करते हुए देखकर

रघु के पांव ठिठक गये वह दरोगाजी के पास गया और बोला दरोगाजी क्यो मजदूरों जैसे रात दिन खटते रहते हो । अरे ये उम्र काम करने की नही है । आराम करने की है पोता पोती खेलवाओं, बहू बेटों से सेवा करवाओ ।
दरोगाजी बोले– जब तक हाथ पांव आंख ठेहुना सलामत है तब तक किसी का आश्रित नही रहूंगा । रघु जीवन एक जंग है इसे जीतने का प्रयास जब तक सांस है तब तक करता रहूंगा । अब तो हमारे जीवन की दूसरी जंग शुरू हो गयी है ।
रघु–दरोगाजी आपको हाड़ निचोड़ने की क्या जरूरत है । अरे आप तो अपने पेंशन से चार आदमी को और पाल सकते है ।
दरोगाजी–कह तो ठीक रहे हो रघु मेहनत करने में बुराई क्या है ? अभी तो स्वस्थ हूं । काम करने लायक हूं । गरीब मां बाप की औलाद हूं । मैंने बहुत दुख उठाये है । मां बाप को आंसू से रोटी गीला करते हुए देखा है मैंने । मां बाप के आर्शीवाद से कहां से कहां पहुंच गया । आज मेरी औलाद साथ नही दे रही है । बेटे मुझसे दूर होते जा रहे है । क्या यह किसी नरक के दुख से कम है । खैर किसी जन्म के पाप का फल मिल रहा होगा मुझे ।
रघु–दरोगाजी आपकी तबियत ठीक नही लगी रही है ।
दरोगाजी–हां कुछ दिनों से रह रहकर सांस जैसे अटक जा रही है । ठीक हो जायेगा । कोई चिन्ता की बात नही है । चिन्ता तो बस अपनों से है जिसके लिये सपने बुने थे वही दिल में छेद कर रहे है ।
रघु–दरोगाजी मैं भी उस दिन दंग रह गया जब आपके बडें ने आपको बेटी की गाली दी । सफेद रंगे सिर के बाल उखाड़ने तक की धमकी दिया था। वह भी आपके दमाद बेटी नाती और नातिन के सामने । उसे ऐसा नही कहना चाहिये था ।
दरोगाजी–नासमझ है । जब उन पर पडेगी तब याद आयेगी मेरे साथ जो वे कर रहे हैं । वे हमारे लिये नही खुद के जीवन में कांटा बो रहे हैं । हमारी तो बित गयी है । थोड़े दिन का और मेहमान हूं । देखना यही लोग आंसू बहायेगे । मेरे छोड़े रूपये को पाने के लिये रात दिन एक कर देगें । रूपये और मेरी विरासत तो पा जायेगे पर दिल में कसक तो उठेगी जरूर । अब तो मेरी हिम्मत ही मेरा सहारा है रघु जिस दिन मेरी हिम्मत छूटी मै समझो गया उपर ।
रघु–दरोगाजी ऐसा ना कहो आप तो दीर्घायु होओ और स्वस्थ रहो । अब मैं चलता हूं । देखो अंधेरा छा गया है । आप भी घर जाओ भौजाई राह ताक रही होगी ।
दरोगाजी–दुनिया मतलबी है । घर में तो खौफ डंसता रहता है । खड़ी फसलों के साथ बाते कर मन हल्का हो जाता है । ठीक है । चलो मैं भी चलता हूं । रघु अपने घर की ओर दरोगाजी अपने घर की ओर चल पड़े ।
दरोगाजी घर आये हैण्डपाइप चलाकर बाल्टी में पानी भरे,हाथ पांव धोये । एक लोटा पानी पीकर खटिया पर बैठे। फिर ना जानो शरीर को कौन सी व्याधि पकड़ ली । दरोगाजी की तबियत बिगड़ने लगी । रात बडी मुश्किल में बिती सुबह होते होते तबियत ज्यादा खराब हो गयी । हालत इतनी खराब हो गयी कि बिस्तर से उठा नही गया ।दो दिन वही बिस्तर पर पड़े पड़े कराहते कराहतें एकदम से टूट गये । बड़ीी मुश्किल से दीवाल के सहारे बैठ पाते । बैठते हीं चक्कर आने लगते । बिगड़ती हालत में बड़बडाने लगे । दरोगाजी की तबियत खराब है कि खबर उनकी बेटी के देवर सत्यानन्द को लगी वह भागकर दरोगाजी को देखने गया । वहां उनकी दयनीय दशा देखकर सत्यानन्द घबरा गया दरोगाजी की तबियत बिगड़ती देखकर सत्यानन्द ने दरोगाजी के छोटे बेटे रामानुज को साथ लेकर अस्पताल में भर्ती करवाया । मर्ज डाक्टरों की समझ में नही आयी । दर्द में बड़बडाते हुए देखकर एक डाक्टर ने तो पागलखाने भेजने तक की सिफारिस कर दी । जबकि

दरोगाजी को मस्तिष्क ज्वर था ,दो दिन में जानलेवा हो गया था । डाक्टर बीमारी को नही समझ पाये। दरोगाजी दो दिन अस्पताल में तड़पते रहे इसी बीच बेटा मझला दयानुज शहर से आ गया। दरोगाजी दयानुज से लड़खड़ाते हुए बोले तुम तीनो भाई आपस में लड़ना नही । मेरी चल अचल सम्पति के चार हिस्से कर लेना । तीन हिस्सा तो तुम तीनों भाईयों का होगा और चौथा हिसा तुम्हारी नयी मां का । सत्यानन्द से बोले बेटे दमादजी हृदयानन्द बीटिया सेवामती,नानित सुमन,रूपेश और दिनेश अभी नहीं पहुंचे क्या ? बस दो दिन में इतना ही बोल पाये थे । इसके और कुछ भी नही बोल पाये। जबान पर जैसे ताला लटक गया पर आंखों से आंसू ऐसा बहना शुरू हुआ की रूका नही । सम्भवतः दरोगाजी की अन्तिम इच्छा बेटी दमाद से मिलने की थी हालत और अधिक बिगड़ने लगी तब सत्यानन्द बनारस लेकर भागा । बनारस जाते समय रास्ते में हर जंग जीतने वाले दरोगाजी मौत से हार गये । बड़े बेटे समानुज जो दरोगाजी से झगड़कर चला गया था उसे खबर दी गयी पर वही न आने की जिद पर अड़ा रहा । बेटी दमाद खबर लगते ही पन्द्रह सौ किलोमीटर दूर शहर से दरोगाजी के अन्तिम संस्कार में शामिल होने के लिये चल पड़े ।
मौत के दूसरे दिन दरोगाजी के मृतदेह को सजाया गया । मातमी धुन बनजे लगी पर हजार घर वाले गांव में दरोगाजी के मृतदेह का लंगोट पहनाने वाला कोई न मिला । आखिरकार छोटी उम्र का सत्यानन्द ने अपने हाथों से लंगोट पहनाया । दोपहर ढलने को आ गयी ट्रेन लेट होने के कारण बेटी दमाद नही पहुंच पाये । दरोगाजी की आखिर बाराता ;जनाजाद्ध निकल पड़ा । आगे आगे चार कंधों पर दरोगाजी का मृत देह चल रहा था पीछे पीछे बैण्डबाजा वाले मातमी धुन बजाते हुए । सौभाग्सबस चार कंधों में दो कंधे उनके छोटे और मझले बेटे के शामिल थे ।बैण्डबाजे को देखकर कुछ लोग छींटाकसी करने से बाज नही आ रहे थे । कुछ लोग कर रहे थे कि दरोगा की दूसरे ब्याह की बारात में भले ही बैण्डबाजा नही बजा तो क्या आखिरी बारात में बीटिया की ससुराल वालो ने तो बजवा ही दिया ।कोई कहता अरे ये जनाजा नही दरोगा के आखिरी ब्याह की बारात निकल रही है । भले ही कुछ लोग छींटाकसी कर रहे थे पर सच्च तो यही था ।
दरोगाजी का जनाजा निकलने के घण्टे भर बाद बेटी दमाद भी आ गये पर जनाजा तो निकल चुका था । काफी मशक्कत के बाद हृदयानन्द और सेवावती श्मशान पहुंचे पर क्या दरोगाजी का मृतदेह गोमती नदी के किनारे आठमन लकड़ी की चिता में भस्म होकर राख हो चुका था । चिता को पांच मटके पानी से ठण्डे किये जाने का कर्मकाण्ड शुरू था । इसी बीच हृदयानन्द और सेवावती ने अश्रुपूरित श्रध्दांजलि अर्पित की । शेप कर्मकाण्ड की प्रक्रिया तनिक देर में पूरी हो गयी । पचतत्व में विलीन दरोगाजी के मृतदेह के अवशेप को गोमती नदी को समर्पित कर दिया गया। चिता एकदम ठण्डी हो चुकी थी । गर्माहट बची थी तो बस चल–अचल सम्पति के बंटवारे को लेकर ।

रिश्ता

दुनिया में सबसे बडा कोई रिश्ता है तो वह है दर्द का रिश्ता । जानते हुए भी आज का आदमी मतलब के पीछे भागने लगा है । आज के इस युग में परमार्थी लोग तो कम है पर आदमियत को जिन्दा रखे हुए है । सेवाराम को विचार मंथन में देखकर ध्यानबाबू उनकी तरफ मुड गये और उनके सामने खड़े हो गये पर सेवाराम बेखबर थे । सेवाराम को बेखबर देखकर वह जरा उची आवाज में बोले क्या बात है सेवाराम क्यो नजरअंदाज कर रहे हो ।
सेवाराम हड़बड़ा कर बोले अरे ध्यानबाबू आप ?
ध्यानबाबू– हां मै। कहां खो हुए थे ।

सेवाराम–कही नही बाबू । सोच रहा था आज का आदमी जिस तरह से रिश्ते को रौद रहा है । अगर ऐसा ही होता रहा तो आदमी आदमी का ही नही होगा । आदमियत का रिश्ता भी लहूलुहान हो रहा है ।
ध्यानबाबू– आज का आदमी तो बस अपने स्वार्थ में जी रहा है ।
सेवाराम–स्वार्थ की बाढ में कहीं रिश्ते न बह जाय ।
ध्यानबाबू–सच चिन्ता का मुद्दा बन गया है रिश्ते का कत्ल ।
सेवाराम–ठीक कह रहे हो आज का आदमी एक दूसरे को टोपी पहनाने में लगा हुआ है । रिश्ता भी स्वार्थसिध्दि के लिये बनाने लगे है ।
ध्यानबाबू–ऐसे रिश्तेदार तो आदमियत का कत्ल ही करेगे ।
सेवाराम–ऐसा ही हो रहा है । दो साल भर पहले टेकचन्द साहूकार गिड़गिड़ाते हुए बोले सेवाराम मेरी मदद कर दो पांच हजार रूपया दे दो बस हफ्ता भर के लिये । टेकचन्द की गिड़गिड़ाहट के आगे मैं मना नही कर पाया नेकचन्द से उधार लेकर दिया था । टेकचन्द ने दो साल में कभी सौ कभी पच्चास ऐसे रो रोकर दिया कि पता ही नही चला । जबकि मुझे नेकचन्द को एकमुश्त हफ्ते भर के अन्दर देना पड़ा था । टेकचन्द को एक अखबार वाले को पच्चास सौ रूपया देना है । एक विज्ञापन छपवा लिये है अपनी दुकान का । अखबार वाला मेरे साथी आज पांच साल से अधि हो गया पैसा नही दिये । जब मांगो तो टाल जाते हैं टेकचन्द आजकल की कहकर । अखबार वाले से मेरा रिश्ता पैसे की वजह से खराब कर दिये ।
ध्यानबाबू–टेकचन्द साहूकार तो इनकी टोपी उनको उनकी उनको पहनाने में माहिर है । उसे रिश्ते से क्या लेना । वो बस सौदागर है।सेवाराम क्यों झांसे में आ जाते है स्वार्थियों के ।
सेवाराम–बाबू हम तो रिश्ते के सोधेपन के भूख है । आदमी में आदमियत का भाव ढूढते रहते है । परमार्थ में असीम आनन्द है पर मतलबी लोग है कि घाव दे जाते है । सभी टेकचन्द साहूकार जैसे नही होते ध्यानबाबू।
ध्यानबाबू–वो समीर भी तो तुमको ठग गया । उसे तुम भाई मानते थे । कई सालों तक अपने घर में रखे । तुम्हारी वजह से कामयाब आदमी बना है पर तुम्हे एहसान के बदले क्या दिया बदनामी और रिश्ते को मुट्ठी भर आग का दहकता घाव ना ।
सेवाराम–समीर खुश है अपने कामयाबी पर । भले ही मुझे रिश्ता घाव दे गया पर आपको हकीकत मालूम है ना । आप मेरी नेकी को हवा दे रहे हो ना क्या यह कम है ?दुनिया में अभी रिश्ते का मान रखने वाले लखन और बलदेव देवता किस्म के लोग है ध्यान बाबू ।
ध्यानबाबू– कहां ऐसे लोग मिल गये सेवाराम ?
सेवाराम– दिल्ली में जब साला कौशल जब डेगू की चपेट में था । मौत के मुंह में से निकला है लखन भईया की वजह से । पन्द्रह साल पहले मां कैंसर से जूझ कर मरी और पिता साल भर पहले फेफडा गल जाने की वजह से ।
ध्यानबाबू–ये लखन देव कौन है ?
सेवाराम– बलदेव इंजीनियर है पर तकदीर ठगी जा जुकी है किसी शाप पर काम करता है और लखन की नौकरी छूट गयी है जो अब चौकीदार की नौकर करके परिवार पाल रहे है । यही तो है वे फरिश्ते जो झोपड़पट्टी में और तकलीफ के समन्दर में डूबकर भी रिश्ते पर मर मिटने को तैयार रहते है ।
ध्यानबाबू–वो कैसे ?
सेवाराम–बाबू कौशल की जान लखन भईया की वजह से बची है । जब पास के नर्सिगहोम वालो ने हाथ खड़ा कर लिये तो लखनभईया दिल्ली के एक बड़े नर्सिगं होम में कौशल को मरणासन्न

स्थिति में ले गये । वहां डाक्टर ने पच्चास हजार रूपये जमा करवाने को और दस बोतल खून तुरन्त देने को कहा गया।
लखन– डांक्टर साहब मैं पच्चास नही साठ हजार अभी जमा कर दूंगा भले मुझे बाद में अपना कच्चा घर बेचना पडे । खून भी दे दूंगा अपने तन को निचोड़कर पर गारण्टी दो कि मेरे भाई को कुछ नही होगा ।
डाक्टर– कोई गरण्टी नही । बचेगा तो अपनी किस्मत से या मरेगा तो अपनी मौत से ।
लखन– डाक्टर साहब आप कसाई है क्या ?
बलदेव–भईया सब धन्धा है । चलो अब सरकारी अस्पताल ले चले किस्मत पर ही भरोसा करना है ।
लखन और बलदेव कौशल को लोहिया अस्पताल में ले गये बड़ी नाजुक स्थिति थी पर डाक्टरों और स्टाफ ने बहुत सहानुभूति दिखायी कौशल को आपातकालीन कक्ष में रखा गया जबकि एक पलंग पर तीन तीन डेगू पीड़ित थे और दिल्ली डेगू महामारी बन हुआ था । लखन और बलदेव ने अपना–अपना खून दिया। रेडक्रास सोसाइटी से खून मैं खुद ले कर आया था ।
ध्यानबाबू– जब डेगू का आतंक था तब दिल्ली में थे क्या ?
सेवाराम–कौशल के लोहिया अस्पताल में भर्ती होने के बाद खबर लगी थी । पति–पत्नी तुरन्त निकल गये थे । दूसरे दिन दोपहर में अस्पताल पहुंचे थे। अस्पताल तो मरघट बना हुआ था । देखकर हम घबरा गये हमारी मैडम को तो रो रोकर वैसे ही बुरा हाल था ।
ध्यानबाबू–सच डेगूं ने तो दिल्ली पर कहर बरसा दिया । हम तो अखबार में पढकर रो पड़े थे । जिन लोगो ने यह हादशा देखा होगा तो उनका हाल सोच कर कंपकपी छूट जाती है।
सेवाराम– कौशल की जान बच गयी । लखन और बलदेव देवदूत साबित हुए कौशल के लिये ।
ध्यानबाबू– सच लखन और बलदेव ने आदमी होने का फर्ज बड़ी ईमानदारी से निभाया । इंसानियत के रिश्ते को अपने लहू से सींचा । बहुत बड़ा काम किये दोनो । एक परिवार बिखरने से बच गया ।
सेवाराम–छोटे छोटे दो बच्चे है बीबी है । कुछ हो जाता सब अनाथ हो जाते । आज के जमाने में तो सगे भी दूर होते जा रहे है । कौन किसका पेट –परदा चलायेगा ? कुछ लोग तो मीठी मीठी बाते करते है सिर्फ मतलब के लिये । जहां मतलब निकला खंजर कर मार कर मुट्ठी भर आग और डाल दिये ताकि तडपते रहो ।
ध्यानबाबू–लोग बहुत मतलबी हो गये है जबकि सब जानते है आदमी मुट्ठी बांधकर आया है हाथ फैलाये जायेगा ,इसके बाद भी छल,धोखा,जालसाजी,अत्याचार,शोरूण,दोहन यहां तक देह व्यासपार अंग व्यार तक करने लगा है आजका आदमी । आज आदमी स्वार्थ में गले तक डूब गया है ।
सेवाराम–अब तो मान मर्यादा पर भी स्वार्थ ने दहकता निशान छोड़ना शुरू कर दिया है । पति–पत्नी का चोंच लड़ी मामला कोर्ट में । तलाक तक हो जा रहे है ।दहेज दानव की फुफकार तो आज के युग में और डराने लगी है । कभी लोग रिश्ते पर मर मिटते थे आज स्वार्थ के लिये गला काटने के लिये तैयार है । अरे मां–बाप जिसे धरती का भगवान कहते है वे जीवन की सांध्य बेला में वृध्दाश्रम / अनाथ आश्रम का पता पूछते सड़क पर भटक रहे है । रिश्ते की बगिया में जैसे पतझड आ गया है । रिश्ते की बगिया के फूल कब खिलखिलायेगे ?
ध्यानबाबू– पाश्चात्य संस्कृति का जहर हमारी संस्कृति को ले डूबेगा । हमारे देश में अतिथि देवो भवः मांता–पिता धरती के भगवान है आदि ऐसे अनेक रिश्ते के सोधेपन खिलखिलाते थे पर आज पाश्चात्य संस्कृति ने स्वार्थ की आग में झोक दिया है जैसे ।

सेवाराम–वैश्वीकरण के जमाने में आदमी सिर्फ अपने लिये जी रहा है। बिरले ही लखन,बलदेव,अनिल और उसकी घरवाली जैसे लोग है ।
ध्यानबाबू– अनिल और उसकी घरवाली बीच में कहां से आ गये ।
सेवाराम–अनिल और उसकी घरवली, बलदेवकी घरवाली और लखन भईया की घरवाली सभी ने कौशल की बीमारी में रात दिन एक कर दिया था ।ऐसे लोग इंसानियत को जिन्दा रख सकते है । इंसानियत का रिश्ता कभी नही मरेगा जब तक गिने चुने लोग बचे है आदमी के आसूं का मोल समझने वाले ।
ध्यानबाबू– धनी–गरीब का, मालिक–मजदूर का, अफसर– कर्मचारी का जाति–बिरादरी का आदि ऐसे बहुत कांटे आदमियत की छाती में छेद कर रहे है । सामाजिक बुराईयां तो और ही मानवीय रिश्ते को तार तार कर रही है ।
सेवाराम– सामाजिक बुराईयां मानवीय संवदेना का नाश कर रही है । आदमी–आदमी के बीच नफरत की खाई खोदती है ,जिससे अब आदमी आदमी को नही होता है । पद दौलत और जाति की श्रेष्ठता का खुलेआम प्रदर्शन होने लगा है । ये सब तो आदमियत के रिश्ते के लिये किसी घातक जहर से कम नही ।
ध्यानबाबू–ठीक कह रहे सेवाराम पर नाउम्मीद होने की जरूरत नही है । देखो दिल्ली में कुछ लोग पक्षी और आदमी के बीच रिश्ता जोड़ रहे है । दिल्ली का पक्षी अस्पताल दुनिया में मिशाल है ।
सेवाराम–बाबू ऐसी ऊंची सोच हो जाये तो फिर ये लूटखसोट,रिश्वतखोरी,भदेभाव सब खत्म हो जाये । अमानुष और स्वार्थी किस्म के लोग मुट्ठी भर आग बोते रहेगे। देखो तुम्हारे पड़ोसी मकान नम्बर चौदह में रहने वाला यू.एन.कुकूरकाटव पड़ोसियों के घर में ताकझाक करता फिरता है।दूसरों की बीन बेटियों को बुरी नजर से देखता है । बुरी नियति से पड़ोसी के घर तक में घुस रहा था । पड़ोसी की इज्जत बच गयी । राह चलती महिलाओं तक को छेड़ता है । कहते है पड़ोसी भगवान होता है । यू.एन.कुकूरकाटव परिवार तो शैतान से कम नही है । ऐसे लोग रिश्ते का खून ही करते है ।
ध्यानबाबू–ऐसे लोग मानवता के लिये कोढ की खाझ है । ऐसे लोग रिश्ता की गरिमा क्या समझेगे ? इनका सामूहिक–सामाजिक बहिष्कार होना चाहिये । रिश्ते की आन तो रामलखन,बलदेव,अनिल और ऐसे लोग होते है जो रिश्ते को सद्भावना,संवेदना का अमृतपान कराते है ।
सेवाराम–ठीक कह रहे हो बाबू ऐसे लोगो ने इंसानियत को जिन्दा रखा है । यू.एन.कुकूरकाटव परिवार जैसे लोग तो मानवता और पड़ोसी के रिश्ते के लिये नासूर है।
ध्यानबाबू–हां सच है । सुना है तुम्हारे एक रिश्ते पर दैवीय पहाड़ टूट गया है ।
सेवाराम–बाबूराम फूफाजी मर गये । बाबू रिश्ता टूटा नही है । मेरे फूफाजी मरे है । दुनिया भर के नही ।
ध्यानबाबू–ठीक कह रहे हो । ये रिश्ते तो अमर है जिस पर परिवार और समाज जीवन पाता है ।
सेवाराम–बाबू हमारे यहां तो फूफाजी का रिश्ता बहुत सम्मानित होता है ।
ध्यानबाबू– फूफा और मामा का रिश्ता बहुत नजदीकी का और पवित्र रिश्ता होता है । जीवन मरण तो प्रभु के हाथ में है । रिश्ते का सोधापन तो सदा हवा में समाया रहता है । अपनेपन और मानवता को जीवित रखता है । कुछ लोग तो बस खुद के लिये रिश्ते जोड़ते है । मतलब निकलते ही दिल के टुकड़े कर देते है ।कुछ लोग रिश्ते को ऊंचाई देकर अमर हो जाते है । हम जिस की पूजा करते है । वे भी तो हमारे जैसे थे । जिनके साथ आज आदमी और भगवान अथवा देवता का रिश्ता कायम हो गया है क्योंकि वे आदमियत के रिश्ते का इतिहास रचा है ।
सेवाराम–ठीक कह रहे हो बाबू आदमियत का रिश्ता तो सर्वश्रेष्ठ और महान है ।

ध्यानबाबू–आदमी को धर्मवाद,जातिवाद,छोटे–बड़े के भेद,अमीर–गरीब की खाई को पाटकर ,आदमी के सुख–दुख में काम आकर आदमियत के रिश्ते को अधिक प्रगाढ बनाने का बीड़ा उठाना चाहिये । रिश्ते का सोधापन समय के आरपार प्रवाहित होता है सेवाराम ।
सेवाराम–आओ हम सब आदमियत के रिश्ते को धर्म बनाने की कसम खाये क्योंकि आदमियत ही सबसे बडा धर्म और सबसे बड़ा कोई रिशत जगत में है तो दर्द का। इस यथाशक्ति निर्वाह करने वाले लोग सच्चे आदमी कहलाने के हकदार होते है ।
सेवाराम की ललकार सुनते ही ध्यानबाबू सहित अनेक लोग हाथ से हाथ मिलाने लगे आदमियत के रिश्ते को सोधापन देने के लिये ।

हरा घाव

आधी रात बीत चुकी थी पर मुट्ठीराम घर नही आया । अधिकतर वह बच्चों के सो जाने के बाद ही घर पहुंचता था । बाप के आने की इन्तजार कर बच्चे सो चुके थे । आधी रात हो जाने के बाद भी मुट्ठीराम घर नहीं पहुंचा । सुखिया मुट्ठीराम की अंधी मां डयोढी पर बैठे बाट जोह रही थी । आने जाने की आहट से वह चौक कर पूछती कौन है–बेटा मुट्ठीराम तू आ गया क्या ? तनिक देर में फिर खटखट की आवाज आयी । आवाज सुनकर सूखिया से नही रहा गया वह पोते से बोली देख रामू बेटवा तेरा बाबू आ गया क्या ? किसी के आने की आहट तो लग रही है ।
रामू–अरे आजी काहे को बार बार टोंका टांकी करती हो । भैस पूछ पटकी है । पढ रहा हूं प्ढ लेने दो । वैसे भी डिबरी में कुछ सूझ तो रहा नही है । आजी तुम हो कि बार बार टोंका टांकी कर रही हो ।
सूखिया–मै क्या देखू अंधी कि तुम कैसे पढ रहा है ।बेटा पढ तू चाहे जैसे पढ । तू पढलिख जाता तो तेरे बाप का उध्दार हो जाता । तेरा बाप मुश्किल में हमेशा रहता है । बेचारा किरीन फूटने से पहले चला जाता है । आधी रात तक खून पसीना करता है बदले में क्या मिलता है ? बस दो किलो अनाज की मजदूरी । भगवान इतना गरीब क्यों बना दिया हम मजदूरों को ।
मुट्ठीराम के घर आठ प्राणी थे । दो बकरी और एक अधिया की भैस सहित चार छः मुर्गिया भी थी । भाईयो ने पहले ही किनारा खींच लिया बूढी और अधी मां को मुट्ठीराम के हवाले कर ।रामू डेबरी की रोशनी में क ख ग जोर जोर से पढ रहा था । रामरती रोटी और आलू का चोखा लालमिर्च नमक तनिक कड़ुवा तेल डालकर बनाकर रामू के पास बैठ गयी । रामू स्लेट पर लिखे शब्द दिखाते हुए कहने लगा मां पढो देखो सही लिखा है ?
रामरती–बेटा तू तो जानता है मैं ही नही तेरा पूरा खानदान अभी तक निरक्षर है । काश तू पढ लिख जाता । बेटा तू ही पढकर सुनाओ ना ।
रामू–सुनो मां क से कबूतर ख से खरगोश तेज आवाज में बोलकर सुनाने लगा ।
रामरती– अच्छा लगता है तेरे मुंह से सुनना बेटवा । ध्यान से पढ ।
सुखिया–रामरती मुट्ठीराम नही आया ना । सुनो जागते रहो की आवाज आने लगे । गांव वाले पहरा देने लगे ।
रामरती–हां माई आ तो रही है । आधी रात बित गयी पर वे अभी तक नही आये ।
रामू मां और दादी का बात सुनकर चुप हो गया । अनमने मन से उठा और मुंह धोने लगा ।
रामरती–बेटवा तू खा ले और सो जा । अब अपने बाप की राह ना ताक उनका तो यही हाल है । बंधुवा मजदूर जो ठहरे ।
रामू–आखों के आसूं छिपाते हुए बोला मां भूख नही लगी है । बापू जब तक नही आते है तब तक मैं पढता हूं । तू भी मां मेरे पास आकर बैठ जा ना ।
रामरती–हां बेटवा आती हूं ।

सुखिया–रामू...
रामू–हां दादी ।
सुखिया–नींद नही लग रही है ?
रामू–नही दादी ।
सुखिया–तू अपने बाप पर गया है । अपने बाप जैसा मेहनती है । खूब ध्यान से पढना अपने बाप का नाम रोशन करना । तेरे दादा जब कलकत्ता कमाने गये थे तब तेरा बाप मुट्ठीराम तुमसे भी छोटा था ।
रामू– जब दादा वापस आये तब मेरे बापू कितने बड़े हो गये ।
सुखिया–तेरा बापू कितना बड़ा हो गया है तेरे सामने है ।
रामू–मतलब दादा नही लौटे ?
सुखिया–हां वे कलकत्ता से नही लौटे । पखण्डी लाला की मार खाकर गये फिर मुंह नही दिखाये । ना जाने धरती निगल गयी या आकाश खा गया । सुखिया की अंधी आंखों से आंसूओ धार फूट पड़ी।
रामू– दादी के आंसू पोछते हुए बोला दादी लाला से झगड़ा क्यों हो गया था दादा से ।
सुखिया–बेटा आजादी के पहले की बात है । तेरे दादा कलकत्ता में चटकल में काम करते थे । साफ सुथरे कपड़े पहनते थे । रंग रूप भी काफी अच्छा था । उनको देखकर कोई कह नही सकता था कि कोई छोटी जाति का होगा । नीम की छांव में खटिया झल के लेटे हुए थे । पाख्ण्डी लाला उनको देखकर बोले क्यों रे कोइरी का दुल्हा बनकर बैठा रहेगा कि मेरा भूसा भी ढोयेगा । तेरे दादा कुछ बोलते उसे पहले पाखण्डी लाला गाली देने लगा गन्दी गन्दी । तेरे दादा बोली लालाजी गाली क्यो दे रहे हो ?
इतना सुनते ही पाखण्डी लाला लाल हो गया । तेरे दादा पर हाथ छोड़ दिया । तेरे दादा ने पाखण्डी लाला का हाथ पकड़ लिया। बस क्या पूरे गांव में शोर मच गया कि एक चमार ने पाखण्डी लाला पर हाथ छोड़ दिया । गांव के दबंगो ने उनका जीना मुश्किल कर दिया । वही गये फिर लौटकर नही आये । पाखण्डी लाला ने गांव के दबंगो से सांठगांठकर खसरा खतौनी से तेरे दादा का नाम काट दिया । एकड़ों जमीन के मालिक को पाखण्डी लाला उसका नाश हो भूमिहीन बना दिया । तेरा बाप दर–दर की ठोंकरे खा रहा है । भूमिहीन बंधुआ मजदूर हो गया है जब से बेचारे की आंख खुली । बेटा तू पढ लिखकी अफसर बन जाता तो तेरे बाप को चैन नसीब हो जाता ।बेटा मेरी बात गांठ बांधकर रखना पाखण्डी लाला जैसा अन्याय कभी ना करना ।
रामू–दादी ना अन्याय करूंगा और ना ही करने दूंगा ।
दादी– पोते की बात चल ही रही थी कि इसी बीच रामरती अरे अम्मा अब तो खा लेती रामू के बाबू आ जायेगे।किसी काम में उलझ गये होगे। बंधुआ मजदूर का क्या जीवन ?
सुखिया– बहू तेरे दर्द को समझ रही हूं । मुट्ठीराम के कंधे से कंधा मिलाकर गृहस्ती की गाड़ी खींच रही हो पर जरूरते नही पूरी हो रही है । खेतिहर भूमिहीन उपर से बंधुवा मजदूर क्या उन्नति कर पायेग सेर भर की मजदूरी में । रामरती बेचैन थी अन्दर बाह कर रही थी । उसे कोई आंशका घेर रही थी । मुट्ठीराम की प्रतीक्षा में सुखिया की अंधी आंखों में भी रह रह कर नींद का झोंका आ जा रहा था । रामू भी बाप को आने में हो रही देरी से बहुत परेशान था । वह घर से कुछ दूर तक राह ताक आता फिर किताब उल्टने पलटने लगता । बस्ती मे पूरी तरह सन्नाटा पसर चुका था । रह रह कर कुत्ते सन्नाटे को तोड़ रहे थे पर मुट्ठीराम के घर में सभी इन्तजार में बैठे हुए थे । रामू नीद में डेबरी के उपर गिरते गिरत बचा ।
रामरती–रामू तुमको नींद आ रही है खाकर सो जा ।

रामू–हा मां बाबू की इन्तजार तो बहुत कर ली पर बाबू अभी तक तो नही आये । ला मां खाना दे खाकर सो जाता हूं । मां बाबू आये तो जगा देना नही तो कल भी बाबू को नहीं देख पाऊंगा कई दिनों से तो ऐसे ही हो रहा है ।
रामरती–रामू तू खा मै तेरे बाबू को महुवा तक देख आती हूं ।
रामू–ठीक है मां ।
रामरती बाहर निकली उसे कुछ दूर मुट्ठीराम आता हुआ दिखाई दिया । वह दौड़ लगाकर मुट्ठीराम के पास पहुंच गयी । उसका हाथ पकड़कर रोने लगी ।
मुट्ठीराम डर गया । वह हिम्मत करके बोला भागवान क्यो रो रही हो ? क्या हो गया ? बच्चे तो ठीक है ।
रामरती–इतनी देर क्यों कर दिये । अंधी मां इन्तजार में बैठी है । बच्चे तुम्हारी इन्तजार में बिना खाये बैठे बैठे सो गये ।
मुट्ठीराम– भागवान मैं ठहरा बंधुवा मजदूर कोई दफतर में तो काम करता नही कि आने जाने का समय निश्चित है । अरे इतनी रात में भी जमीदार बोले है सुबह जल्दी आ जाना । आजकल तुम्हारा मन काम में नही लग रहा है ।
रामरती–आग लगे ऐसी हवेली में जहां आदमी को आदमी नही समझा जाता । अरे रात बितने को आ गयी खेत से हवेली तक खून को पसीना करते फिर भी जल्दी आ जाना । कैसे निर्मोही है ये खून चूसने वाले जमीदार लोग ।
मुट्ठीराम–ये बाल्टी लो घर चलो ।
रामरती–बाल्टी में क्या है ? अंधेरे में कुछ सूझ नही है ।
मुट्ठीराम– रस है ।
रामरती–कैसा रस ?
मुट्ठीराम– सारी बाते यही कर लोगी कि घर भी चलोगी । गुड़ बना रहा था ना । जिस कड़ाह में गुड़ बनाया हूं उसी का धोवन है । बच्चे गरम गरम एक एक गिलास पी लेगे ।
मुट्ठीराम के घर में कदम रखते ही सुखिया बोली आ गया बेटा तू ?
मुट्ठीराम– आ तो गया मां ।
रामू आंख मसलते हुए डठा और लोटा में पानी भर लाया । अपने बाबू को लोटे का पानी थमाते हुए बोला लो बाबू हाथ पांव धो लो । बहुत थक गये होगे ।
मुट्ठीराम–हां बेटा । मुझे आराम तो तब मिलेगा जब तू पढलिखकर बड़ा आदमी बनेगा । बेटा बाल्ठी में गरम रस है पी लो कहते हुए धम्म से टूटी खटिया पर पसर गया पीड़ा के अनगिनत भाव लिये ।
सुखिया–मुटठीराम बेटवा तू बहुत थक गया है ला तेरा सिर दबा देती हूं ।
मुट्ठीराम– नही मां तू आराम कर ।
सुखिया–बेटा दो रोटी खा ले । तू आराम कर । मै तो दिन रात आराम करती रहती हूं । बेटा इतनी रात तक दूसरों के पसीने पर अय्यासी करने वाला जमींदार किस काम में लगा कर रखा था ।
मुट्ठीराम– जमींदार खाना खाकर हाथ धोने बाहर निकले । मैं इतने मे खेत से हवेली पहुंच गया इतने में बिजली आ गयी बस क्या गन्ना काटकर रखा हुआ था । जमींदार बोले मुट्ठीराम घण्टे भर का काम है गन्ना पेर कर गुड़ बना लो फिर चले जाना। अरे घर जाकर सोना ही तो है । ये ले ण्क चिलम गांजा तलब लगे तो पी लेना । मरता क्या ना करता ? मना भी तो नही कर सकता

था ना । गन्ना पेरा गुड़ बनाया । गोदाम में रखा और भागे भागे आ रहा हूं दो लोटा कडाह का धोवन लेकर ।
सुखिया–तू कितनी तकलीफें उठा रहा है । तेरी तकलीफ को जानकर मेरा दिल रो उठता है । एक तेरे बाप था ना जाने कहां गुम हो गये । चालीस साल हो गया । तू तकलीफें के पहाड़ तले दबा कराह कराह कर हमारा बोझ ढो रहा है । बेटा कोशिश किया करो घर जल्छी आने की ।
मुट्ठीराम–मां करता तो हूं पर जमींदार के गुलाम जो ठहरे ।
सुखिया–बेटा जा सो जा सुबह काम पर जाना है। रामरती डेबरी बुझा दे तू भी सेा जा दिन भर खटती रहती है ।
रामरती–हां अम्मा डेबरी बुझा दी हूं सब सो गये तुम भी सो जाओ।
मुट्ठीराम का पूरा परिवार नींद के आगोश में चला गया । कुछ ही देर में मुर्गा बोलने लगा । रामरती करवट बदलती रही । कुछ ही देर में चिडिया चांचाव करने लगी । वह झटपट उठी रात मे मुट्ठीराम जो रस लाया था चूल्हे पर गरम करने के लिये चढा । मुट्ठीराम कुछ ही देर में उठ गया । दातून किया । इतने में रामरती लोटे मे रस और एक गिलास मुट्ठीराम को देते हुए बोली लो गरम गरम पी लो । मैं गोबर घूरे में डाल आती हूं ।
मुट्ठीराम–ठीक है कह कर वह गिलास मुंह को लगाया ही था कि बड़े जमींदार का बदमाश चचेरा भाई ओ मुट्ठिया ....ओ मुट्ठिया कहां मर गया । सूरज सिर पर चढ आया । इसकी सुबह ही नही हुई ?
जमीदार की आवाज कान में पड़ते ही मुट्ठीराम चिल्लाया आया बाब..... कह कर वह गिलास का रस रखकर दौड़ लगा दिया । रामरती फंटी आंख देखती रह गयी । तकलीफों के भंवर में डूबे उतिरियाते मुट्ठीराम गृहस्ती की गाड़ी खींच रहा था । खुद निरक्षर रामू की पढाई के प्रति बहुत सजगत था । जबकि जमीदार के काकाश्री ने कई बार कहा मुट्ठी क्यों रामू को प्ढाने की चिन्ता तुमको लगी है । अरे हर पढने वाले को सरकारी नौकरी थोड़े ही मिल जाता है । तू कहां तक पढा पायेगा । प्राइमरी पास करवा ले बहुत है । आगे की पढाई के लिये पैसा लगेगा तू कहां से लायेगा । अरे अपने साथ उसे मेरे खेत के काम में लगा ले । वह भी जी खा लेगा तेरे जैसे ।
मुट्ठीराम–बाबूजी मेरा सपना ना उजड़ों कहकर गिडगिड़ाने लगता ।
मुट्ठीराम के पसीने के सोधेपन की खुश्बू पूरे गांव में फेलने लगी । रामू पढने में तेज तो था ही पांचवी की परीक्षा अव्वल दर्जे से पास हो गया ।इस खुशी के मौके पर मुट्ठीराम ने पंचों का हाथ भी धुलवाया ।सुखिया की खुशी का ठिकाना न था । इस खुशी को दूना करने के लिये वह रामू की ब्याह की जिद पर अड़ गयी । अपनी जिद पूरी करवाकर खुदा के पास चली गयी । रामू लाख अभावों के बाद भी पढाई में आगे रहा । अपने हौशले के बदौलत गांव से चौदह कोस दूर कालेज की दूरी रोज राज साइकिल से नापकर ग्रेजुएट की पढाई पूरी कर लिया सामाजिक और आर्थिक मुसीबतों हरा घाव लिये ।
रामू के बी.ए.की परीक्षा पास होने की खबर ने पूरी मजदूर बस्ती में नया उजियारा ला दिया । मुट्ठीराम का हौशला अधिक बढ गया वह रामू को और आगे तक पढाने की जिद करने लगा पर रामू घर परिवार की दयनीय दशा को देखकर शहर जाकर दो पैसा कमाना बेहत्तर समझा । वह सेर भर आटा और कुछ दाना भुजैना लेकर शहर की ओर चल पड़ा । बूढे गांव की तरह नये शहर में भी उसे पग–पग पर जाति भेद की की मुट्ठी भर आग झुलसाती रहती । हौशले का धनी रामू मुट्ठी भर आग पग–पग पर बिछी होने के बाद भी पढाई जारी रखा और ऊंची ऊंची डिग्रियां हासिल कर लिया एक मामूली सी कलर्क की नौकरी करते हुए । कम्पनी में भी उसे जातिभेद का अजगर फूफकारता रहता था । अन्ततः रामू की भविष्य जातिभेद का अजगर निगल ही गया । रामू को बड़े

अफसर के रूप में देखने का सपना सजोये मां रामरती भी दुनिया छोड़ चली । दृढ प्रतिज्ञ सम्भावनावादी रामू,रूढीवादी व्यवस्था के अभिशाप से मुक्त पाने की अभिलाषा में रामू गिर-गिर कर भी बढ रहा था धीरे धीरे दिल में हरा घाव लिये ।

बहते आंसू

डूबते को तिनके का सहारा,डाक्टर धरती का भगवान और अनेक कहावते परन्तु जब ये भगवान कहे जाने वाले लोग चन्द सिक्कों के लिये विश्वास खण्डित कर देते है तो शैतान लगने लगते है ।

धर्मराज-क्या कह रहे हो भइया गरीब लाल ?

गरीबलाल-ठीक कह रहा हूं । डांक्टर जिसे भगवान कहते हम नही थकते उसी के हाथों में पत्नी लाचार कराह-कराह कर जिन्दगी बसर कर रही है ।

धर्मराज-शहर के डांक्टर भी ऐसा करने लगे । अभी तक तो गांव के नाम हकीम खतरे जान थे । अब मोटी मोटी रकम लेकर इलाज करने वाले शहर के डाक्टर भी । भइया तुम ऐसे डाक्टर के चंगुल में फंस कैसे गये ।

गरीबलाल-पत्नी के पेट में भयावह दर्द होने लगा । डां.खींचामल वी को दिखाया । इलाज कई दिनों तक चला पर न कन छूटा न भूसी ।दर्द बढता गया ।

धर्मराज- दूसरे डाक्टर को दिखाना था सभी एक सरीखे तो होते नही ।

गरीबलाल-कभी डां. डां.खींचामल वी जल्दी ठीक होने का आश्वासन देते । कभी डां.मैडम दोनों ने मिलकर मति मार दी । पत्नी का अंधविश्वास बढ गया ।

धर्मराज-सचमुच मति मार दी । अरे शहर में एक से बढकर एक डांक्टर है ।

गरीबलाल-काम बिगड़ जाने पर सभी हंसते हैं । वही मेरे साथ भी हुआ । दुख में अपने भी पराये लगने लगे ।

धर्मराज- भइया मेरी तो पलके गीली हो रही है भाभी की कराह सुनकर ।

गरीबलाल-भइया ये दर्द तो जीवन भर का हो गया है । गरीबों के लिये तो मुसीबत मौत के बरोबर होती है । अमीर तो सम्भल जाते है ।हम जैसे गरीब तो कर्ज के दलदल में फंस जाते है ।ऐसे समय में कुछ अमानुष किस्म के लोग घाव खुरच देते है ताकि आंखों में आसूं और दिल पर दर्द की दस्तक बनी रहे ।

धर्मराज-गरीब की चमड़ी हर जगह उधेड़ी जाती है चाहे अस्पताल हो, श्रम की मण्डी हो या दूसरी अन्य कोई जगह ।

गरीबलाल-ऐसा ही किया हमारे साथ डा.खींचामल वी ।दर्द बढने लगता तो दर्द निवारक गोली दे देता कुछ आराम हो जाता । महीनो इलाज के बाद भी रोग बढता चला गया । डांक्टर को भगवान मानने वाले हम लोग डांक्टर की धोखाधड़ी को नही समझ पाये ।

धर्मराज-क्या ?

गरीबलाल- हां धोखधड़ी ।

धर्मराज- मतलब जीवन में मुट्ठी भर आग ?

गरीबलाल-महीने भर के इलाज के बाद डां.खींचामल वी बोले आपरेशन करना होगा क्योंकि पित्त की थैली में पत्थरी है ।

धर्मराज-पत्थरी का पता पहले नही लगा था डांक्टर खींचामल वी को ।

गरीबलाल-क्यों नही चला होगा । पैसा ऐठने का तरीका था ये तो ।

धर्मराज- इसके बाद में क्या हुआ ?

गरीबलाल-डा.खीचांमल और उनकी डांक्टर पत्नी भी पत्थरी का भय दिखाकर डराने लगे । एक दिन डां.मैडम मेरी पत्नी से बोली शकुन्तला आपरेशन जल्दी करवा लो । तुम पत्थरी की बीमरी को छोटी

मोटी बीमारी समझ रही हो । जान लेवा बीमारी है । जिस दिन सांस की नली में फंस गयी तो ब्रहमा भी नही बचा पायेगे । मुझे देखते ही शकुन्तला रोने लगी बोली गुड़िया के पापा मुझे बचा लो । मैं मरना नही चाहती नन्हे नन्हे बच्चों को छोड़कर। मैं मर गयी तो तुम बच्चों को कैसे सम्भाल पाओगे । दफतर जाओगे कि बच्चों का पालन पोषण करोगे ? मैं कुछ समझ ही नही पा रहा था कि माजरा क्या है । बड़ी मुश्किल से शकुन्तला को शान्त करवाया । तब जाकर डाक्टर और डाक्टरानी की एक एक बात बतायी । मैं भी सुनकर घबरा गया । आपरेशन करवाना बेहतर समझा रोज रोज के दर्द से ।

धर्मराज– पत्थरी का आपरेशन तो कोई जोखिम भरा आपरेशन नही है ।

गरीबलाल–बात तो ठीक कह रहे हो पर डां.खीचामल वी ने बहुत बड़ा बना दिया । अब तो किस्मत में मुट्ठी भर आग भर दिया है डा.खीचामल वी ने शकुन्तला की पत्थरी का तीन बार आपरेशन अंग्रेजी के अक्षर वी लिखकर । इस दर्द की आग ने मेरे जीवन का सकून छिन ली है भइया धर्मराज ।

धर्मराज– हे भगवान गरीबो की रक्षा करना इन हाड़मांस के व्यापारियो से ।

गरीबलाल–भइया धर्मराज मेरे मां बाप ने पेट में भूख और आंखों में सपने बसाकर किस तरह मुझे पढाया लिखाया सोचकर आज भी आखें भर जाती है । लाख मुश्किलें झेलकर एक नन्ही सी नौकरी मिली । इस नन्ही सी नौकरी से मां बाप बड़ी उम्मीदें पूरा करने का सपने सजो रखा था पर डां. खीचामल ने डंस लिया । जिन्दगी तबाह हो गयी धर्मराज । अरमान चूर–चूर हो गये । शकुन्ता की आंत के टुकड़े कर दुखो का पहाड़ गिरा दिया हमारे उपर डाक्टर खींचामल वी ने दौलत के मोह में ।

धर्मराज– क्या ?

गरीबलाल–हां धर्मराज पत्थरी के आपरेशन की जगह आंत के टुकड़े कर दिया डाक्टर खींचामल वी ने । किसी को भनक तक नही पड़ने दी ।

धर्मराज– पता कैसे चला कि भाभी की आंत कटक गयी है ।

गरीबलाल– दर्द कम नही हो रहा था तो दूसरे डाक्टर को दिखाया । डाक्टर ने सोनोग्रफी तुरन्त करवनो की सलाह दी । रिर्पोट देखकर डांक्टर बोले आंत का भी आपरेशन हुआ है क्या ? तब जाकर तकलीफ की वजह का पता लगा । मेरी तो जान ही निकल गयी थी। डां. खींचामल वी ने विश्वास को तार तार कर छाती पर जीवन भर के लिये दर्द का बोझ रख दिया ।

धर्मराज–खीचामल डांक्टर है या बकरकसाई ? भोलेभाले लोगों का जीवन नरक बना दिया । डांक्टर तो भगवान का प्रतिरूप होता है ।अच्छी भली जिन्दगी में मुट्ठी भर आग भरने वाला ये खींचामल तो शैतान लगता है ।

गरीबलाल–हां धर्मराज शकुन्तला को कहां कहां नही लेकर भागा । तीन नन्हे नन्हे बच्चे और अपाहिज हो चुकी शकुन्तला की देखरेख मै कितना दुख उठाकर कर पाया । सोचता हूं तो आखों में आसूं भर जाते है इतने बरसों के बाद भी । घर परिवार के लोग भी अपजस मढने से तनिक नही चुके क्योंकि उनको मनिआर्डर नही कर पाता था । सब तो सब मेरे बाप तक ने कह दिया कि गरीबलाल बीबी बच्चों को पिकनिक पर ले जा रहा है मां बाप फटे कपड़े पहनने को मजबूर है । एक नन्ही सी भतीजी को एक पैकेट बिस्कुट तक देने भर को नहीं हुआ । बीबी के सामने हमारी कहां गिनती करेगा । अब तो वही सगी है। उसके पड़ोस से कामप्रसाद आया । कामप्रसाद ने तो यहां तक कह दिया मेरे बाप से कि दादा गरीबलाल तुम्हारे हाथ से निकल गया । कामप्रसाद और उसकी घर वाली ने हमारे मुसीबत के वक्त में खूब आग में घी डाला। उसके झूठ को लोग सच समझकर हमसे दूरी भी बना लिये पर बाद में खूब पछताये भी । मेरे बाप ने चौराहे पर खड़े होकर

गालियां तक दी । कितने अपने लोग भी स्वार्थी है । जब तक उनकी ख्वाहिशें पूरी करते रहे अच्छे हो अगर किसी तकलीफ में तनिक कोतहाई किये तो बहुत बूरे हो । धर्मराज तकलीफ के समय में अपनो ने भी साथ नही दिया ।
धर्मराज–अपनों का बेगानापन घाव को और अधिक खुरचने वाली बात हुई । आंसू न बहाओ सब समय का खेल है । समय अपनों को पराया बना देता है । दुख सुख तो धूप–छांव है । दुख उपर वाला देता है तो सहने की शक्ति भी वही देता है । दोस्त याद रह जाती है लोगों की करनी चाहे अपना हो या बेगाना । दैवीय मुसीबत तो कभी ना कभी हर आदमी पर आती है पर तुम्हारी मुसीबत का जिम्मेदार तो कसाई डां.खीचामल है जो फूल जैसी शकुन्तला भाभी के पेट पर वी लिख दिया छुरी से
काटकर ।
गरीबलाल– हां भइया डां खींचामल की दिया दर्द तो जिन्दगी भर खत्म नही होने वाला है और ना ही बहते आंसू थमने वाले है । कसाई मुसीबतों से खेलने वाली शकुन्तला को अपाहिजों जैसी जिन्दगी देकर हमें कंगाल बना दिया । अपनी गलती पर परदा डालने के लिये आपरेशन पर आपरेशन करता चला गया । हम कही शकुन्तला को लेकर दूसरे डाक्टर के पास चले जाये या दूसरे डांक्टर को बुलाकर जांच करवाये पहरा लगा दिया । बाहर आना जाने पर रोक लगवा दिया ।पैसा पैसा लेकर अस्पताल से बाहर निकलने दिया । यदि न निकल पाते तो वह शकुन्तला के अंग को भी बेच सकता था ।
धर्मराज– आपरेशन के बाद भी दर्द नही कम हुआ ।
गरीबलाल–नहीं और बढता चला गया । डां.खींचामल तो आपरेशन सिर्फ पैसा लेने के लिये कर रहा था धोखे में रखकर ताकि पैसा बना सके ।
धर्मराज–छोटा से पत्थरी का आपरेशन इतना भयानक रूप धारण कर लिया ।
गरीबलाल–डां.खीचामल ने भयावह बना दिया । आपरेशन तो छोटा ही था पर आपरेशन में खींचामल ने आंत काटकर जानलेवा बना दिया ।
धर्मराज–सत्यानाश हो डांक्टर खीचामल का । हे भगवान तेरा बन्दा इतना आदमी की जान लेने तक का धंधा करने लगा है । स्वार्थ की मुट्ठी भर आग ने तो डां.खीचामल जैसे इंसानों को तो हैवान बना दिया है ।
गरीबलाल– भइया धर्मराज बहुत मुसीबत उठाया हूं । नन्हे नन्हे बच्चे रोटी तक को तरस गये थे । कुछ तो ऐसे थे जो कहने को अपने थे वास्तव में वे ऐसे नाग थे कि उनके काटने पर बेमौत मरा कई बार धर्मराज ।
धर्मराज– क्या कह रहे हो ?
गरीबलाल–ठीक कह रहा हूं । कामप्रसाद उसकी घरवाली के राखी के भाई–भौजाई भी कम न थे कई बार रिसते जख्म दिये है इन लोगों ने धर्मराज । कामप्रसाद की घरवाली के राखी के भाई कंसनारायन तो दफतर में साथ काम करते थे पर वे बड़े पदाधिकारी थे अपने अभिमान को बढावा देने के लिये बड़ें और अपने सजातीय अधिकारियों से शिकायत भी किये नौकरी पर आ पड़ी थी पर भगवान ने बचा लिया । धर्मराज मैं अपनी मुसीबतों और दफतर के उत्पीड़न से इतना घबरा गया था कि मन करता था कि रिजाइन कर दूं । धर्मराज घरवाली की दयनीय दशा और बच्चों की चीख राह रोक देते । दैवीय दुख के साथ दफतर के कुछ बड़े अधिकारी पल –पल तड़पाया । तुम्हारे सामने हूं यह किसी दैवीय चमत्कार से कम नही है । महीनों रात रात जागकर बिताया हूं दिन में दफतर में काम तो करना ही पड़ता था वह भी देर रात तक ।ओवर टाइम कुछ रूतबेदार और साहब के इर्द गिर्द घूमने वाले लरेग लेते थे । छुटिट्यो का इसीडेन्टल क्लेम यही रूतबेदार लोग लेते

थे काम मै करता था ।धर्मराज कोई ऐसा मुझे नही दिखाई पड़ता है जिसने मुझे आसूं नही दिया हो । कभी कभी कुछ दफतर के लोग मीठी बाते तो कर लेते थे पर पीछे जहर घोल देते थे । भगवान के भरोसे नौकरी में टिका रहा अभी तक टिका हूं । हां भविष्य जरूर चौपट हो गया । बस बच्चों में ही उनके साथ अपना भविष्य देखता हूं । देखो भगवान मेरी तपस्या कब सफल करता है ।

धर्मराज–बाप रे ऐसी दर्दनाक दास्तान ...

गरीबलाल–हां धर्मराज शकुन्तला तीन महीने अस्पताल में थी । मैं अकेला छोटे छोटे बच्चे । खाना बनाता उनको खिलाता फिर साथ लेकर अस्पताल जाता । बच्चों को शकुन्तला के पास छोड़कर दफतर जाता । देर से दफतर से अस्पता आता बच्चें को लेता फिर घर आता फिर वही चूल्ह चौका,अस्पताल । मेरा छोटा बेटा जो रंजन रात में मेरे गले में हाथ डालकर सोता था ताकि मैं उसे सोता छोड़कर अस्पताल न चला जाउूं । ऐसी मुसीबत में बाप ने सड़क पर खडे होकर गालियां दिया नालायक मेहरबस तक कहा । किस–किस की बातों पर मलाल करता । भगवान भरोसे जिन्दगी की राह पर चलता रहा । जब मन दुखी होता तो भगवान को साक्षी मान कर दो आंसूं बहा लेता फिर अपने काम में लग जाता । इतने बडें जहां में मुझे कोई फरिश्ता नही मिला । मुसीबत के पलों में कोई दैवीय शक्ति मेंरे साथ जरूर थी जिसकी वजह से हर मुसीबत पार करता रहा और तुम्हारे सामने हूं । हां श्रम की मण्डी में कोई तरक्की नही कर पाया योग्य होने के बाद भी ।काश कोई दैवीय चमत्कार हो जाता मेरी शकुन्तला के दुखते घाव बहते आंसू सदा के लिये थम जाते । बेचारी बहुत दुख पायी है बिल्कुल स्वस्थ हो जाती ।

धर्मराज–भगवान तुम्हारी मदद जरूर करेगा । बहुत कष्ट उठाये हो भगवान तुम्हारी खाली झोली मे सुखों का अम्बार भर देगा ।तुम्हारी दुख सुनकर मेरा दिल दहल गया । भगवान पर यकीन रखो तुम्हारे भी दिन अच्छे आयेगे। तुम्हारी जिन्दगी तबाह तो डां.खीचामल ने किया है ।

गरीबलाल–मुसीबत में किसी ने काम नही दिया चाहे दफतर के लोग रहे या कोई और दफतर के पर्सनल मैंनेजर एस.एस.चोरावत ने हर तरह से परेशान तो किया ही साथ हमारे खिलाफ जांच के आदेश भी निकाल थे । खैर भगवान ने रक्षा की । डांक्टर खींचामल तो जैसे कसम ही खा लिया था कि शकुन्तला को जीवित अपने अस्पताल से बाहर नही जाने देगा । बड़ी मुश्किल से अस्पताल से निकल पाया था । सारा गहना गुरिया बेंचकर दिल्ली लेकर भागा तब जाकर जान बची । भगवान की कृपा से अब तो शकुन्तला चलने फिरने लगी है । कुछ माह पहले तो उठना बैठना भारी था । इतना दर्द होता था कि जैसे जान निकल जायेगी ।अंतड़ियां बाह आ जायेगी । खैर उपर वाले ने बचा लिया । डां.खीमल की गलती ने मेरी सारी कमाई चट कर गयी और कर्जदार भी बना दी । मेरे सपने उजड़ गये । भविष्य बर्बाद हो गया । जीवन के साथ दुखते घाव बहते आसू का दर्द जुड़ गया। दर्द की मुट्ठी आग से तो उबर नही सकूंगा पर बच्चों के भाग्य से शकुन्तला की जान बच गयी । इतना से ही सब्र करना है। यही हमारे जीवन की सबसे बड़ी खुशी है धर्मराज ।

धर्मराज–रोग असाध्य हो गया है ?

गरीबलाल–हां । शकुन्तला की कराह अभी भी तो कान के परदे पर नस्तर की तरह चोट कर रही है ।

धर्मराज–एक पत्थरी के मामूली से आपरेशन की जगह डांक्टर खीचामल ने तीन तीन आपरेशन करने का अपराध कर भाभी के जीवन को नरक बना दिया कोर्ट क्यों नही गये । कोर्ट से तो न्याय की उम्मीद थी ।

गरीबलाल–गया था सब कुछ किया आंख में आसूं लेकर पर आंसूओं की कदर कही नही हुई । अखबारों ने भी डांक्टर खींचामल की करतूत को खूब उछाला पर समरथ नही दोष गोसाईं वाली कहावत चरितार्थ हुई ।
धर्मराज– क्या ?
गरीबलाल–सब बिक गये ।
धर्मराज–क्या ? न्याय के मंदिर में अन्याय । डा.खीचामल वी के हाथों शकुन्तला भाभी के आतों के टुकड़े कर पेट को बोरे सरीखे वी आकार में सिलने और जिन्दगी भर के लिये दिये दुखते घाव बहते आंसू के बदले कोर्ट ने डां.खीचामल को पारितोषिक दिया ताकि वह और गरीबों की जिन्दगियों से खेलता रहे ।
गरीबलाल–हां । डेढ दो साल दौड़ाने के बाद केस डिसमिस कर गया कोर्ट द्वारा धर्मराज। कर्जे का भार छाती पर और बढ गया ।
धर्मराज–बाप रे अपराधी का कद बढा दिया गया । गरीबों का न्याय कैसे और कहां से मिलेगा । आज के जमाने में गरीबों को न्याय भी नही मिलता और अपराधी को संरक्षण जरूर मिलता है । हे भगवान गरीब कहा फरियाद करें ।
गरीबलाल–अब तो भगवान का ही भरोसा है । इस बेरहम दुनिया में तकदीर का लिखा मानकर दुखते घाव बहते आंसू के तले जीवन बसर करना है धर्मराज ।

प्रतिघात

खत्तूदादा को उनके काका ने अलग कर दिया शहर की नौकरी से रिटायर होकर गांव आते ही । खत्तूदादा के पास कोई आढत भी नही थी जो खेतीबारी थी सब काका मत्तू के नाम ट्रान्स्फर हो गयी थी । दो चार बीसा जो खत्तूदादा के हिस्से आयी थी उससे साल भर के लिये रोटी की भी गुंजाईश नही थी ।खत्तूदादा का परिवार भी बड़ा था चार बेटे एक बेटी छः महीना के अन्तर वाले । सभी खाने वाले कमाने लायक कोई नही ।खत्तूदादा चिन्ता की चिता में सुलग रहे थे । इसी बीच पुरवा का झोंका खबर लेकर आया कि क्षीर बाबू की विधवा नरमावती देवी अपनी खेती अधिया पर देना चाहती है ।यह खबर खत्तूदादा को सकून दी और वे क्षीर बाबू की की हवेली की ओर दौड़ पड़े ।
खत्तूदादा की हवेली की चहरदीवारी में दस्तक होते ही नरमावती देवी के जेठ विदुर बाबू आगे आये और बोले क्यों रे खत्तुआ खबर लग लगी । तुम्हारे जैसे और भी कई चील की तरह मडरा रहे है ।समझ लेना हमारे खानदान की बात है ।
खत्तूदादा–हां बाबू हम भी चले आये । हमारे पास तो जमीन है नही कि बच्चों का पेट पा लूंगा । बाबू आप तो जानते ही है सब काका ने छिन लिया ।बच्चों को भूखों मरने की नौबत आ गयी है । क्षीर बाबू की जमीन अधिया/बटाई पर मिल जायेगी तो मेरे भी बच्चे पल जायेगे ।
नरमावतीदेवी को देखकर विदुरबाबू बोले मालकिन सामने है बात कर लो ।
नरमावती– खत्तू दालान म आ जाओ .....
खत्तू– मालकिन आया ।
विदुर बाबू–जा खत्तुआ जा मालकिन बुला रही है दालान में ।
खत्तू– हां बाबू मालकिन बुला तो रही है पर आपकी दयादृष्टि बने तब ना ।
विदुर बाबू–अरे जा मालकिन की नजर तुम पर पड़नी चाहिये बस...
खत्तू– बाबू आप भी दया दृष्टि बनाये रखे तब ना गरीब का पेट परदा चल पायेगा वरना काका ने तो कहीं का नही छोड़ा है ।
विदुर बाबू– तू तो नरमावतीदेवी की बात अभी सुन । मेरी बाद में सुन लेना ।

खत्तू–बड़ी कृपा होगी आपकी कहकर दालान की ओर बढा ।
नरमावती–कुछ दूर से ही बैठने का आदेश दी ।
खत्तू बैठते हुए बोला– मालकिन बडी उम्मीद लेकर आया हूं ।
नरमावती–खत्तू खेती तो अधिया पर करवानी है चाहे तुम करो या कोई दूसरा । मैं तो हल जोतने से रही । पति के जीते जी विधवा हो गयी हो । पति साधु हो गये घर परिवार के लोग विधवा कहकर संबोधित करने लगे । मुझे भी लगता है मैं सचमुच की विधवा हो गयी हो । दो बेटियों का बोझ है बस वह उतर जाये तो मैं भी दुनिया से रूख्सत लूं ।
खत्तू– मालकिन मन छोटा ना करो ।अभी तो जिन्दगी बहुत बाकी है । अभी से हार मान रही हो । जमीन जायदाद,धन दौलत को टोंटा भी नही है । आपके सारे फर्ज पूरे हो जायेगे । क्षीरबाबू साहेब को साधु नही होना था इस उम्र में आपको छोड़कर ।
नरमावतीदेवी– हिम्मत तो नही हारी हूं यदि हिम्मत हार गयी होता तो इस हवेली और जमीन जायदाद से कब की बदखल हो गयी होती । पति के साथ बिताये लम्हो की याद में जीवन बिता दूंगी पर हवेली और जमीन जायदाद से बेदखली बर्दाश्त नही करूंगी । बेटियों को उनके पैर पर खड़ा करके ही मरूंगी । हिम्मत हार गयी होती तो खत्तू आज तुम मेरी अधिया पर खेती करने नही आते । मालिक कोई और ही होता ।
खत्तू–सब ओर हड़पने की होड़ मची हुई है मेरे काका न मेरे साथ तो यही किया है ।जब तक शहर में थे तब तक तो जमीन जायदाद का मालिक मै था उनके पूरे परिवार की खान खर्च मै देखता था रिटायर होकर आते ही लात मारकर बेदखल कर दिये ।कहते है तुम्हारा क्या है सब हमारा है शहर में पानी पी–पी कर कमाया हूं अपने बच्चों के लिये कि तुम्हारे लिये ।
नरमावतीदेवी– छोटा हो चाहे बड़ा हिस्सेदार तनिक होशियार है तो हक पर भी कब्जा जमा लेने में संकोच नही कर रहे है । बडी मुश्किल से मैं अभी तक तो काबिज हूं आगे न जाने क्या होगा ? लोग मौके की तलाश में रहते है मौका पाते ही आंख में धूल झोंक देते है खत्तू ।
खत्तू –मालकिन आपका इशारा मैं समझ गया । मेरी नियति कभी नही खोटी होगी ।
नरमावती–विश्वास कभी ना तोड़ना । घर–परिवार हिस्सेदार, भाई–भतीजे सभी तोड़े है पर तुम ना तोड़ना खत्तू .....
खत्तू– विश्वास रखो मालकिन । मेरे भी बाल बच्चे है । मैं बददुआ कभी नही लूंगा । बस मेरे बच्चों को पलने बढने का आसरा दे दो । मेहनत मजदूरी करके आपकी कृपा से बच्चों का पाल लूं । दबंग जैसे हम गरीब नही कर सकते मालकिन कि साल दो साल अधिया पर लेकर चोरी छिपे दूसरे की अपने नाम लिखा ले । ऐसा तो बड़े दबंग और पहुंच वाले कर सकते हैं । हम जैसे गरीब तो सुबह शाम की रोटी की चिन्ता में मर खप जाते है । मालकिन अपने दिल से भय निकाल दो । आपकी जमीन आपकी ही रहेगी । मैं तो बस अधिया पर खेती करूंगा ईमानदारी के साथ । जो खेत में उपजेगा आपके सामने आधा –आधा बट जायेगा । बंटने के बाद सबसे पहले आपके हिस्से का अनाज आपकी गोदाम में जायेगा बाद में मेरी झोपड़ी में । जमीन पर आपका अधिकार रहेगा । मै कभी भी अपनी नियति खोटी नही करूंगा । मालकिन चाहो तो पंचनामा बनवा लो । मुझे कोई एतराज नही है । जहां कहेगी अंगूठा लगा दूंगा ।
खत्तू की ईमानदारी साफ –साफ झलक रही थी उसके चेहरे से उसके तन पर लपटे फटे कपड़े से । नरमावतीदेवी ने अपनी जमीन खत्तू को अधिया पर दे दी ।खत्तू मेहनत से खेत जोतने बोने लगा । खत्तू की मेहनत से अपरम्पार अनाज होने लगा उसी जमीन पर जिस जमीन पर नरमावतीदेवी को साल भर खाने का इन्तजाम नही हो पाता था । खेत से जो गल्ला उपजता खत्तू नरमावती देवी के सामने दो भाग करता और पपहले नरमावती देवी की हवेली खुद और बच्चों के सिर पर लादकर

पहुंचवाता । इसके बाद अपना हिस्सा ले जाता । खत्तू की मेहनत से नरमावती देवी के गोदाम में अनाज भरा रहने लगा । इसी जमीन पट्टीदार के लोग करवा रहे थे तो खाद पानी का पैसा भी लेते थे और अनाज भी नही मिलता था खद पानी की कीमत के बराबर । खत्तू दादा अपनी कसम पर अटल रहे । खत्तू दादा का बडा बेटा बारहवी पास कर परदेस चला गया । दूसरे नम्बर वाला छठवी के बाद स्कूल जाना छोड दिया तीसरा आठवी पास करके आगे नही पढा चौथा भी स्कूल जाना शुरू कर दिया। सबसे बड़ी बेटी भी अपना घर –परिवार सम्भाल ली । नरमावती देवी की दोनो बेटिया शहर जाकर पढने लगी । नरमावतीदेवी की हवेली में जैसे लक्ष्मी बसने लगी। नरमावती देवी का हर छोटा बड़ा काम खत्तुदादा और उनका परिवार कर देता । खत्तूदादा के दरवाजे पर एक जोड़ी बैल बंध गये मत्तूकाका खत्तू दादा के बैल ,भैंस को देखकर कूढते रहते । मौके बेमौके खत्तूदादा से लड़ाई करने भी नही चूकते थे । मत्तू दादा के मन में खोट थी वे रोते पीटते रहते । उल्टे खत्तूदादा और उनका परिवार अपनी कमाई में खुश था उधर नरमावतीदेवी की रोनी सूरत पर चमक आ गयी थी । वे खत्तू पर आंख मूंद कर विश्वास करने लगी थी।

खत्तूदादा समर्पित भाव से अधिया की खेती करने लगे ।खेत खाली होते दस बीघा खेत एक जोड़ी हल से जोत डालते । खुद के घूरे की खाद पूरा परिवार सिर पर लादकर खेत में डालता । जिस जमीन मे ठीक से घास भी नही उगती थी उस जमीन में हर फसल खत्तूदादा पैदा करने लगे ।धान,चना,मटर,गन्ना,आलू और भी ढेर सारी फसले । मई की जानलेवा गरमी में भी खत्तू दादा खेत में लगे रहते । मई में गेहू की फसल काटकर, मडाई करने के तुरन्त बाद खेत की जुताई मे लग जाते । बड़े बड़े जमीदारों तक के कान खड़े होने लगे खत्तूदादा को देखकर ।खत्तूदादा धान की नर्सरी डालने के लिये अलग तरह से खेत तैयार करते । इक्कीस जून के पहले धान की नर्सरी डाल देते । पन्द्रह बीस दिन में उनके धान की नर्सरी रोपने लायक हो जाती थी बड़े बड़े कास्तकार उनकी नकल करते पर खत्तूदादा जैसी खेती नही कर पाते ।पहली बरसातत के बाद रोपाई शुरू कर देते । खत्तूदादा रासायनिक खादों का प्रयोग कम करते और गोबर की खाद का अधिक । गन्ना बोवाई के दिन बड़ा उखभोज और धान रोपाई के पहले दिन वनगड्डी/ भोज बडा ही करते । खत्तूदादा का परिवा और नरमावतीदेवी भी सूखी रहने लगी ।

कुछ साल बाद जमीदारों के शोषण के खिलाफ बिगुल बजा दिया जब रोाई शुरू ही हुई थी और बरसात भी बहुत तेज हो गयी थी । छोटे बड़े सभी कास्तकारों की रोपाई का काम एक साथ शुरू हो गया था ।खत्तूदादा के खेत में भी नर्सरी तैयार थी वह भी रोपाई के काम में जुट गया था । जमीदार लोग दूसरे गांवों से के मजदूरों को दस गुना अधिक मजदूरी देकर रोपाइ करवाने को तैयार थे पर गांव के शोषित मजदूरों को चुटकी भर अधिक देने को तैयार न थे क्योंकि वे अपने गांव के मजदूरों को अपनी प्रजा समझते थे । वे चाहते थे कि ये मजदूर पेट पर पट्टी बांधकर उनके खेतो में काम करे । इधर मजदूरो ने भी कमर कस लिये । जुल्म के खिलाफ मुंहतोड जबाब देने की हिम्मत गांव के मजदूरो मेभी आने लगी थी । वे मजदूरी बढवाने के मुद्दे पर अटल थे और जमीदार लोग न बढाने की जिद पर । वे मजदूरो में आई क्रान्ति को कूचल देना चाहते थे । वे मजदूरो से कहते तुम्हारे पुरखे इतनी मजदूरी पर काम करते आये है तुम लोग क्यो नही करोगे । अपने पुरखों का आत्माओ चैन छिनोगे । अनेक तरह से भ्रमित करने पर जमीदार लोग जुटे हुए थे । खत्तू तो खुद मजदूर था अपनी रोपाई के कामो में परिवार के साथ लगा हुआ था । जमीदारों की कागदृष्टि खत्तू पर पड़ं गयी । दबंग जमीदार लोग आपस में रायमशविरा कर खत्तू की रोपाई बन्द करवा दिये । बेचारे खत्तू और उसके पेट जमीदारों मुट्ठी भर भर आग का प्रहार करना शुरू कर दिया । खुद के खेत बिहारी मजदूरों और दूर के गांवों के मजदूरों को लाकर धड़ले से रोपवाने लगे अधिक मजदूरी देकर ।बस्ती के मजदूर मजदूरी बढाने की अनुरोध करते रहे पर गांव के

जमींदारों ने अपनी पंचायत बुलाकर मजदूरी न बढाने का और मजदूरों के दमन का प्रस्ताव पारित करवा लिया । जमीदारों का प्रस्ताव पारित होते ही बस्ती के मजदूरों का घर से निकलना कठिन होगा । टट्टी पेशाब के लिये बस्ती के मजदूरों के लिये कोई जगह न थी । जो थी भी गांव समाज की जमीन थी सब पर जमीदारों को कब्जा था । बस्ती से कुछ दूर सड़क के किनारे की जगह थी । सड़के किनारे बैठना उचित तो था नही पर मजबूरी में बस्ती के लोग जाये कहां यही तो सहारा था । सड़क तक जाना भी जोखिम भरा काम था । दबंगो का भय नरपिशाच की तरह पीछा कर रहा था ।

मजदूरों के सामने फांके की स्थिति निर्मित हो गयी थी पर वे भी आपस में रायमशविरा कर हड़ताल जारी रखने का ऐलान कर दिया । शोषण,उत्पीड़न से मुक्ति का शायद सही कदम यही था बस्ती के मजदूरों के लिये । चारों ओर रोपाई का काम जोरों पर चल रहा था । बाहर के मजदूर भी रंग बदलने लगे । बाहर के मजदूरों के बदलते तेवर को देखकर गांव के जीमदारों ने जफल्म तेज कर दिया ताकि बस्ती के मजदूर हार मानकर पेट ममें भूख लिये जमींदारों के खेत में अपना खून पसीना कर बहाते रहे । बस्ती के मजदूर बाबू साहब लोगों के जुल्म के आगे झुके नही । मजदूरों को हार न मानता हुआ देखकर जमीदारों ने मजदूरों में फूट डालना शुरू कर दिया पर वे सफल नही हुए । अब जमीदारों की नजर खत्तूदादा के उपर आ टिकी । वह भी तो बस्ती का ही मजदूर था नरमावाती देवी की खेती अधिया पर कर रहा था । नरमावतीदेवी तो जमीदारन ही थी अब क्या खत्तूदादा की रोपाई बन्द करवा दी मुश्किल से दस बीसा रोप पाये थे खत्तूदादा ।नरमवातीदेवी को भी जमीदारों की यह करतूत रास नही आ रही थी । वह भी घायल सांप की तरह फूफकराने तो लगी पर कामयाब नही हो सकी । जमीदार लोग खत्तूदादा को हथियार बनाकर हड़ताल खत्म करवाने पर उतारू हो गये वह भी बिना मजदूरी बढाये । कुछ जमीदारों की रोपाई का काम तो शुरू था आठ गुना अधिक मजदूरी देकर पर कुछ हड़ताल खत्म होने का इंतजार कर रहे थे जिनकी नर्सरी देर से पड़ी थी। छल बल,दण्ड–भेद सब नुस्खे अपना लेने के बाद भी हड़ताल नही खत्म हो रही थी । जमींदारों द्वारा पग–पग पर बिछाई जा रही मुट्ठी भर –भर आग बस्ती के मजदूरों को नही डिगा पा रही थी ।

जमीदारों ने पैतरा बदला और जमीदार विदुर बाबूसाहब सहित दो चार और जमीदार लोग सामूहिक रूप से अपनी अपनी भैंसे नरमावतीदेवी के खेत में खत्तूदादा द्वारा डाली गयी धान की नर्सरी चरने को छोड़ दिये ताकि खत्तूदादा टूटकर परिवार सहित जमीदारों का और अपना भी थोड़–थोड़ा रोपना शुरू कर दे । इससे जमीदार लोग एक तीर से दो शिकार कर ले । हड़ताल भी खत्म हो जाये और मजदूरी भी न बढे । इस बार भी जमीदार मुंह के बल गिरे । हड़ताल जारी रही । जमीदार भी कहां हार मानने वाले खत्तूदादा द्वारा नरमावतीदेवी के बीघा भर गन्ने के खेत से जमीदार लोग सामूहिक रूप से गन्ना काट–काटकर अपने अपने जानवरों को चारे के रूप में खिलाने लगे । खत्तूदादा अन्याय के खिलाफ कमर कसकर नरमावतीदेवी के जेठ विदुरसाहब जो मेड़ पर खड़े होकर गन्ना चारे के लिये कटवा रहे थे । गन्ना काटने वाले के हाथ से हसिया छिन लिया और हिम्मत करके बोला बाबूसाहब अब एक भी गन्ना कटा तो पेट फाड़ दूंगा ।

खत्तूदादा की हिम्म्त को देखकर विदुरसाहब बोले–खत्तुआ न तो तेरा गन्ना बचेगा और नही दूसरी फसलें खैर अभी तो मैं जा रहा हूं । बाद में तुमको देख लूंगा देखता हूं तू कितने जमींदारों का पेट फाड़ता है ।

खत्तूदादा–क्या ?

विदुरबाबूसाहब– हां खत्तुआ ।

इतने में और दबंग जमीदार जुट गये । कोई गन्ना तो काई धान की नर्सरी तो कोई रोपे दस बीसा धान को तहस नहस करने में जुट गया । खत्तूदादा के दिल पर जमीदारों के जुल्म का ऐसा प्रतिघात हुआ कि होश खो बैठे। बस्ती के मजदूरों और खत्तूदादा पर ढाहे गये जुल्म से उपजी आक्रोश की पीड़ा से बचने के लिये जमींदारों ने मजदूरी बढाने की आपस में रायमशविरा करने लगे । खत्तूदादा के प्रतिघात के दर्द का एहसास जमीदारों के दिल दिमाग और कान पर हथौड़े जैसे चोट करने लगे । बाहर के मजदूरों ने भी हाथ खड़े कर दिये । वही जमींदार जो मजदूरों का घर से बाहर निकलना दूभरकिये हुए थे वही मजदूरी बढाने पर राजी हो गये। मजदूरी भी बढी और हड़ताल भी खत्म हो गयी लेकिन खत्तूदादा प्रतिघात से नही उबर पाये । जमींदारों के मुंह पर कालिख पोतकर हमेशा के लिये सो गये दिल पर प्रतिघात का दर्द लिये हुए।

पुराना जख्म

माधव बेटे निहोरीलाल को बी.ए. तक पढाने में अपने जीवन के बसन्त हवन कर दिया था। माधव जानता था कि बेटा बी.ए.पास कर जायेग तो वह अफसर बन जायेगा और उसका खोया हुआ बसन्त वापस आयेगा दोगुनी खुशी लेकर ।जीवन का सांध्य तो सुख में बित जायेगा । वह दोनो पति–पत्नी रात दिन बेटे की कुशलता के लिये दुआ करते रहते । जीवन चलाने के लिये न बीसा भर खेता था ना ही दूसरा कोई सहारा बस खेत मालिकों के खेत में खून पसीना करना यही तकदीर बन गयी थी भारतीय व्यवस्था में । निहोरीलाल भी पढाई के साथ मेहनत मजदूरी कर लेता था । मां बाप के कामेां में भरपूर मदद करता । खेतीबारी के गुर भी निहोरीलाल सीख गया था । जमीदार की हलवाही के बाप को दस बीसा उसरनुमा खेत जोतने बोने का भार उसके ही उपर था । माधव को तो खेतमालिक के कामों से ही नही फुर्सत मिल पाती थी । दिन भर की मजदूरी सिर्फ दो किलो अनाज मिल पाता था । माधव के छोटे बडे सभी बच्चे भी मजदूरी कर लेते थे । जिससे रोटी का इन्तजाम तो हो ही जाता था पर बाकी सब तो भाग्य भरोसे था ।

निहोरीलाल परदेस तो चला गया । निहोरीलाल के परदेस की राह पकड़ते ही उसकी मां का रो रोकर बुरा हाल हो गया । उसने सप्ताह भर तक तो खाना छोड़ दी थी । उधर शहर में निहोरीलाल को कोई सहारा देने वाला न था । सगे लोग मुंहफेर लेते थे उससको देखते ही । कई बार तो उसे फांके तक करने पड़े । गीली जमीन पर रात गुजारना पड़ा । निहोरीलाल अपनी ततकदीर बदलने के लिये पत्थर तोड़ने तक को तैयार था पर काम मिले तब ना । नौकरी को दूर जाता देख्कार वह सब्जी मण्डी में सेब की टोकरी तक ढोया । कुछ ही दिनों में इस काम से भी उसे हाथ धोना पडा । कुछ दिनों तक इधर उधर पागलों की भांति घूमने के बाद आलपिन बनाने की फैकटरी में तेजाब से आलपिन धोने का काम मिल गया । मरता क्या ना करता निहोरीलाल नौकरी पर लग गया । इस काम में वह कई बार जला और उसका हाथ तो कोढियों जैसे हो गये थे । इतनी दुर्दशा सहकर भी वह काम करता रहा अपने मां बाप और घर परिवार की दयनीय दशा देखकर ।बुरे वक्त में कोई हौशला तक बढाने वाला नही था । खानदाने के तो कुछ लोगों ने तो ताने तक मारे कि अरे निहोरीलाल बी.ए.तक पढकर आया है शहर में अफसर बनने ।ऐसे दुखद समय में हौशला

दिया तो उसके सगे बहनोई रत्नराज ने जो खुद एक फैक्टरी में हेल्पर की नौकरी कर रहे थे जो खुद आर्थिक तंगी से बुरी तरह जूझ रहे थे ।
बुरे वक्त से बुरी तरह झुलसते हुए भी निहोरीलाल ने खुली आंखो से सपने देखना नही छोड़ा । दुर्भाग्य था कि घड़ी भर के लिये उसका साथ नही छोड़ रहा था ।
निहोरीलाल के खून के रिश्तेदार उसकी उपस्थिति को बोझ मानने लगे थे । कुछ तो बड़े ओहदेदार थे । निहोरीलाल भी लाख कष्ट उठाया पर किसी के सामने हाथ नही फेलाया । तेजाब की फैक्टरी से मिली रू. 425.00 की तनखाह से सबसे पहले वह खुराकी और झुग्गी का किराया रू. 250. 00देता । बाप को रू. 100.00 का मनिआर्डर करता बचे 75 रूपये में से पच्चीस रूपये खुद के खर्च के लिये रखता और शेष पच्चास रूपये की मासिक फीस पर टाइप सीखने लगा ।
निहोरीलाल कभी सोचा भी न था कि शहर में खून के और सगे रिश्तेदार इतने कठोर हो जाते है । अपने को पराया समझने लगते है । खैर निहोरीलाल अपनो को अपना मानता रहा और अपने उसूलो से समझौता नही किया। जातीय अयोग्यता उसे नौकरी से दूर ढकेलती जा रही थी ऐसे मुश्किलों की आंधी में भी अपनो का सहारा तक नही मिला । दुर्भाग्य को तकदीर मानकर निहोरीलाल खुद की किस्मत लिखने का दृढ निश्चय कर लिया और अपने मकस्द में सफल भी हो गया एक कम्पनी में अस्थायी बाबूगीरी की नौकरी मिल गयी । निहोरीलाल भगवान का चमत्कार मानकर नौकरी करने लगा । दुर्भाग्यस भेदभाव की प्रेतछाया ने यहां भी लतियाना शुरू कर दिया । एक अधिकारी ने तो नौकरी से निकालने तक कि सिफारिस कर दिया । कहते है न खुदा मेहरवान तो गदहा पहलवान । भगवान ने निहोरीलाल की नौकरी बचा ली । वक्त ने निहोरीलाल के दिल के जख्म भरने शुरू कर दिये । उसे हजार में तनख्वाह मिलने लगी ।मां बाप के सपने पूरे होने का अवसर उसे यहां दिखाई देने लगा परन्तु मानवीय भेदभाव की ज्वाला रह रहकर भभक ही जाती । साथ में काम करने वाले भी आग में घी डालने का काम करते मुंह पर तो मीठा बोलते पर पीछे षणन्त्र रचते रहते क्योंकि इस जातीय अयोग्य निहोरीलाल की उपस्थिति लोगों को खटकती थी । निहोरीलाल को विद्या की देवी ने खुले हाथो कई ऊची ऊंची डिग्रियां तक बख्श दी थी । यही निहोरीलाल की योग्यता कम्पनी में टिकाये हुए थी । इसी योग्यता के भरोसे निहोरीलाल की नौकरी पक्की तो हो गयी थी परन्तु जातिवाद का खुलेआम समर्थन करने वालों से नौकरी जाने का डर तो बरोबर बना हुआ था । उधर निहोरीलाल के मां बाप को ही नही पूरे गांव को यकीन था की निहोरीलाल बड़ाा साहब जरूर बनेगा । दुर्भाग्य ने यहां भी छल किया निहोरीलाल को नौकरी तो मिली पर ऐसी संस्था में जहां योग्यता का कोई मोल न था । यहां अयोग्यता का बोलबाला था । छोटी बिरादरी का कर्मचारी कितना ही क्यों ना पढा लिखा हो । उसकी तरक्की के रास्ते बन्द थे । हां बस इतना था कि बेरोजगारी का दंश नही झेलना था बस । बाकी शोषण उत्पीड़न वैसा ही था जैसा रियासत काल मे सम्भवतः होता था । इस सब हालातों से बेखबर निहोरीलाल के मां बाप उम्मीद पर कायम थे ।
निहोरीलाल को यह बात बहुत खलती थी कि उससे कम योग्यताधारी धड़ाधड़ ऊंचे पदो पर पहुंच रहे थे पर निहोरीलाल को लतियाया जा रहा था अछूत समझकर । निहोरीलाल को ऐसा लगने लगा कि उसकी तकदीर यहां कैद हो गयी है । उसकी तरक्की के सारे रास्तों को रोकने के लिये कदम कदम पर कागों ने जैसे पहरा बैठा दिया हो । अजगरों के बीच नौकरी कब तक बची रहेगी यह तो उपर वाला ही जाने । खैर उपर वाले ने आदमी द्वारा खड़े किये गये सभी व्यवधानों से उबार लिया था पर बाद में क्या होगा कुछ भी नही कहा जा सकता था जंगल राज की तरह ।

कम्पनी के कुछ अधिकारी तो साजिश रचते रहते थे वंचित उत्पीड़ित निहोरी लाल के खिलाफ इसी बीच स्टेट में बड़े साहब ए.पी.साहब नये आ गये । निहोरीलाल को लगा कि उसकी समस्याओं का कुछ तो निराकरण हो जायेगा । नये साहब फिलासफर ही नही पी.एच.डी.होल्डर भी थे ।
एक दिन अचानक मान्यवर ए.पी.साहब ब्रांच आफिस के दौरे पर आ गये । बारी बारी से सभी कर्मचारियों से बात किये सबसे आखिरी में निहोरीलाल को साहब के सामने हाजिर होने का अवसर मिला।
ए.पी.साहब–क्या नाम है तेरा ?
निहोरीलाल सर.....
ए.पी.साहब–निहोरीलाल कोटे मे आते हो क्या ?
ब्रांच मैनेजर–कम्पनी में भी आरक्षण लागू हो गया है क्या सर ?
ए.पी.साहब –नही हुआ है तो हो जायेगा ।नेताओं को वोट चाहिये की नही ? खैर छोड़ो । निहोरी लाल क्या काम करते हो
निहोरीलाल के पैर के नीचे की धरती हिल गयी जैसे। वह सम्भलते हुए बोला टाइपिंग का काम,डिस्पैच एवं डाक रीसिविंग का काम आफिस के खर्चे का काम सहित और भी बहुत सारे काम कर लेता हूं ।
ए.पी.साहब–दो लेटर टाइप करने के बदले तुम्हे इतनी तनख्वाह मिलती है ?
ए.पी.साहब–मुझसे क्या चाहते हो ?
निहोरीला– सर योग्यतानुसार पद में बदलाव ।
ए.पी.साहब–वह तो मैं नही करवा सकता । बडें पद की ख्वाहिश है तो तुम्हारे साहब से कह कर तख्ती बनवा देता हूं ,तुम गले में डाले रहना । अपनी जात वालो को देखा है । आज भी भूखे नंगे दिन भर पसीना बहाते रहते है ।पता है कितनी मजदूरी मिलती है ? तुमको नौकरी मिल गयी तो अब बड़ा अफसर बनने का सपना देख रहे हो । अरे इतनी बडी कम्पनी में तुमको नौकरी मिल गयी है क्या किसी बड़ा ततरक्की से कम है ?
निहोरीलाल–सर मुझसे कम शैक्षणिक योग्यता वालों के पद में बदलाव हुए है । वे अधिकारी बन गये है । मेरे साथ के आये लोग बड़े अधिकारी हो गये है । मैं जहां का तहां ही पड़ा हूं ।
ए.पी.साहब–जो बड़े अधिकारी हो गये है उनकी तकदीर में लिखा था । तुम्हारी तकदीर मे नही लिखा हैं तो नही बन सकते कितनी भी डिग्री हासिल कर लो ।
निहोरीलाल– सर तकदीर में जो आदमी कर रहा है वह तो कतई नही भगवान ने लिखा होगा । यहां तो लोग कमजोर की तकदीर पर कुण्डली मार कर बैठे हुए है ।
ए.पी.साहब–क्या कह रहे हो । वकालत की पढाई भी तुमने कर ली है क्या ?
निहोरीलाल–येस सर एण्ड अदर्स मोर लाइक मैनेजमेण्ट,सोशलवर्क.....
ए.पी.साहब–वो आई सी यू आर हाइली क्वालीफाईड सफरर..... स्टेट में किस किस से शिकायत है ।
निहोरीलाल– व्यक्तिगत् तौर पर से तो किसी से नही पर.....
ए.पी.साहब– पर मीन्स.....
निहोरीलाल–पक्षपात करने वाले लोगो से जाति के नाम पर दुत्कार करने वाले लोगों से अधिकार से वंचित रखने वाले लोगों से सपने को बेमौत मारने वाले लोगों से ।
ए.पी.साहब–इसके अलावा और भी कुछ शिकायत है क्या ?
निहोरीलाल–मेरा कोई काम समय पर नही होता । चाहे मेरे स्कूटर का लोन रहा हो,एल.टी.सी का भुगतान रहा हो चाहे मेरी घरवाली के जीवन–मौत का संघर्ष रहा हो, रात रात तक काम के बदले

ओवरटाइम के भुगतान पर रोक रही हो । पसीना बहाने के बदले आंसू मिले है मुझे । मुझे न्याय की दरकार है ।
ए.पी.साहब–क्या ?
निहोरीलाल– जी सर.....
ए.पी.साहब–कौन कौन से तुम्हारे पेण्डिग काम है । तुम लोग बड़े लोगो की बराबरी भी तो करते हो । अपनी औकात में तो रहते नही । खैर स्टेट आफिस पहुंचकर तहकीकात करवाता हूं क्या सच्चाई है और कुछ कहना है क्या ?
निहोरीलाल–शैक्षणिक योग्यता के अनुसार पद ...
ए.पी.साहब–मतलब अब तुम अपने काम को छोटा समझने लगे हो । देखो मि.निहोरीलाल जिस पद पर तुम काम कर रहे हो और जिस काम के बदले में तुमको इतनी तनख्वाह मिलती है उससे कम में तुमसे ज्यादा योग्य कम तनख्वाह में करने को तैयार है । तुमको पता है देश मे कितनी बेरोजगगारी है । तुम मेहनत मजदूरी करने वाले छोटे लोगो की ख्वाहिशे इतनी बढ जायेगी तो ऊचे लोगो के भविष्य का क्या होगा ? तुम चाहो तो नौकरी छोड़ दो तुम्हारे साथ अन्याय हो रहा है तो ।स्टेट अधिकारी तो तुम इस कम्पनी में बन नही सकते ।
निहोरीलाल–शैक्षणिक योग्यता का कोई मोल नही कम्पनी में जातीय योग्यता के आगे ।
ए.पी.साहब–मैनेजमेण्ट चाहे तो चपरासी को प्रमोट कर अधिकारी बना दे और चाहे तो तुम्हारे जैसे के प्रमोशन के सारे रास्ते बन्द कर दे । नौकरी करना है तो करो नेतागीरी मत करो । तुम्हारी नेतागीरी मैनेजमेण्ट बर्दाश्त नही कर पायेगा ।
निहोरीलाल–भविष्य के सपने देखना नेतागीरी है ।आप बताईये आपके अधीनस्थ काम करने वालेकौन से अधिकारी में मुझसे अधिक शैक्षणिक योग्यता है कि मैं लतियाया जा रहा हूं ।
ए.पी.साहब–कोई नकोई कमी तो जरूर है ।
निहोरीलाल–जातीय योग्यता यही ना .....हमारे लिये तो यह योग्यता रिसते जख्म पर तेजाब डालने जैसी हो गयी है ।
ए.पी.साहब–देखो अब मैं तुमसे बहस नही करना चाहता । आई अण्डरस्टैण्ड यू आर हाइलीक्वालीफाईड । यू में गो नाउ.....
स्टेट आफिसर और निहोरीलाल की बाते अधखुले दरवाजे से दफतर के लोगो के कानों को सकून दे रही थी । कुछ तो यहां तक कहते सुने गये कि साहब निहोरीलाल को वैसे ही तोड़ रहे है जैसे मुर्गी को बिल्ली । निहोरीलाल साहब के कक्ष से जहर का घूट पीकर बाहर निकलते ही ए.पी.साहब ब्रांच आफिसर को कठोर बने रहने का आदेश देते हुए बोले सुने क्या कह रहा था निहोरिया । अरे तुम्हारी कुर्सी हथियाने की सोच रहा है ।खैर उसकी तकदीर में कहां । इस कम्पनी में तो तकदीर शीर्ष पर बैठे ऊचे लोगो द्वारा लिखी जाती है । इस निहोरी को तो इस कम्पनी में होना ही नही था । कैसे आ गया ?सभी अफसरों ने इसके साथ खूब सख्ती बरती है मुझे पता है । केशावत साहब ने भी इसे खून के आंसू दिये है । आज भी केशावत की गिध्द दृष्टि निहोरी पर टिकी है । नौकरी इसकी भले ही बची रहे पर अधिकारी तो नही बन पायेगा । इस बात को तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं ।
ब्रांचहेड–क्या सर लेकर बैठ गये । छोटे लोग है । सत्ता किसके हाथ मे है हम सामन्तवादियों के हाथ मे ना । ये लोग ढटपटाते रहे पिजड़े के शेर की तरह । क्या बिगाड़ लेगे ? इसके साथ कुछ तो अच्छा होना चाहिये ?
ए.पी.साहब–होगा । जहां है वही सडेगा । यही इस निहोरी के लिये ठीक होगा । अरे पढ लिख गया है तो क्या हमारी बराबरी करेगा । कुचला जायेगा । निहोरी जैसे लोगो को आसू देकर की

अच्छा काम कराया जा सकता है । इसी में हमारा फायदा है और हमोर साम्राज्य का भविष्य भी । हो सकते तो कभी कभी मीठा बोल दो पर जहर मिश्रित । दफतर के कुछ लोगो के लिये तो आज का दिन जश्न सरीखे हो गया था । ए.पी.साहब और ब्रांचहेड के बीच हो रही बातें निहोरी के कानो में जैसे पिघला शीशा डाल रही थी और पुराने जख्म में धधकता हुआ कोयला । उससे रहा नही गया कमान से छुटे तीर की तरह कमरे के अन्दर चला गया और बोला–साहब कब तक झूठे अभिमान के बल पर शोषितों वंचितों का दमन करोगे ? कब तक पुराने घाव को ताजा करने के लिये धधकता कोयला डालते रहोगे ? अरे वंचितों के हाथ मे भी शिक्षा का हथियार आ गया है । विज्ञान का युग है रूढीवादी हथियार भोथरे हो गये है । भेदभाव की अमानीय व्यवस्था ने देश और समाज को बिखण्डित किया है । देखना साहब इस देश में मानवीय समानता,सद्भावना और राष्ट्रीय एकता का साम्राज्य होकर रहेगा । हम कानून और सूचना के अधिकार का सहारा लेगे । हर जुल्म के खिलाफ संघर्ष करेगे । ए.पी.साहब खिसिया कर कक्ष से बाहर निकले और सफेद कार मे बैठ गये । ड्राइवर ने कार को गति दे दी । कार तूफान की तरह दौड़ पडी धूल और धुआं छोड़ते हुए ।

मुलजिम

गोपी बहन को विदा कर नौकरी की तलाश में शहर को कूच कर गया । बहन की विदाई और गोपी के शहर चले जाने के बाद छोटा भाई दो छोटी बहने और बूढे मां बाप गांव में रह गये । मां बाप गोपी को आंख से ओझल तो नही होना देना चाहते थे पर गरीबी जो चाहे करवा ले। गोपी के जाते ही मां बाप भाई बहनों का रो–रोकर बुरा हाल हो गया । मां जयवन्ती बाप दुखीदादा आंसू पोछते हुए बेटवा को अच्छी नौकरी मिलने की भगवान से प्रार्थना करते रहते ताकि गरीबी का तूफान थम जाये हमेशा के लिये । मां जयवन्ती का तो रो रोकर चेहरा ही नही पूरा शरीर जैसे सूज गया । जयवन्ती की बुरा हाल देखकर दुखीदादा बोले–गोपी की मां अपना चेहरा ऐनक में देखी है क्या ? जयवन्ती–बुढौती में सठिया गये हो । जब देखने लायक थी तब तो दिखाये नही । बुढौती में ऐनक दिखा रहे हो ।

दुखीदादा–मैं नही तू सठिया गयी है ।रो रोकर तेरा चेहरा सूज गया है । कब तक दाना पानी छोड़कर आंसू बहायेगी ? मैं जानता हूं बेटवा घर परिवार की तरक्की के लिये परदेस गया है । उसकी कमाई से ढह रहा घर संवरेगा । हम बूढें के तन पर अच्छे अच्छे कपड़े होगे । छोटा बेटा भी आगे की पढाई पूरी कर लेगा । बेटियों का ब्याह गौना रज–गज से होगा । अपनी दयनीय दशा का बच्चों पर परछाई नही पड़ेगी । भगवान से बेटवा के कुशलता की कामना करो । रोना–धोना अब बन्द करो । नहीं तो मैं भी रो पड़ूंगा ।

जयवन्ती–क्या करूं मां का दिल है ना । मानता ही नही है ।

दुखीदादा–ये नन्हका एक लोटा पानी ला बेटवा ।

छोटा बेटा नन्हका लोटा भर लाया । मां के सामने रखकर बोला मां भईया बिना तो सचमुच घर काटने को दौड़ा रहा है पर मां खुशी भी हो रही है ।

जयवन्ती– क्यों ?

नन्हका–देखो लल्लु,कल्लू,भट्ठाबाबू को जब ये लोग शहर कमाने नही गये थे कैसे थे । फटी बनियाइन और सड़ी लूंगी लपेटे रहते थे अब देखो कितने अच्छे कपड़ें पहनते है । जब शहर से आते है तो पूरी बस्ती के लोग मिलने जाते है। शहर से मनिआर्डर भी तो डाकिया इनके घर लेकर आता है । मेरा भइया भी अच्छे–अच्छे कपड़े पहनेगा और हम लोगों को भेजेगा ।हमोर घर भी मनिआर्डर आयेगा । चन्दफूल कक्का की देखो वे तो रिक्शा चलाते है कितने ठाटबाट से रहते है । मां सब कहते है शहर में सगे लोग भी पराये हो जाते है । शहर के लोग फरेबी भी बहुत होते है । भगवान मेरे भइया की रक्षा करना ।

दुखीदादा– नन्हका ये सब बात तुमको कैसे मालूम ?
नन्हका– लल्लु,कल्लू,भट्ठाबाबू और चन्दफूल कक्का ये लोग आते है तो बाते नही करते क्या ? अपना लखनवा किसी फरेब में नही फंस गया था क्या ? मां भगवान से भइया की रक्षा की प्रार्थना हम सभी करते रहेगे ।
सुखीकाका–दुखी तुम्हारा नन्हका तो बहुत होशियार हो गया है । कैसी बूढों जैसी बात करता है ।
दुखीदादा–स्कूल जाता है काका ।
भोलु–अरे गोपी भइया का ही तो छोटा भाई है नन्हका ।
डाकिया–अरे वो दुखीदादा घर पर तो हो ।
दुखीदादा–अरे गोपी की मां देखो डाक बाबू आ गये बेटवा की चिट्ठी लेकर ।
जयवन्ती –कहा है चिट्ठी ?
डाकिया– ये लो ....
जयवन्ती– मैं क्या करूंगी पढ भी दो बाबू.....
दुखीदादा–पढ दो ना बाबू । बेटवा की पहली चिट्ठी परदेस से आयी है ।
डाकिया ने पत्र पढना शुरू कर दिया । गोपी मां बा,भाई बहनों ही नही पूरी बस्ती के बडो को चरण स्पर्श छोटो को आर्शीवाद लिखा था । बस्ती के एक – एक बुजुर्ग का नाम लिखकर पालगी / चरण स्पर्श लिखा था ।बस्ती का हर छोटा बड़ा गोपी को दुआये दे रहा था । गोपी की मां तो चिट्ठी सुनकर तुरन्त डिहबाबा को चल चढाने निकल पड़ी ।
शहर में गेापी को दर–दर की ठोकरी खानी पड़ी । फूटपाथ पर बिकने वाले पुराने कपड़े 25–25 रूपये मे खरीद कर पहना । गोपी मां बाप को बराबर चिट्ठी लिखता रहा । काफी धक्के खाने के बाद काम भी मिल गया । गोपी ने पत के साथ मनिआर्डर भी करना शुरू कर दिया । इसी बीच शहर में लखरूदीन से जान–पहचान हो गयी । दोनो साथ रहने लगे । खाना ढाबे में खा लेते और कमरे में सो जाते । लखरूदीन गंवार प्रकृति के साथ उग्र स्वभाव का था अनपढ तो था ही । काम दफतर की गाडी चलाने का करता था । लखरूदीन अक्सर बाहर जाया करता था । एक दिन वह जाने से पहले बोला गोपी कल्लन से बचकर रहना ।
गोपी–क्यों ?
लखरूदीन– पढा लिखा है इसका मतलब तो नही की सब तू ही जानता है । वह ग्वालियर स्टेशन के आसपास के सभी बदमाशो से जान पहचान है । रेलवे स्टेशन के सामने होटल है होटल के सामने पुलिस चौकी । सभी पुलिस वाले फोकट में खाते है । उससे तू पंगा मत लेना । नही तो जेल तक की हवा खानी पड़ सकती है । हमारा क्या हम तो ठहरे सड़क पर चलने वाले हर तरह के लोग मिलते है ।
गोपी– तू मेरी खुशी में मुट्ठी भर आग क्यो डाल रहा है । क्यों डरा रहा है । मेरी उससे तो कोई दुश्मनी नही है ।
लखरूदीन–मुझसे तो हो गयी है । तू सावधान रहना बस .... मैंने आज उसकी औकात बता दी है ।
गोपी–झगड़ा करके आया है ।
लखरूदीन– बस हो गयी । तू बचकर रहना ।
गोपी ढाबे पर रात को खाना खाने पहुंचा । इतने मे कल्लन सामने खड़ा हो गया और रौब में बोला क्यों लखरूदीन तुम्हारा साथी है ।
गोपी– क्यों क्या हुआ ?
कल्लन–लखरूदीन बदमाश है । साथी भी शायद वैसा ही हो ।

गोपी–सांप चन्दन को लपेटे रहते है । इसका मतलब तो ये नही कि चन्दन विषैला हो गया । चन्दन तो पूजा के काम आता है ।
कल्लन–लखरूदीन बदमाश और घटिया प्रकृति का है । शायद तुम भी.....
गोपी–कल्लन तुम खुद को थानेदार और दूसरे का मुलजिम क्यों समझ रहे हो भाई ?
इतने में ढाबा मालिको यादो साहब आ गये और बोले गोपी बाबू ये ससुरा कल्लनवा कम हरामी नही है । मौंका पाते ही सिर धड़ से अलग करने की कूबत रखता है ।
गोपी–यादो साहब ये सब हमें क्यो बता रहे है । आपको तो कल्लन को समझाना चाहिये । आप तो उल्टे मुझे ही धमका रहे है ।
यादोसाहब– नहीं बाबू धमका नही सही कह रहे है । कल्लनवा है बहुत बदमाश । तुम्हारा लखरूवा ससुरा तो और हरामी है । कल्लन से लड़ गया ।
गोपी–मेरी तो आपसे या कल्लन से तो कोई लड़ाई नही हुई तो हमें क्यो बलि का बकरा बना रहे है ।
यादोसाहब–कितना महीना इस शहर में आये हुआ है तुमको गोपी बाबू.....
गोपी–आठ महीना तो हो ही गया है । लखरूवा को समझा देना वरना नवे महीने में और कुछ बुरा हो सकता है । अब खाना खाओ और जाकर सो जाओ । हफते भर बाद लखरूवा तो आ ही जायेगा ।
गोपी–आ जायेगा । नौकरी तो इसी शहर की है। भले ही दौरे पर आना जाना बना रहे ।
यादो साहब ढाबा मालिक–खाना खाओ रात ज्यादा हो गयी है । कल भी तो आओगे ।
गोपी–खाना खाये बिना कैसे काम चलेगा ?
यादो साहब–मेरे ही होटल में खाना होगा । नही तो.....
गोपी–नही तो क्या ? यादो साहब ।
यादो–सामने देखो वो जवान जो टकटकी लगाये इधर देख रहे है ना सभी इसी होटल की रोटी पर पलते है ।
गोपी–पुलिस चौकी के जवानों की बात कर रहे है ?
यादो– हां और क्या उन भीखारियों की जो सूखी रोटी के लिये गिड़गिडा रहे है ।
दूसरे दिन नियत समय पर गोपी दोपहर में यादो भोजनालय पहुंचा । उसे देखकर होटल मालिक यादो साहब नमस्कार किये और बैठने का आग्रह किये । गोपी यादो साहब के समाने बैठ गया तब यादो साहब बोले गोपी बाबू माफ करना कल कुछ ज्यादा बोल गया था । इसके बाद कल्लन को बुलाये और बोले कल्लन गोपी बाबू से माफी मांग ले । तुम्हारा विवाद तो लखरूदीन से हुआ है गोपी बाबू से नही ना ।
कल्लन– हां ।
यादोसाहब–गोपी बाबू जाओ खाना खाओ ।
कल्लन–चल भाई गोपी खाना खा और जा । मालिक यही कह रहे है ना । मुंह क्यो ताक रहे हो ।
गोपी–कल से मैं बाहर जा रहा हूं मेरे बाकी पैसे वापस कर दो ।
कल्लन–मालिक सुनो गोपी पैसा मांग रहा है । कह रहा है कल से दुबई जा रहा है ।
यादो–कैसा पैसा ? वापस आकर खाना खा लेना बस । इतनी सहूलियत कम है ।
इतने में कल्लन आया आगे धक्का दिया फिर खींच लिया फिर धक्का दिया और पीछे खींच लिया । इस खींचा खांची में गापी का स्वेटर फट गया । इसके लिये फिर यादो साहब ने माफी मांग ली । गोपी वापस कमरे पर आ गया । संयोगबस लखरूदीन भी उसी दिन रात में देर से वापस आ गया

।गोपी सारी आप बीती बताया और इस सब का जिम्मेदार लखरूदीन को ठहराया । लखरूदीन बोला चल रात ढेर हो गयी है । कल दोपहर में खाना भी खायेगे होटल मालिक यादो से बात भी कर लेगे । तू चिन्ता ना कर । अब सो जा उस कल्लन ससुर से कल निपट लूंगा ।
दूसरे दिन दोपहर में यादो होटल पर खाना खाने गोपी और लखरूदीन साथ गये । लखरूदीन कुर्सी पर बैठते ही कल्लन को बुलाया और बोला क्यों कल्लन गोपी से क्यो भीड़ गया तू मेरी कहासुनी तुमसे हुई । पढे–लिखे इंसान को तू धक्का दिया और सुइटर भी फाड़ दिया ।
कल्लन –साले तेरी मजाल तू मुझे धमका रहा है । पानी का जग उठाकर लखरूदीन के सिर पर दे मारा ।इतने में होटल में हडकम मच गयी । इतने में पुलिस आ धमकी लखरूदीन को पड़ाव थाने ले जाकर 305,307 और भी कई धाराये लगाकर बन्द कर दिया। । गोपी जीप के पीछे पीछे दौड़ने लगा । इतने में गोपी को बुलाने के लिये होटल माालिक ने एक बैरे को दौड़ाया और खुद भी आवाज देने लगा गोपी भइया कह–कहकर । गोपी लौट जीप के पीछे पीछे कहां तक दौड़ता ।होटल मालिक यादो ने गोपी को दमाद की तरह बिठाया खाना लगवाया । दोस्त के साथ हुई चोट के एहसास से गोपी के गले से रोटी नही उतरी । इतने में तनिक जाना से आदमी सामने से गुजरा तो गोपी ने उसे आवाज दी वह रूक गया । उसकी लूना पर बैठकर गोपी पड़ाव थाने पहुंचा । गोपी को देखकर कल्लन चिल्लाया देखो दरोगाजी दूसरा गुण्डा भी आ गया । पड़ाव पुलिस ने गोपी पर बिल्ली की तरह झपटा मारा और जेल में ठूस दिया ।गोपी लखरूदीन के साथ अन्दर हो गया । कोई खोज खबर लेना वाला नही ।निरपराध गोपी की आंखो से तर–तर आंसू बह रहे थे ।
गोपी को रोता देखकर लखरूदीन बोला–क्यों बे तू क्यो आ गया भाग जाना था ना ?
गोपी–भागकर कहां जाता । दोस्ती खातिर आ गया । मैने तो यह सोचा ही नही कि मैं भी अन्दर हो जाऊंगा ।
लखरूदीन–बाहर रहता तो मुझे तो छुडवा लेता । अब तो गावड़े तू भी अन्दर हो गया । अब तो तू भी मुलजिम हो गया ना ?इतने में एक बदमाश बोला आना ही था तो मर्डर करके आता । मै तो साले के पेट में तलवार आरपार करके आया हूं । इस तरह सभी मुलजिम अपने अपराध को बढाचढा कर शान के साथ बताये जा रहे थे । बदमाशों की बाते सुनकर गोपी के तो पेशाब सूख गये । पड़ाव थाने दो बजे दोपहर से बन्द गोपी को चक्कर आने लगा । लखरूदीन कहता हौशला गोपी मैं तो कई बार जेल जा चुका हूं मुझे आदत है । अब तू मेरा दोस्त है आदत डाल ले । आधी रात के बाद एक पुलिसवाला आया और बोला मुलजिम गोपी और लखरूदीन कौन है आगे आ जाये । इतना सुनते ही गोपी कठघरे के दरवाजे पर आ गया । दोनो को कठघरे से बाहर निकाला गया और आतंकवादियों की भांति पुलिस के पहरे में टी.आई. के पास लाया गया । बडी सी पगड़ी बड़ी बड़ी दाढी मूछ वाले टी.आई. साहब बोले तुम दोनों में से गोपी कौन है ।
लखरूदीन–गोपी को आगे करता हुआ बोला ये है गोपी ।
टी.आई. अच्छा तो लखरूदीन तू है ।
लखरूदीन–हां साहब ।
टी.आई.– अपने गुनाह की सजा जानते हो ।
लखरूदीन–अपराध ही नहीं किया तो सजा कैसी ?
टी.आई– बिना अपराध के जेल में बन्द हो । अपराध तो किया है । कल्लन का सिर फोड़ा । अन्दरूनी चोट लगी है उसे । बेहोश है अभी । आजीवन जेल की सजा हो सकती है । इस अपराध के लिये तुम दोनो को ।गोपी शरीफ लगता है । यह सरकारी गवाह बन जाये तो बरी हो सकता है । गोपी के बारे में पूर्व कमिश्नर साहब ने बता दिया है । मालूम है लखरूदीन गोपी की वजह से तुमको भी जमानत मिल गयी है । यह जमानत पूर्व कमिश्नर साहब के दमाद बी.आर.सिसोदिया ने

ली है। गोपी अपराधी नही हो सकता है । गोपी बेटा दोस्ती के नाम पर इतनी कुर्बानी ठीक नही है । चार छः साल कचहरी के चक्कर लगाओ । लखरूदीन दो हजार रूपये लगेगे रिहाई के । याद रखना कमिश्नर साहब के कानों तक यह बात नही पहुंचनी चाहिये ।
लखरूदीन गोपी के कान में बोला गोपी दफतर वाले तो काम नही आयेगे घर खबर पहंचने में पन्द्रह दिन लग जायेगे । मेरे पास पैसे नही है तू सिसोदिया साहब से दिलवा दे मैं वापस कर दूंगा ।
ठतने में टी.आई.सहब रोटी के बदले झूठा केस कायम करने वाले एस.आई.को बुलाने के लिये एक प्रहरी को बुलाये । प्रहरी बोला वे तो जा चुके है । टी.आई.साहब अपने पी.ए.को बुलावे और एस. आई.गलाघोटू के खिलाफ चारशीट तैयार करने का हुक्म दिये । इतने में सिसोदिया साहब भी आ गया । गोपी सिसोदिया साहब से पैसे की व्यवस्था करने की बात कही । सिसोदियाजी ने दो हजार गोपी के हाथ पर रख दिये और गोपी ने टी.आई. के । टी.आई. ने अपनी जेब के हवाला किया और गोपी और लखरूदीन को जमानत पर छोड दिया ।सिसेादिया जी अपनी कार में बैठाकर दोनो को कमरे पर छोड़कर चले गये । लखरूदीन कमरे पर पहुंचते ही घोड़ा बेचकर सो गया पर गोपी की आंखों से नींद कोसो दूर भाग चुकी थी । सुबह कोर्ट मे पेशी का डर भी तो था ।बड़ी मुश्किल से रात बीती । सुबह निश्चित समय पर गोपी सिसोदियाजी के साथ केर्ट पहुंच गया । भलमानुष सिसोदिया जी के दो गवाह और गवाही के लिये कोर्ट पहुंचे गये और लखरूदीन पुकार पड़ने लगी तब आया ।
गोपी–अरे लखरूदीन इतनी देर क्यों कर दी । सिसोदिया भाई साहब दो आदमी के साथ तुमसे पहले आ गये तुम्हारी जमानत करवाने के लिये जबकि तुम्हारे ससुराल वालों ने मना कर दिया था तुम्हारी जमानत लेने से ।
लखरूदीन–ये सब छोड़ काम तो सब निपट गया ।
गोपी–इसीलिये देर से आया है कि पैसे न देने पड़े । भाई पांच सौ रूपये खर्च हो गये है । कोर्ट के काम करवाने में ।
लखरूदीन–पाई–पाई दे दूंगा चिन्ता ना कर । काम तो हो जाने दे ।
गोपी–क्यो न चिन्ता करूं । मेरे बूढे मां बाप मनिआर्डर की इन्तजार कर रहे होगे । रोज डाकिया से पूछ रहे होगे । मै तुम्हारे उपर पैसा खर्च कर रहा हूं । तुम्हारे किये की सजा भुगत रहा हूं । अरे आदमियत भी कोई चीज होती है कि नही । तुमने मुझे मुलजिम बना दिया और तू मुझे बबेवूफ समझ कर मुझ गरीब का पैसा भी खर्च करवा रहा है ।
लखरूदीन–चल पुकार पड़ गयी ।
कोर्ट से जमान तो हो गयी पर मुकदमा कई सालो चला । मुकदमें को खीचता देखकर गोपी परिवहन का काम करने वाले कमलसिंह से मिला । वे भलेमानुष मदद के सुलहा करवाने का वादा किये । उनके हस्तक्षेप के तुरन्त बाद होटल मालिक यादो और कल्लन हाथ जोड़कर माफी मांगने लगे और तुरन्त सुलहा को तैयार हो गये। सप्ताह भर में कमलसिंह ने सुलहनामा पेश करवा दिया । सुलह हो गयी । पच्चीस साल निकाल गये लखरूदीन सुपुर्द–ए–खाक हो गया पर गोपी को पैसा नही दिया पर आदमियत के राही गोपी को मिला जीवन भर के लिये मुलजिम का दर्द ।

जलसा

कम्पनी की आधारशिला रखने के साथ स्थापना दिवस मनाने का प्रचलन शुरू हो गया था । जश्न देश के हर छोट बड़े दफतरो में मनाया जाने लगा था बकायदा कम्पनी इसके लिये बजट देती थी । एक विशेषता तो यह भी थी कि कम्पनी में कर्मचारियों और अधिकारियों में बिना भेद के प्रति

व्यक्ति बजट का प्रावधान होता था। इस जश्न में कर्मचारी ,अधिकारी और उनका परिवार बढ–चढ कर भाग लेता था । यह जश्न तो कम्पनी के सभी कर्मचारियों के लिये एक त्यौहार हो गया था । बच्चे तो जलसे के महीने भर पहले से ही तैयारी में लग जाते थे । छोटे कर्मचारियों के बच्चों के लिये तो यह जलसे जैसा होता था । पूरा पारिवारिक माहौल बन जाता था । सभी लोग बिना किसी भेदभाव के आनन्द उठाते थे । कर्मचारी और उनके परिवार के लोग सांस्कृतिक में बढ–चढकर भाग लेते थे । इस उत्सव में ऐसा लगता था कि मानो साल भर की भागमभाग के फारीक होकर सभी कर्मचारी पारिवारिक माहौल में छुट्टी मना रहे हो । कम्पनी का यह जलसा किसी प्रसिध्द पिकनिक स्पांट अथवा अच्छे होट्ल में आयोजित होता था । इस जलसे को विभाग प्रमुख हंसमुख साहब और अधिक पारिवारिक बना देते थे । जब तक वे कम्पनी के शाखा प्रमुख रहे तब तक छोटे कर्मचारियों के परिवार को घर से लाने और जलसा की समाप्ति के बाद घर तक छोड़ने का जिम्मा बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभाते थे । कई बरसो बाद हंसमुख साहब का स्थानान्तरण हो गया । उनकी जगह पर लाभचन्द साहब आ गये । लाभचन्द साहब के ज्वाइन करते ही कम्पनी के स्थापना दिवस आ गया । लाभचन्द साहब गुमचुप जलसे की घोषणा शुक्रवार को शाम को देर से कर तो कर दी पर छोटे कर्मचारियों को भनक तक नही पड़ने दी ।यह खबर किसी तरह चपरासी बहकुदीन तक पहुंच गयी । वह सन्तोषबाबू
से बोला–बड़े बाबू आज के बाद दो दिन की छुट्टी पड़ रही है ।
सन्तोषबाबू– हां शनिवार रविवार की छुट्टी तो पहले से होती आ रही है ।इसमें नई बात क्या है ।
बहकुदीन– है ना ....
सन्तोष–तुम इंसीडेण्ट्ल की बात कर रहे हो । अरे भाई इंसीडेण्ट्ल और ओवर टाइम तो खास लोगों के लिये होता है । हंसमुख साहब ने काम तो खूब करवाये पर इंसीडेण्ट्ल और ओवर टाइम चहेतो को दिये । हम तो पहले से पेट पर पट्टी बांधे हुए है । आंख में आंसू भरे हुए है और मेरी योग्यता पर वज्रपात हो रहा है । मैं नये साहब से भी कोई उम्मीद नही करता । बस अपना काम ईमानदारी से करता रहूंगा ।
बहुदीन– सोमवार को कम्पनी का वार्षिक जलसा मनने वाला है । आप तो जानते ही हो कि साहब लोग इकत्तीस मार्च के पहले कभी भी मना सकते है । बजट को उपभोग करना जो होता है ।
सन्तोष– सब बात तुमको कैसे मालूम पड़ जाती है ।
बहकुदीन– ड्राइवर,चपरासी और घर में काम करने वाली बाई से कुछ नही छिप सकता लाख कोई छिपाये बड़े बाबू।
सन्तोष–वार्षिक जलसे में छिपाने जैसी क्या बात है ।
बहकुदीन– है तभी तो किसी छोटे कर्मचारी को मालूम नही है । चिट्ठी भी नही जायेगी सभी फील्ड अफसरों को फोन पर खबर पहुंचेगी । छोटे कर्मचारियों को दूर रखे जाने की साजिश रची जा रही है ।
सन्तोष– तुमको कोई गलतफहमी हो गयी है बहकुदीन ।
बहकुदीन–नही बड़े बाबू । कोई गलतफहमी नही है । लाभचन्दसाहब सिर्फ अफसरों को बुलाना चाहते है । छोटे कर्मचारियों को दूर रखना चाहते है । गैप मेनटेन जो करना है ।
सन्तोष–क्या ? कह रहे हो मेरी तो कुछ भी समझ में नही आ रहा है ।
बहकुदीन–सोमवार को समझ में आ जायेगा आफिस आने पर ....
सन्तोष– क्या मालूम पड़ जायेगा ?
बहकुदीन– सच्चाई .....

सन्तोष–यार साहब ने मुझे बताया तो है नहीं । ऐसे कैसे जलसा आयोजित हो जायेगा । बच्चे तो सबुह स्कूल चले जायेगे । पत्नी की तबियत खराब है तुम सभी जानते हो चलना फिरना बड़ी मुश्किल से हो पाता है । कैसे बच्चे आयेगे ।
बहकुदीन–लाभचन्द साहब और उनके चममचे यही चाहते है कि छोटे कर्मचारी और न उनके बच्चे जलसे में शामिल हो पाये । सोमवार को आफिस खुलने पर सूचित तो करेगे ताकि छोटे कर्मचारी अछूतों की तरह जलसे से दूर रहे , जानते है ना बड़े बाबू ?
सन्तोष– क्या ?
बहकुदीन–इल्जाम भी आपके सिर आने वाला है ।
सन्तोष–यार तुम मुझे क्यों भड़का रहा है ।
बहकुदीन–भड़का नही सही कह रहा हूं अपने जासूसी कानों की कसम । गाज तो बड़े बाबू तुम पर गिरने वाली है । सावधान रहना ।
सन्तोष– क्या गाज गिरेगी । हमें ओवर टाइम और इंसीडेण्टल से कोई लगाव नही है । जरूरत पड़ेगी तो आकर काम कर दूंगा कम्पनी के लिये बस ।
बहकुदीन–यही वफादरी तो गाज का कारण बनने वाली है ।वैसे भी ये साहब अपने वालों को ज्यादा तवज्जो देते है । जब से आये है तब से दारू के कुये में कूद–कूद कर जश्न ही तो मना रहे है।यह जश्न रूतबेदार तभी होगा जब छोटे लोग जी हजुरी करे चम्मचों की तरह । जो कुछ कह रहा हूं सुनी सुनाई ही नही खंजांचीबाबू भी विक्रय अधिकारी से बतिया रहे थे इसी बारे में। सोमवार को आफिसियली छोटे लोगो को सूचित किया जायेगा ताकि छोटे लोग सपरिवार नही पहुंच पाये । देखना सोमवार को यही होगा ।
सन्तोष–अरे नही बहकुदीन इतने बड़े बड़े साहब लोग भला ऐसा सोच सकते है क्या ? तुमको कोई गलतफहमी हुई है ।
बहकुदीन–क्यों इतने भोले बन रहे हो बडे बाबू सबसे ज्यादा तो आपके साथ भेदभाव होता है । देखना मैं जो कह रहा हूं वही होने वाला है ।हमारे और आपके बच्चे जलसे में नही जा पायेगे ।दफतर की गाड़ी में तो साहब और उनका परिवार जायेगा । दफतर की गाडी साहब के लिये चौबीस घण्टे के लिये रिजर्व है । हम जैसे छोटे लोग तो भर आंख देख भी नही सकते । बाकी लोगों का इन्टाइटलमेण्ट है ट्रवेल से कार बुला लेगे हम और आप साइकिल से जायेगे क्या ? पूरा परिवार लेकर वह भी शहर से पच्चीस किलोमीटर दूर ।
सन्तोष– चिन्ता मत करो साहब सबके लिये व्यवस्था करेंगे । ऐसा भेदभाव नही करेगें । अरे हमारे नाम का भी पैसा तो कम्पनी ने दिया है सिर्फ साहब लोगों के लिये थोडे ही स्थापना दिवस का जलसा आयोजित होता है ।
बहकुदीन– मुझे जहां तक जानकारी है लाभचन्दसाहब सिर्फ अधिकारी वर्ग को जलसे में शामिल करना चाहते है । हंसमुखसाहब जैसे छोटे बड़े सबको साथ में लेकर नये साहब नही लेकर चलने वाले । पुराने ख्यालात के लगते है । पुराने ख्यालात के लोग कितने खतरनाक होते है वंचितों के लिये।बड़े बाबू ये क्यो भूल जाते हो आप भी उसी वंचित समाज से आते हो । आपके खिलाफ कितने षणयन्त्र रचे गये और रचे जा रहे है निरन्तर यहां क्या आप भूल गये ।
सन्तोष–ऐसी बाते मत करो बहकुदीन । पढे लिखे हो उच्च विचार रखो । कांटे बोने वालों के लिये फूल बोओ बाकी सब भूल जाओ। अच्छाई के बारे मे सोचे बुरी त्यागो बहकुदीन । अभी जलसे की कोई चर्चा नही है । सोमवार को जश्न कैसे मन पायेगा । मुझे तो नही लगता । बहकुदीन जब भी जलसा आयोजित होगा हमारे तुम्हारे और सभी के बच्चे शामिल होगे कम्पनी के जलसे में । यदि तुम्हारी बात सही हुई तो सचमुच में छोटे कर्मचारियों के साथ अन्याय होगा ।

बहकुदीन–अन्याय तो होकर रहेगी क्योकि हवा लाभचन्द साहब के ज्वाइन करते ही विपरीत चलने लगी है खासकर छोटे और शोषित कर्मचारियों के सन्तोषबाबू । आप मेरी बात मान भी तो नही सकते क्योंकि आपका दर्जा मुझसे थोड़ा उंचा जो है ।
सन्तोष–बहकुदीन तुम भी कर्मचारी हो मैं भी । ठीक है मैं बाबू हूं तुम चपरासी हो बस इतना सा फर्क है ।
बहकुदीन– साहब लोग तो इससे उपर सोच रहे है ना ।कर्मचारियों और अधिकारियों में गैप मेन्टेन करना चाहते है । शुरूआत तो बहुत पहले से हो गयी है । आप तो भेद की तलवार हर चहरे पर तनी दिखने लगी है । खैर बहुत बात हो गयी । इस बारे में किसी से कुछ कहना नही । नही तो मैं तारगेट हो जाऊंगा ।जश्न तो सोमवार को ही मनेगा यह भी नोट कर लेना ।
सन्तोष–इतना अन्याय तो नही होगा बहकुदीन ।
बहकुदीन–होगा मेरी बात क्यों नही मानते । पुराने सारे अन्याय भूल गये क्या ?
सन्तोष–हां । कल का सूरज खुशी लेकर आयेगा ।
बहकुदीन–सोचने और हकीकत में अन्तर है ।अपने दफतर में यह अन्तर सिर चढ़क बोलने लगा है ।
सन्तोष–देखते है सोमवार को क्या होता है? अब मुझे काम कर लेने दो ।बहुत काम है । देखो इतनी सारी रिर्पोट बनानी है और टाइप भी करनी होगी ।
बहकुदीन–करो बाबू अरमानों की बलि चढाकर । इन लोगों को खुश नहीं कर पाओगे कितनों रात दिन एक कर दो । शनिवार और रविार की छुटटी है । असलियत से तो सोमवार को रूबरू हो पाओगे सन्तोष बाबू ।
सन्तोष–इन्तजार करूंगा और भगवान से प्रार्थना भी कि सब कुछ अच्छा हो ।
शनिवार और रविवार की छुट्टियां खत्म हो गयी । सोमवार के दिन सन्तोष दफतर पहुंचा दोपहर के खाने की टिफिन लेकर । ग्यारह बजे तक सन्तोष को भनक तक नही लगने पायी पर अन्दर –अन्दर सारी तैयारियां चल रही थी । शनिवार और रविार की छुट्टियों में बच्चों के खेल खिलौने एवं गिफट् आदि के नाम पर अच्छी खरीदारी और कमाई भी लाभचन्दसाहब के चम्मचों ने की । दो दिन की छुट्टी का इंसीडेण्टल भी लिये । खैर ओवरटाइम और दूसरे अन्य फायदों से सन्तोंष को पहले से ही दूर रखे जाने का षणयन्त्र था पर काम तो करना ही पड़ता था आंखों में आसू छिपा कर । सन्तोष काम में लगा हुआ था इतने में बहकुदीन पानी का गिलास टेबल पर पटकते हुए बोला लो बड़ेबाबू पानी पी लो ।
सन्तोष–पानी पिला रहे हो या टेबल तोड़ रहे हो ।
बहकुदीन–बड़ेबाबू दिमाग बहुत खराब है अभी ।
सन्तोष–क्यों ।
बहकुदीन–कम्पनी की स्थापना के जलसे का आयोजन आज हो रहा है ना । मेरे बच्चे कैसे जायेगे । सब स्कूल गये है । मैं खुद टिफिन लेकर आया हूं ।होटल चांद शहर से बीस किलोमीटर दूर है । कैसे पहुंच सकता हूं ।
सन्तोष–क्या....? मैं भी टिफिन लेकर आया हूं ।मेरे बच्चे भी स्कूल गये है । ये कैसा जलसा है ।
इतने में लाभचन्द साहब कालबेल पर जैसे बैठ गये बहकुदीन भागा भागा गया ।
साहब–बहकुदीन होटल चांद में आ जाना कुछ देर में । टाइपिस्ट क्या नाम है उसका ?
बहुकदीन–बड़े बाबू का नाम ।
साहब–हां वही तुम्हारे बड़े बाबू ।
बहकुदीन–सन्तोष बाबू.....

साहब– हां । सन्तोष..... उसको भी बोल देना । लंच तुम लोग वही कर लेना ।
बहकुदीन– कोई प्रोग्राम है होटल चांद में साहब ?
साहब–हां कम्पनी के स्थापना दिवस का जलसा मन रहा है ना आज ।
बहकुदीन–क्या ?
साहब–मुंह क्यों फाड़ रहे हो । जाओ बड़े बाबू को बुलाकर लाओ ।
बहकुदीन– साहब के हुक्म का तामिल किया ।
सन्तोष साहब के सामने हाजिर हुआ । साहब उसको देखकर बोले क्यों सन्तोषबाबू जलसे में नही चल रहे हो क्या ?
सन्तोष– कैसा जलसा सर....
साहब–क्यों खंजाची साहब ने तुमको नही बताया था ? क्या तुमको ये भी पता नही सभी कर्मचारी सपरिवार इस जलसे में शामिल होते है ।
सन्तोष– सभी सपरिवार शामिल होते है यह तो मालूम है पर ये तो नही मालूम था कि अभी ग्यारह बजे जलसे का आयोजन हो रहा है । वह भी शहर बीस किलोमीटर दूर पहाड़ो के बीच में ।
साहब–अब तो मालूम हो गया ना ? आने का मन बने तो जाना नही तो दफतर का काम देखो कहते हुए लाभचन्द साहब सुसज्जित कार में बैठ गये कार पहाड़ों के बीच स्थित चांद होटल की और दौड़ पड़ी और उसके पीछे दूसरे अफसरों के कारों का काफिला भी । अब सन्तोष बाबू के सामने सिर धुनने के सिवाय और कोई रास्ता न था ।
बहकुदीन– बड़े बाबू क्यों सिर पर हाथ रखकर बैठे हो। शाम छः बजे तक काम निपटाओ और घर जाओ साहब यही कहकर गये है ना । वाह रे साहब छोटे कर्मचारियों का हक मार कर बोतले तोड़ेगे,ठुमका लगायेगे । ये कैसे साहब लोग है जो भ्रष्टाचार को पोष रहे है ? कमजोर कर्मचारियों के हित दबोच रहे है । शोषित / कमजोर कर्मचारियों के हितों की रक्षा सामन्तवादी सोच के साहब लोग कैसे होने देगे ? देखो सन्तोष बाबू मैं तो अब जा रहा हूं । लंच करने का मन नही हो रहा है,मुझे निकाह में जाना है । चाभी रखों । बन्द कर देना । तकलीफ तो होगी पर सुबह थोड़ा जल्दी आ जाना । झाडू वाली नौ बजे आती है ना ।
सन्तोष–ठीक है । मुझे तो बैठना ही होगा वरना कोई इल्जाम सिर आ जायेगा ।
बेचारे सन्तोषबाबू सायं साढे छः बजे तक दफतर में काम करते रहे । साढे सात बजे घर पहुंचे । पापा के आने की आहट से बडी बीटिया बाहर आयी । सन्तोषबाबू के हाथ से टिफिन थामते हुए बोली पापा आपकी कम्पनी का सालाना जलसा कब होगा ? सन्तोषबाबू की जीभ तलवे से चिपक गयी इतना बोल पाया कि कब तक जलना होगा मुट्ठी भर आग में और अचेत होकर खटिया पर गिर पड़े धड़ाम से ।

सेर भर कमाई

तीरथ आंख खुलते ही गांव के बड़े जमीदार कुंवर विजय बाबू की हलवाही करने लगा था । जिस हाथ को कलम पकड़नी चाहिये थी उस हाथ को हल की मूठ पकड़ने की मजबूरी आ गयी । कुवंर बाबू का गोबर और हल–बैल से खेत जोतते जोतते ही वह होश सम्भाला था । होश सम्भालते ही उसकी विधवा मां को पतोहू की कमी सताने लगी । तीरथ का गौना आ गया । गौना आते ही सगुनीदेवी तीरथ से कंधे से कंधा मिलाकर मेहनत मजदूरी करने लगी । सगुनीदेवी का साथ पाकर तीरथ को सकून मिलने लगा । साल दर साल उसके घर नन्हे मुनों का अवतरण होता रहा । नौ साल में नौ बच्चे जिसमें से चार खुदा असमय खुदा को प्यारे हो गयी । बाकी बचे दो बेट और तीन बेटियां खुदा की नियामत पर पलते बढते रहे तीरथ और सगुनीदेवी कुंवर विजयबाबू का सहते

रहे शोषण,उत्पीडन और पशुता का व्यवहार भी । दरिद्रता के दौर से गुजरते हुए भी तीरथ ने बेटे को पढाने की कसम खा लिया । कुंवर विजय बाबू के मना करने के बाद भी ।तीरथ के सामने खाना,कपडा और मजबूत घासफूस की छत का भी संकट था । ऐसे संकट में भी बड़ा बेटा चिन्ताप्रसाद एक-एक कक्षा आगे बढता रहा । इस तरह करके वह पांचवी जमात पास कर गया फिर आठवी । आठवी पास करते ही तीरथ कुंवर विजय बाबू के छोटे भाई कुंवर प्रताप बाबू जो शहर में बड़े अफसर थे से चिन्ताप्रसाद को शहर में नौकरी पर लगवाने की सिफारिश में जुट गया । कुंवर प्रतापबाबू तीरथ से कहते -तीरथ और मेहनत से काम करो । हवेली के काम को अपना काम समझ कर करो । चिन्ताप्रसाद को और आगे पढाओ तब नौकरी मिल सकती है ।
तीरथ कहता और कितना आगे तक बाबू ?
कुंवर प्रताप बाबू कहते बी.ए.पास कराओ ।
तीरथ पूछता ये कौन सी पढाई होती है ?
कुंवर प्रताप- तेरा बेटा अभी आठवी पास किया है ना ।
तीरथ-हां बाबू ।
कुंवरप्रताबाबू- देख अभी सात साल और लगेगा । इसमें पैसा भी बहुत लगेगा ।
तीरथ-बाबू पैसा तो मेरे पास नही है । सेर भर कमाई के अलावा अपने पास कोई आढत तो नही है ।
कुंवर प्रताप-बिना पैसे के कैसे पढाओगे शादीशुदा बेटवा को । दो साल के बाद गौना ला दोगे । बेटवा के पैर में जंजीर बांध दोगे । देखो पढाई लिखाई तुम लोगों के लिये नही है । तुम लोग बस हम जमीदारों की खेतीबारी का काम सम्भालते रहा। इसमें बुराई क्या है ? पेट परदा तो हरवाही चरवाही से ही तो चल रहा है ना आजतक । अरे बड़े ख्वाब देखने भर से पूरे नही होते । उसके लिये भी मशक्कत करनी पड़ती है ।
तीरथ-और कितनी मशक्कत करूं बाबू ? ये देखो धान की रोपाई में शरीर कोढियों जैसी हो गयी है । गेहूं की बुवाई के समय पांव के तलवे मोटी रोटी जैसे परत छोड़ देते है । यही हाल घरवाली का भी होता है । हवेली का गोबर फेंकते -फेंकते चालीस साल की उम्र में अस्सी साल के बूढे जैसा हो गया हूं?
कुंवर प्रताप- बेटे से शहर में नौकरी करवाना चाहते हो तो बी.ए.तक पढाना पड़ेंगा । तुम तो सरकारी ब्राहमण हो । तुम्हारे बेटे को सरकारी नौकरी मिल जायेगी ।
तीरथ-बाबू ताना न मारो । मेरे बेटवा की नौकरी लगवा दो बस.....बाबू ना जाने कितने लोगों की आपने नौकरी लगवाई है । बाबू अपने कंधे पर बिठाकर तुमको खिलाया हूं । इतना एहसान तो कर दो । बाबू आप तो जानते ही हो एक बीसी जमीन नही है । आपकी बंधुवा मजदूरी के बदले मिले दस बीसा खेत और सेर भी मजदूरी के भरासे बच्चें का पाल रहा है । न खाने का और न रहने का कोई पुख्ता इंतजाम है । बाबू आपकी चौखट पर मेरा जीवन बिता है । मैं भी बूढा हो चला हूं न जाने कब आपकी गुलामी करते हुए सांस बन्द हो जाये । बाबू बचपन से अब तक दुख दरिद्रता की मुट्ठी भर-भर आग में बहुत सुलगा हूं । जीवन के आखिरी पल में मन को तनिक ठण्डक दे दो बाबू बेटवा को नौकरी लगवा कर ।
कुंवरप्रतापबाबू- क्यों मेरी जान खा रहे हो । तुम्हारे बेटे को सरकारी नौकरी कहीं न कही मिल जायेगी । सरकार ने तो तुम लोगों को आरक्षण भी तो दे रखी है। अगर नही भी मिली तो क्या हवेली में कम काम है । पढा लिखा मजदूर रहेगा तो काफी सहूलियत हो जायेगी । तुम्हारी जैसे बित रही है चिन्ताप्रसाद की भी बित जायेगी ।

तीरथ कुंवरप्रतापबाबू की बातो से बहुत दुखी हुआ । उसकी आंखो मे आंसू भर आये । उसकी आंखो के आंसू का मोल समझकर कुंवर प्रताप का दिल पसीज गया । वे उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोले चिन्ता ना कर । कुंवरप्रतापबाबू के कंधे पर हाथ पड़ते ही तीरथ को लगा कि उसके सारे दुख दूर हो गये ।

तीरथ कुंवर प्रतापबाबू के खेत से हवेली तक हाड़फोड़-फोड़ कर बूढा हो गया । कर्ज का बोझ दिन पर दिन बढता जा रहा था । जब भी शहर से कुंवर विजयबाबू आते तो उनके घर आसपास के ही दही दूर दूर तक के उनके बिरादरी क़े लोगों का हुजुम उमड़ पड़ता था नौकरी लगवाने के लिये। मौका मिलते ही तीरथ कुंवर विजयबाबू के सामने गिडगिड़ा लेता। कुंवर विजयबाबू आश्वासन की हल्की सी आक्सीजन देकर आगे बढ जाते जबकि चिन्ताप्रसाद को बी.ए.पास किये पांच बरस गुजर गये थे । वह दो बच्चों का बाप भी बन चुका था ।शहर में नौकरी के लिये दिन-रात एक कर रहा था पर नौकरियां थी कि उससे कोसो दूर भागी जा रहीं थीं । सब ओर से निराश होकर चिन्ताप्रसाद खुद शहर में कुंवर विजयबाबू के बंगले पर मिला आपबीती रोया ।कुंवर विजयबाबू महीने भर बाद आना ,दो महीने बाद आना । ऐसा करते करते साल बित गये । अन्ततः वे अपने ही विभाग में अस्थायी नौकरी पर लगवा दिये । चिन्ताप्रसाद लगन से नौकरी करने लगा । उसे नौकरी करते साल भर भी नही हुए थे कि अचानक कुंवरविजयबाबू की मृत्यु हृदयगति रूकने से हो गयी । चिन्ताप्रसाद के सामने फिर मुसीबतों का पहाड़ गिर पडा ।उसे नौकरी से बाहर करने की साजिशें रची जाने लगी । साजिश कामयाब भी हुई कई महीनें तक काम करने के बाद तनख्वाह तक नही मिली । बेचारा कल अच्छा होगा इसी आशा में वह दफतर आकर काम करता रहा जबकि उसे नौकरी से निष्कासित भी किया जा चुका था । कार्यालय प्रमुख आश्वासन पर आश्वासन सामने देते ताकि बेगारी करता रहे और पीछे से उसकी बुराई करते छोटी जाति की वजह से । खैर चिन्ताप्रसाद के जीवन में बहुत उतार -चढाव आये । कई कई दिन उसने फांके में भी बिताये । अन्ततः उसकी तपस्या सफल हो गयी कुंवरविजयबाबू की मौत के बरसों बाद चौथे दर्जे की नौकरी पक्की हो गयी पर उत्पीड़न,शोषण और भेदभाव कम नही हुआ । प्रताड़ना और शोषण जारी था पढे लिखे तथाकथित उंचे लोगों के बीच । चिन्ताप्रसाद अपने मां बाप को भगवान मानता था ।उसके मां बाप जमींदार कुंवर प्रतापबाबू के खेत से हवेली तक शरीर को निचोड़-निचोडकर सूखे गन्ने की तरह हो गये थे । ढेर सार बीमारियों ने भी दबोच लिया था । एक दिन सगुनीदेवी कुंवरप्रताप के खेत में काम करते समय गश खाकर गिर पड़ी । बस्ती के मजदूर उठाकर दवाखाना ले गये । दवादारू शुरू हो गया इसके बाद भी सगुनीदेवी को आराम नही हो रहा था । चिन्ताप्रसाद का छोटाभाई मिन्नतप्रसाद घबराकर ट्रंककाल किया । वह रोते हुए बोला भइया मां बहुत बीमार है । अस्पताल में भर्ती है ।

चिन्ताप्रसाद- हिम्मत रखो मैं परसो तक गांव आ जाऊंगा ।

चिन्ताप्रसाद दो दिन की रेलयात्रा के बाद गांव पहुंच तो गया मां से मुलाकात नही हुई । वह चिरनिद्रा में सो चुकी थी । चिन्ताप्रसाद की आंखों के सामने बीती वे सारी बातें चलचित्र की तरह घूने लगी थी जिसमें शामिल था मेहनत मजदूरी,उसके सघंर्ष की दुखद दास्तान भूमि मालिको द्वारा दोहन,शोषण,अपमान के कई दर्दनाक बारदाते,झूठे चोरी के इल्जाम की पीड़ा और आंखों से झलकते आंसू । खुली आंखों का सपना पर सारे सपने सगुनीदेवी की हृदयगति रूकते ही बरफ सरीखे जम गये थे। समय तो बदल रहा था पर सामाजिक खाईया और गहरी हो रही थी । सबल बाहुबली लोग दीन दुखियों पर आतंक का शिंकंजा निर्दयता से कसते जा रहे थे । वंचितों के लिये खुले आसमान की ओर देखना भी प्रतिबंधित लग रहा था । शहर हो या गांव हर ओर से शोषितों के खिलाफ बयार चल रही थी । इस खिलाफत के चक्रव्यूह में फंसे चिन्ताप्रसाद का भी सपना चौपट

हो रहा था । उसकी नौकरी तो पक्की हो गयी थी पर चौथे दर्जे से आगे जाने के सारे दरवाजे बन्द हो गये थे उसके लिये । इस तरह की नाकेबन्दी की जिम्मेदारी सामन्तवादी कानूनव्यवस्था पर आधारित सामन्तसमूह में कुंवरविजयबाबू पहले ही कर चुके थे । इस बात का जिक्र कुछ कर्मचारियों की दबी जुबान पर आ ही जाता पर चिन्ताप्रसाद ने इस पर यकीन नही किया कभी पर सच्चाई की बू तो थी क्योकि नीचे से लेकर शीर्ष तक सभी कुंवरविजयप्रताबाबू के ही पोषित थे और वही कम्पनी में सम्भवतः एक मात्र वंचित चिन्ताप्रसाद की तरक्की को एकदम से अवरूध्द कर दिये थे । शायद इन्ही बाधाओं की वजह से चिन्ताप्रसाद कोई तरक्की नही कर पाया। उसके बाप और उसमें बस इतना सा फर्क था कि बाप भूमि मालिकों के खेतों में आसूं बहा रहा था और चिन्ताप्रसाद आधुनिक युग के सामन्तसमूह में । चिन्ताप्रसाद के दिल में उथलपुथल मचा हुआ था इसी बीच उसके बाप तीरथ हैण्डपाइप से एक लोटा पानी लाये और चिन्ताप्रसाद को थमाते हुए बोले बेटा तू इस कदर रोयेगा तो मुझे दिलासा कौन देगा । तीरथ की बातो में बहुत दर्द था बाप की बातें सुनकर चिन्ताप्रसाद के आंसू जम गये ।तीरथ चिन्ताप्रसाद को गले लगा लिया । दो दिन से सगुनीदेवी की मृतदेह लेकर बैठे लोग रो पड़े । इतने में किशुन काका आगे बढकर आये चिन्ताप्रसाद को नीम की छांव में ले गये । समझाते हुए बोले बेटा बहुत देर हो गयी है दो दिन से पूरी बस्ती भौजाई की मृतदेह लेकर बैठी हुई है तुम्हारी इन्तजार में आंसू पोछो । बेटा तुम्हारी मां भले ही अनपढ थी पर उसे सपने बोने अच्छी तरह से आता था । हमेशा आगेआगे चलते रहने को सीख देती थी । वह तो पूरी बस्ती कि अनपढ गुरू थी । उसके बस्ती की खुली आगे में बोये सपने बेकार नही जायेगे । वह तो पुण्य आत्मा थी परमात्मा के पास चली गयी ।बेटा अपना फर्ज खुशी–खुशी पूरा करो धरती पर कौन अमर है । जानता हूं बेटा मां पूरी दुनिया है पर इस दुनिया से बिछुडना भी तो निश्चित है। आंसू पोछो । क्रिया–कर्म की तैयारी तो पहले से ही हो गयी है । यह बता दो कहां अन्तिम संस्कार होगा–बनारस या औड़िहार ?

चिन्ताप्रसाद– काका मर्णिकर्णिका ।

चिन्ताप्रसाद मिन्नतप्रसाद को बुलाया और दो जीप की ब्यवस्था करने को कहां आधे घण्टा में जीप आकर खड़ी हो गयी । बस्ती के मजदूरों की बैण्डपार्टी के मातमी धुन ने बादलों को जैसे रूला दिया । तभी किशुनकाका जोर से चिल्लाये क्या सोच रहे हो चिन्ताप्रसाद तुम्हारी मां देवी थी अच्छी मौत पायी है । चलो कंधा लगाओ । तीरथ, चिन्ताप्रसाद, मिन्नतप्रसाद और किशुन काका ने सगुनीदेवी के टिकठी पर सजे मृत देह को कंधे पर उठाकर चलने लगे और उनके आगे मातमी धुन बजाते बैण्डबाजे वाले और सबसे पीछे रोते बिलखते परिजन और मजदूर बस्ती के लोग । बारी–बारी से सभी परिजन और बस्ती के लोगो ने कंधा दिया । आधा किलोमीटर पैदल चलने के बाद सगुनीदेवी के मृतदेह को टिकठी सहित जमीन पर रखा गया । लोग अन्तिम दर्शन किये । कुछ अनुष्ठान पूरे किये गये । इसके बाद मृददेह को जीप पर बांध दिया गया और दाह संस्कार के लिये जीपे बनारस की ओर सरपट दौड़ पड़ी ।

बनारस जीप स्टैण्ड से फिर सगुनीदेवी का मृतदेह कंधो पर आ गया । बनारस की सकरी गलियों से गुजरता हुआ इस शव यात्रा में शामिल लोग सगुनीदेवी की जय,जयकार करते हुए मर्णिकर्णिका घाट पहुंचे। जहां सगुनीदेवी का मृत शरीर पंचत्तव में विलीन हो गया और शेष था तो बस गरीबी,भूमिहीनता,असमानता की पीड़ा, संघर्ष की दास्तान और सगुनीदेवी के बोये खुली आंखों में जीवित सपने ।